A Daily News Magazine

इंदौर

शुक्रवार, 05 सितंबर, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 326, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

'वोटर अधिकार यात्रा' के बाद अब राहुल गांधी की असली परीक्षा?

अरविंद मोहन

सोमवार शाम को जब सारे अंग्रेजी और बड़े चैनल प्रधानमंत्री मोदी की विदेश यात्रा, चीनी राष्ट्रपति जिनपिंग और रूसी राष्ट्रपति पुतिन के साथ घनिष्ठता बताती तस्वीरें दिखाने, विशेषज्ञों से उनका मतलब बताने और मोदी जी द्वारा अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा किए भारत विरोधी फैसलों की काट ढूँढने का दावा कर रहे थे तब अधिकांश छोटे चैनल और यू ट्यूब वाले प्रसारण बिहार की राजधानी में राहुल गांधी-तेजस्वी की रैली की चर्चा में मगन थे। इसका कारण कई हो सकते हैं, पर इतना साफ है कि राहुल गांधी की 'वोटर अधिकार यात्रा' ने भी बराबरी की दिलचस्पी पैदा की है। पहली सितंबर को उसका समापन था और भारी भीड़ उमड़ी थी।

शुरुआती योजना लोगों की भारी भीड़ के साथ इंडिया गठबंधन के नेताओं को जुटाकर राजनैतिक संदेश देने की थी। पर नीतीश राज में शायद पहली बार इस तरह की राजनैतिक रोक-टोक दिखाई दी। उल्लेखनीय है कि राहुल गांधी को सासाराम में अपनी यात्रा की शुरुआत की इजाजत भी काफी देर से दी गई और रात के अंधेरे में मोटरसाइकिल के हेडलैंप की रोशनी में हेलीपैड बनाना पड़ा। सब मुश्किलें पार करके यात्रा में सफल रहने के बाद अब उनकी असली परीक्षा शुरू हो रही है।

अब नीतीश कुमार जैसे मंजे हुए राजनेता को यह सब कदम क्यों उठाना पड़ा, यह तो वही बताएंगे लेकिन यह बिहार की राजनीति की संस्कृति नहीं है। सिर्फ जेपी आंदोलन के समय ऐसी रोक-टोक की असफल कोशिश कांग्रेसी सरकार ने की थी लेकिन स्टीमर बंद कराने के बावजूद नौजवान भरी गंगा को केले के पेड़ों को जोड़कर बनाई कामचलाऊ डोंगी से पार करके पटना जुट गए। उल्लेखनीय है कि तब पटना में कोई पुल न था और उत्तर बिहार वालों को स्टीमर के सहारे ही राजधानी आना होता था। पर तब यह भी हुआ कि जब कांग्रेस के आपातकाल के दौरान कम्युनिस्ट पार्टी ने पटना में रैली की तो उनके लोगों को स्टीमर घाट के कुलियों से भिड़ना पड़ा जो बच्चों का हाल देखकर नाराज थे। इस बार वैसी स्थिति तो नहीं थी लेकिन राहुल गांधी और बड़े नेताओं की सुरक्षा का सवाल बार बार उठता रहा। और इसी में दरभंगा में जब एक घुसपैठी ने मंच से प्रधानमंत्री की मां को गाली दे दी तो स्वाभाविक तौर पर बड़ा बवाल मचा। बीजेपी के लोग इसे ही मुद्दा बनाकर पूरी यात्रा के राजनैतिक 'पुण्य' को खत्म करना चाहते थे। कई जगह झड़प भी हुई, हिंसा हुई लेकिन बहुत ज्यादा बात नहीं बढ़ी। असल में कांग्रेस का संगठन अभी उस स्तर पर भाजपा से लोहा लेने लायक है भी नहीं।

लेकिन इस यात्रा को सफल बताने में हर्ज नहीं है और इस कारण कांग्रेसी कार्यकर्ता तो उत्साह में आए ही हैं (जिनकी संख्या काफी कम है) लेकिन राजद और भाकपा-माले के लोग ज्यादा उत्साह में हैं। एनडीए से चुनावी मुकाबला तो मुख्य रूप से उन्हें ही करना है। यह उत्साह चुनाव तक कायम रहता है या नहीं, यही राहुल ऐंड कंपनी की मुख्य चुनौती है।

पहले 'भारत जोड़ो यात्रा', 'राफेल घोटाला', 'मोहब्बत की दुकान' और 'सावरकर' समेत कई मसलों पर वे ठीकठाक हवा बनाने में सफल रहे हैं लेकिन संगठन उस उत्साह को बढ़ाने में ही नहीं, बरकरार रखने में भी सक्षम नहीं है। खुद राहुल भी मुद्दा बदलकर पुराने को भूल जाते रहे हैं।

अब यह गाली कांड क्यों और कैसे हुआ, इसकी जांच हो रही है। उसका क्या नतीजा आएगा और तब वह कोई राजनैतिक हवा बनेगी, यह कहना मुश्किल है। मोदी जी ने मां को गाली वाला प्रकरण लेकर बिहार में भाषण शुरू कर दिया है, लेकिन इसका क्या असर होगा यह भविष्यवाणी भी मुश्किल है। पर दो तीन चीजें साफ हैं। इस यात्रा ने ठीकठाक हलचल मचाई है। मीडिया कवरेज और सामने आए ओपिनियन पोल भी इसकी पुष्टि करते हैं। और जो प्रतिक्रिया कांग्रेसियों और इंडिया गठबंधन के साथियों की है, वह भी इसकी पुष्टि करता है। सारा विपक्ष नए सिरे से एक हुआ है। कांग्रेस और इंडिया गठनबंधन के लिए यह चीज फायदे की हो सकती है कि अब बिहार चुनाव में ज्यादा दिन नहीं बचे हैं। अभी से सिर्फ वही लोग नहीं, विपक्ष भी उतना ही सक्रिय हो गया है। खुद प्रधानमंत्री के कई दौरे हो चुके हैं और बिहार सरकार चुनावी रेवड़ियाँ घोषित करने लगी है। दो ढाई महीन में आधे से ज्यादा व्यक्त तो चुनाव का ही रहेगा और बाकी में गठबंधन बनाना और सीटों का हिसाब लगाना होगा। इस रैली ने इंडिया गठबंधन का काम आसान किया है जबकि चिराग पासवान और प्रशांत किशोर के चलते एनडीए को परेशानी दिखने लगी है।

राहुल गाँधी ने वोट चोरी को मोदी और शाह की जोड़ी तथा भाजपा की चुनावी सफलता से जोड़ने की कोशिश की है। कुछ बात बनी है। पर वोट चोरी का सवाल सीधे चुनाव आयोग के नाम जाता है, जिसने हाल में अपना व्यवहार बहुत बदला है और अदालती दखल के चलते जिसे अपनी मूर्खतापूर्ण जिद छोड़नी पड़ी है। अभी भी लाखों आपत्तियां हैं और आयोग ने नामांकन के दिन तक आपत्ति स्वीकारने और शिकायतों का निपटारा करने का वायदा किया है। अगर आयोग का व्यवहार बदला तो वह राजनैतिक मुद्दा भी हल्का होगा। लेकिन जब एक एक ब्लॉक में हजारों आवेदन फीस के साथ आ चुके हैं तो निवास प्रमाणपत्र या जन्म प्रमाणपत्र देना भी एक काम होगा। अभी ही एक जोकीहाट ब्लाक में निवास के पचास हजार आवेदन आने की खबर है। ब्लॉक का सारा स्टाफ जुट जाए तब भी रोज हजार प्रमाणपत्र देना मुश्किल है। और अगर ब्लॉक के लोग यह काम कर सकते हैं तो विशेष सर्वेक्षण वाले बीएलओ क्यों नहीं कर सकते थे। आयोग के फैसलों में हजारों ऐसे सवाल जुड़े हैं और अब तक का उसका रुख और सवाल पैदा करता था।

उसका बदला व्यवहार देर से आया है और राहुल की वोट यात्रा के प्रभाव को कायम नहीं रहने देगा, यह देखने की चीज है। पर बांग्लादेशी घुसपैठ, रोहिंग्या घुसपैठ जैसे मसले तो गायब हो गए हैं जो भाजपा को ध्रुवीकरण कराने में मदद करते थे। नाम काटना और ऐसा करने का डर दिखाना अलग मुद्दा है। बीजेपी को उससे भी ज्यादा बड़ा सहारा नीतीश कुमार के साथ होने से है। वह उनको ज्यादा मान और सीटें देकर भी अपने खेमे को संभाल सकती है। आने वाला पखवाड़ा बहुत चीजों को साफ करेगा और राहुल की भी परीक्षा लेगा।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

एससी/एसटी एक्ट में जमानत तभी, जब साबित हो जाए जुर्म

● दलितों के केस में सीजेआई ने खींची लक्ष्मण रेखा, एचसी का फैसला पलटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस बीआर गवई की अध्यक्षता वाली सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने हाल ही में एक फैसला सुनाते हुए कहा है कि दलितों के खिलाफ उत्पीड़न से जुड़े मामले यानी एससी/एसटी एक्ट 1989 के तहत दर्ज मामलों में किसी भी आरोपी को अग्रिम जमानत तभी दी जा सकती है, जब स्पष्ट रूप से यह साबित हो कि आरोपी के खिलाफ प्रथम दृष्ट्या कोई मामला न बनता हो। यानी पहली नजर में ही यह तथ्य साबित हो जाए कि आरोपी ने दलित समुदाय के प्रति कोई हिंसा नहीं की है। सीजेआई बीआर गवई, जस्टिस के विनोद चंद्रन और जस्टिस एनवी अंजारिया की पीठ ने मंगलवार को इस बात पर जोर दिया कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम को कमजोर वर्ग की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से लाया गया था और यह आरोपी को गिरफ्तारी से पूर्व जमानत देने पर रोक लगाता है। इसके साथ ही पीठ ने एक आरोपी को जमानत दे दी है।

सीजेआई ने हाई कोर्ट का आदेश पलटा

शिकायत के अनुसार, 25 नवंबर 2024 को जैन और अन्य ने कथित तौर पर किरण के घर के बाहर उसके साथ बहस की और उसे और उसके परिवार पर लोहे के रॉड से हमला किया था और इस दौरान जातिसूचक गालियां दीं थीं। दलित परिवार पर आरोप था कि उन लोगों ने जैन के पसंदीदा उम्मीदवारों को वोट नहीं दिए थे। हाई कोर्ट के पैसले के खिलाफ किरण ने सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी।

बिहार के पटना में भीषण सड़क हादसा

● 100 की स्पीड, ट्रक में घुसी कार, 5 दोस्तों की मौत

पटना (एजेंसी)। पटना में सड़क हादसे में 5 दोस्तों की मौत हुई है। बुधवार रात 1 बजे उनकी कार चलते ट्रक में पीछे से जा घुसी। हादसा परसा बाजार थाना के महोली फ्लाई ओवर के नीचे हुआ है। हादसा इतना भीषण था कि कार ट्रक के अंदर घुस गई। ट्रक के ड्राइवर को इसका पता भी नहीं चला। वह कार को घसीटते हुए 25 मीटर तक दूर तक चला गया। सूचना मिलने के बाद मौके पर पुलिस पहुंची। गैस कटर से कार को काटकर सभी शवों को निकाला गया। मरने वालों में गोपालपुर के 50 साल के राजेश कुमार, 38 साल के संजय कुमार, सिपारा के 38 साल के कमल किशोर, 35 साल के प्रकाश चौरसिया और मुजफ्फरपुर के 30 साल के सुनील कुमार शामिल हैं। सभी लोग फतुहा से परसा बाजार होते हुए पटना की ओर आ रहे थे।

हरी झंडी दिखाकर 50 इलेक्ट्रिक एसी बसों का शुभारंभ किया

एक राष्ट्र-एक चुनाव आज के समय की जरूरत : सीएम यादव

भोपाल/इंदौर (नप्र)। स्वच्छता में देश के पहले शहर इंदौर को गुरुवार को नई सौगात मिली है। ग्रीन मोबिलिटी को बढ़ावा देने एवं लास्ट माइल कनेक्टिविटी के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर से हरी झंडी दिखाकर 50 इलेक्ट्रिक एसी बसों का शुभारंभ किया। अत्याधुनिक तकनीकी सुविधाओं से सुसज्जित इन बसों का संचालन नेट कास्ट मॉडल पर किया जाएगा।

इंदौर शहर के सफाई मित्रों के सम्मान के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उनके साथ भोजन किया। उन्हें संबोधित करते हुए कहा कि केंद्र सरकार ने हर बार स्वच्छता की नई-नई शर्तें लगाईं। पर ये यहां के स्वच्छता के सिपाही हैं, जो हर बार इंदौर को नंबर वन लाए। अब स्वच्छता का इंदौर से सात जन्मों का नाता हो गया है। इंदौर ने देश के बड़े-बड़े शहरों से चुनौती ली। इस शहर ने सबको पीछे छोड़ दिया। यहां जो होता है सर्वश्रेष्ठ होता है। भारत एकमात्र ऐसा देश है जहां स्वच्छता की देवी की भी पूजा करते हैं। शीतला माता की पूजा भी शीतला सप्तमी के दिन की जाती है। यह समृद्धि की देवी है।

वहीं, बीसीसी में आयोजित एक राष्ट्र एक चुनाव कार्यक्रम में सीएम ने कहा कि ये आज देश की जरूरत है। 1969 तक ऐसा होता था, लेकिन वोट की राजनीति करने वालों ने चुनाव प्रक्रिया को कई भागों में बांट दिया।

180 किलोमीटर प्रतिदिन चलेगी

50 इलेक्ट्रिक एसी बस सिंगल चार्ज एवं अपॉरच्युनिटी चार्ज के साथ 180 किलोमीटर प्रतिदिन चलेगी। एक इलेक्ट्रिक बस की कीमत 1.2 करोड़ रुपए है। बसों की कुल लागत 60 करोड़ रुपए है। यह बस नेट कास्ट मॉडल पर संचालित की जाएगी। सरकार द्वारा 40 प्रतिशत एएमआरयूटी के अंतर्गत वीजीएफ दिया जाएगा एवं ऑपरेशन कॉस्ट शून्य रहेगी जिससे सरकार को वित्तीय रूप से लाभ पहुंचेगा।

सीएम बोले- एक राष्ट्र एक चुनाव आज के समय की जरूरत

बीसीसी में आयोजित एक राष्ट एक चुनाव कार्यक्रम में सीएम ने कहा कि ये आज देश की जरूरत है। 1969 तक ऐसा होता था, लेकिन वोट की राजनीति करने वालों ने चुनाव प्रक्रिया को कई भागों में बांट दिया। देश के विकास के लिए अलग-अलग राज्यों के चुनाव बाधा बनते थे।

50 ईवी बसों की कीमत 60 करोड़ से ज्यादा

सीएम यादव ने स्नेह भोज से पहले 60 करोड़ की लागत से खरीदी गई 50 इलेक्ट्रिक एसी बसों का शुभारंभ भी किया। सीएम ने कहा-यह पर्यावरण हितैषी बसें शहर की यातायात व्यवस्था को नई दिशा देंगी तथा आम नागरिकों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित परिवहन की सुविधा उपलब्ध कराएंगी।

सुप्रभात

हे मुरलीधर! तेरे जग का,
प्रेम समंदर सूख गया क्या ?
प्यास हमारी अँजुरी भर थी
और बूँद भी हाथ न आयी !
रिश्तों के साये में हमको,
धूप मिली है बदन तपाती,
झुलस गए हम उसी हवा से,
जो सहरा में फूल खिलाती,
क्या अपराध हमारा था जो,
सूखा क़िस्मत में आया है
तृष्णा दुल्हन बनकर बैठी,
मेघों की बारात न आयी !
अँधियारी गलियों से होकर,
उजियारों को गए मनाने,
लिए हाथ में नन्हा दीपक,
उम्मीदों से चले जलाने ,
नहीं मिली इक भी चिंगारी,
ठगे हुए अब हम बैठे हैं
सूरज पहले से रूठा था,
और चाँदनी साथ न आयी!
कोशिश करते रहे बीज हम,
बंजर में पल पल बोने की,
आदत पड़ी हमें जाने कब,
कंधों पर रिश्ते ढोने की,
फीका पड़ा प्रेम का जादू,
मदन देख तेरे ही जग में,
जिन अधरों को प्रेम चूम ले,
उनपर प्रेमिल बात न आयी!

– अंकिता सिंह

ट्रम्प भारत और चीन को धमकाना बंद करें

● पुतिन बोले-दोनों देशों को टैरिफ से नहीं डरा सकते ● कहा-अगर वे झुके तो उनकी राजनीति खत्म हो जाएगी

बीजिंग (एजेंसी)। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से भारत और चीन को टैरिफ के नाम पर धमकाना बंद करने को कहा है। उन्होंने कहा कि दोनों (भारत-चीन) देश उनकी धमकी से डरने वाले नहीं हैं। चीन की विक्ट्री डे परेड में शामिल होने के बाद बुधवार (3 सितंबर) को मीडिया से बात करते हुए पुतिन ने कहा कि ट्रम्प, भारत या चीन से इस तरह से बात नहीं कर सकते। रूसी राष्ट्रपति ने कहा, भारत और चीन का इतिहास हमलों से भरा है। अगर इन देशों का कोई नेता कमजोरी दिखाएगा तो उसका राजनीतिक करियर खत्म हो सकता है। दरअसल, ट्रम्प भारत पर कई बार आरोप लगा चुके हैं कि भारत रूसी तेल खरीदता है और यूक्रेन जंग में रूस का साथ दे रहा है। ट्रम्प अपने टैरिफ को जंग सुलझाने वाला हथियार बताते हैं। ट्रम्प ने बुधवार को द स्कॉट जेनिंग्स रेडियो शो में कहा था कि इस (टैरिफ) नीति की वजह से अमेरिका को ताकत मिलती है। ट्रम्प ने टैरिफ को जादुई हथियार कहा और दावा किया इसके जरिए उन्होंने 7 जंग रोकी हैं। पुतिन ने अमेरिका के रवैये को पुराना और रूढ़िवादी मानसिकता वाला बताया। उन्होंने कहा, औपनिवेशिक युग अब खत्म हो चुका है। अमेरिका को समझना होगा कि वह अपने पार्टनरों से ऐसी भाषा में बात नहीं कर सकता। हालांकि उन्होंने उम्मीद जताई कि भविष्य में तनाव कम होगा और सामान्य राजनीतिक बातचीत फिर शुरू होगी। पुतिन की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है, जब भारत रूसी तेल खरीदने के कारण अमेरिकी टैरिफ का सामना कर रहा है और चीन अमेरिका के साथ व्यापार युद्ध में उलझा है। 1 सितंबर को चीन के तियानजिन में एससीओ की बैठक हुई। बैठक से पहले फोटो सेशन के दौरान भारतीय पीएम नरेंद्र मोदी, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूसी राष्ट्रपति पुतिन एक साथ नजर आए। तीनों नेताओं को एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए भी देखा गया। भारत, चीन और रूस के नेताओं ने आपसी दोस्ती का प्रदर्शन किया, जिससे अमेरिका बेचैन हो गया है। प्रधानमंत्री ने रूस को विशेष और विश्वसनीय साझेदार बताया। चीनी राष्ट्रपति ने कहा कि दुनिया के दो सबसे ज्यादा आबादी वाले देशों को दोस्त होना चाहिए।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शुक्रवार, 05 सितंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

गोला बारूद बनाने वाली 7 नई कंपनियों का कमाल

● सिर्फ 4 साल में मचाया धमाल, निर्यात में रिकॉर्ड उछाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। चार साल पहले की बात है। ऑर्डनेंस फैक्ट्री बोर्ड से निकाल कर सात कंपनियां बनी थीं। इन कंपनियों ने मात्र चार साल में न सिर्फ मोटी कमाई शुरू कर दी है, बल्कि आयुद्ध निर्यात को भी रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचा कर 3,545 करोड़ रुपये तक ले गए हैं। ये वही कंपनियां हैं, जो ऑर्डनेंस फैक्ट्री बोर्ड बोर्ड के रूप में बेदम हो चुके थे और उनका कुल घाटा 2,844 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका था।

हालत इतनी पतली हो गई थी कि इनके पास रिसर्च एंड डेवलपमेंट या विदेशी बाजार में खोज के लिए न के बराबर पैसे बचते थे। सातों नई आयुध कंपनियों का अगर वित्त वर्ष 2025 के वित्तीय आंकड़े देखें तो इन फैक्ट्रियों का शुद्ध मुनाफा 1,625 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। निगमीकरण की इस प्रक्रिया में कामयाबी के बाद इन फैक्ट्रियों को अब नए हथियारों और गोला-बारूद के रिसर्च एंड डेवलपमेंट पर खर्च बढ़ाने के लिए कहा गया है, जो अभी 250 करोड़ रुपये से भी कम है।

सूत्रों का कहना है कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह चाहते हैं कि ये फैक्ट्रियां मुकाबले में बनी रहें, इसके लिए रिसर्च और डेवलपमेंट का बजट दोगुनी कर दी जाए। साफ है कि इन कंपनियों ने मुनाफे में नया मुकाम हासिल करना शुरू कर दिया है, लेकिन निर्यात में इनकी उछाल बहुत ही शानदार कहानी बयां कर रही हैं। बड़ी बात है कि सभी नई कंपनियां नए बाजारों पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं। मसलन, 2019-20 में इनका कुल निर्यात 81 करोड़ रुपये तक ही सीमित था। साल 2024-25 के जो प्रॉविजनल आंकड़े उपलब्ध हैं।

पीएम के पहुंचने से पहले मणिपुर में आएगी शांति!

● जल्द खुलेगा नागालैंड-पूर्वोत्तर से जोड़ने वाला नेशनल हाईवे ● मैतेई-कुकी हिंसा के बाद 2 साल से बंद था, हुआ समझौता

नई दिल्ली (एजेंसी)। मणिपुर में जारी जातीय हिंसा के बीच गुरुवार को कुकी-जो काउंसिल राष्ट्रीय राजमार्ग-2 को पूरी तरह खोलने को तैयार हो गया। अब इस मार्ग से लोगों और जरूरी सामान की आवाजाही बिना रुकावट हो सकेगी। गृह मंत्रालय के मुताबिक, कुकी-जो काउंसिल सुरक्षा बलों के साथ एनएच-2 पर शांति बनाए रखने में सहयोग करेगी। यह हाईवे मणिपुर को नागालैंड और पूर्वोत्तर से जोड़ने वाली जीवनरेखा है, जो मई 2023 में भड़की मैतेई और कुकी समुदायों की हिंसा के बाद से बंद था। दिल्ली में गुरुवार को केंद्र सरकार, मणिपुर सरकार और कुकी संगठनों (कुकी नेशनल ऑर्गनाइजेशन और यूनाइटेड पीपल्स फ्रंट-के बीच त्रिपक्षीय बैठक हुई। बैठक के अंत में नया सस्पेंशन ऑफ ऑपरेशंस करार साइन किया गया। यह समझौता एक साल के लिए प्रभावी रहेगा और इसमें नई शर्तें जोड़ी गई हैं। गृह मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि कुकी-जो परिषद ने एनएच-2 पर शांति बनाए रखने के लिए सुरक्षा बलों के साथ सहयोग करने की प्रतिबद्धता जताई है। मणिपुर को नागालैंड और पूर्वोत्तर के अन्य हिस्सों से जोड़ने वाली महत्वपूर्ण जीवनरेखा एनएच-2, मई 2023 में राज्य में भड़के जातीय तनाव के कारण अवरुद्ध हो गई थी। मेइती और कुकी-जो समुदायों के बीच संघर्ष के कारण व्यापक हिंसा, जान-माल की हानि, हजारों लोगों का विस्थापन और गहराता मानवीय संकट उत्पन्न हुआ है। राजमार्ग को फिर से खोलना विश्वास बहाली और हिंसा प्रभावित राज्य में सामान्य स्थिति बहाल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इंफाल और नई दिल्ली के अधिकारियों का मानना है कि आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति आसान होने से विस्थापित परिवारों और राहत शिविरों को राहत मिलेगी।

कांग्रेस ने आपका बजट बढ़ाया, हमने कम किया

पीएम बोले-दीवाली-छठ पूजा से पहले खुशियां डबल की

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने गुरुवार को कहा कि हमने आजादी के बाद का अब तक का सबसे बड़ा फैसला लिया है। कांग्रेस बच्चों की टॉफी पर भी टैक्स लेती थी। लोगों के घर का बजट बिगड़ा हुआ था। समय पर बदलाव के बिना, हम अपने देश को आज की वैश्विक स्थिति में उसका उचित स्थान नहीं दिला सकते। मैंने इस बार 15 अगस्त को लाल किले से कहा था कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अगली पीढ़ी के सुधार करना बेहद जरूरी है। मैंने देशवासियों से यह वादा भी किया था कि इस दीवाली और छठ पूजा से पहले खुशियों की दोहरी बौछार होगी। पीएम ने कहा अगर भारत को वैश्विक स्थिति में उचित स्थान दिलाना है तो समय के साथ बदलाव बहुत जरूरी है। जीएसटी रिफार्म्स पर पीएम मोदी ने कहा,समय पर बदलाव के बिना, हम अपने देश को आज की वैश्विक स्थिति में उसका उचित स्थान नहीं दिला सकते। मैंने इस बार 15 अगस्त को लाल किले से कहा था कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अगली पीढ़ी के लिए सुधार करना बेहद जरूरी है।

पीएम बोले-बढ़ जाएगी दीवाली की रौनक

उन्होंने कहा, इस बार धनतेरस की रौनक भी और ज्यादा रहेगी। क्योंकि दर्जनों चीजों पर टैक्स अब बहुत ही कम हो गया है। 8 साल पहले जब जीएसटी लागू हुआ तो कई दशकों का सपना साकार हुआ। ये आजाद भारत का सबसे बड़ा आर्थिक सुधारों में से एक था। प्रधानमंत्री ने कहा, 21वीं सदी में आगे बढ़ते भारत में जीएसटी में भी नेक्स्ट-जेनरेशन रिफॉर्म किया गया है। जीएसटी 2.0 ये देश के लिए सपोर्ट और ग्रोथ की डबल डोज है। नए जीएसटी रिफॉर्म से देश के हर परिवार को बहुत बड़ा फायदा होगा।

इंदौर में बच्चों की मौत हादसा नहीं हत्या है

● राहुल गांधी ने एमपी सरकार को घेरा, बताया लापरवाही का नतीजा ● एमवाय में 2 दिन में हुई थी 2 बच्चों की मौत, चूहों ने कुतरा था

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के महाराजा यशवंतराव अस्पताल के एनआईसीयू (नवजात गहन देखभाल इकाई) में 2 बच्चों की मौत को कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने हत्या कहा है। राहुल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा- इंदौर में मध्यप्रदेश के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल में दो नवजात शिशुओं की चूहों के काटने से मौत...यह कोई दुर्घटना नहीं, यह सीधी-सीधी हत्या है। यह घटना इतनी भयावह, अमानवीय और असंवेदनशील है कि इसे सुनकर रुह भी कांप जाए। एक मां की गोद से उसका बच्चा छिन गया, सिर्फ इसलिए क्योंकि सरकार ने अपनी सबसे बुनियादी जिम्मेदारी नहीं निभाई। हेल्थ सेक्टर को जानबूझकर प्राइवेट हाथों में सौंपा गया - जहां इलाज अब सिर्फ अमीरों के लिए रह गया है, और गरीबों के लिए सरकारी अस्पताल अब जीवनदायी नहीं, मौत के अड्डे बन चुके हैं। राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा- पीएम मोदी और एमपी के मुख्यमंत्री को शर्म से सिर झुका लेना चाहिए। आपकी सरकार ने देश के करोड़ों गरीबों से स्वास्थ्य का अधिकार छीन लिया है। अब मां की गोद से बच्चे तक छीनने लगे हैं। इधर, चिकित्सा शिक्षा आयुक्त तरुण राठी इंदौर के एमजीएम मेडिकल कॉलेज पहुंचे। उन्होंने डीन डॉ. अरविंद घनघोरिया और एमवाय अस्पताल अधीक्षक डॉ. अशोक यादव समेत अन्य अफसरों के साथ बैठक की। तरुण राठी ने पीडियाट्रिक यूनिट का दौरा भी किया।

बंगाल विधानसभा से बाहर किए गए भाजपा चीफ-व्हिप

● मार्शलों ने घसीटकर निकाला, जमीन पर गिरकर बेहोश हुए ● तीन और भाजपा विधायक भी सस्पेंड

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा में गुरुवार को जमकर हंगामा हुआ। बंगाली प्रवासियों पर हो रहे अत्याचारों पर सत्ता पक्ष की ओर से लाए प्रस्ताव पर चर्चा की जा रही थी। इस दौरान विपक्ष (भाजपा) ने नारेबाजी की। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी प्रस्ताव पर बोल रहीं थीं। तभी भाजपा विधायकों ने 2 सितंबर को विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी के निलंबन पर सवाल उठाते हुए नारे लगाए, जिसका टीएमसी विधायकों ने विरोध किया। हंगामे के बीच विधानसभा स्पीकर बिमान बनर्जी ने अव्यवस्था फैलाने के आरोप में भाजपा के चीफ व्हिप शंकर घोष को विधानसभा से सस्पेंड कर दिया। घोष के बाहर जाने से इनकार करने पर मार्शलों को बुलाया गया और उन्हें घसीटकर सदन से बाहर निकाला गया। बाहर निकालते समय वो गिरकर बेहोश हो गए, उन्हें एंबुलेंस से अस्पताल ले जाया गया। घोष के अलावा दो अन्य भाजपा विधायक अग्निमित्र पॉल और मिहिर गोस्वामी को भी सदन से निलंबित कर दिया गया है। भाजपा नेता सुवेंदु अधिकारी ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा- आज पश्चिम बंगाल विधानसभा में ममता बनर्जी और उनके गुलाम प्रशासन ने लोकतंत्र की हत्या कर दी। पश्चिम बंगाल विधानसभा का तीन दिन का विशेष सत्र 1 को शुरू हुआ था।

बीजेपी चीफ की रेस में फडणवीस का भी नाम!

बिहार चुनाव के बाद पार्टी ले सकती है बड़ा फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जगत प्रकाश नड्डा के बाद भारतीय जनता पार्टी की कमान कौन संभालेगा, इसे लेकर फैसला अब तक नहीं हो सका है। भाजपा में अब तक उम्मीदवारों के नाम पर मंथन जारी है। अब कहा जा रहा है कि संभावित उम्मीदवारों की रेस में एक मुख्यमंत्री और एक और केंद्रीय मंत्री की भी एंट्री हो गई है। हालांकि, भाजपा ने इसे लेकर आधिकारिक तौर पर कुछ नहीं कहा है। लंबे समय से कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान समेत कई नेताओं के नामों की भी चर्चा है। की रिपोर्ट के अनुसार, भाजपा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार में मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला के नाम पर विचार कर सकती है। रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि फडणवीस को संकेत दे दिए गए हैं।

अमेरिका की पहली बार घट जाएगी आबादी

● राष्ट्रपति ट्रंप की पॉलिसी से लगेगा एक और झटका

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका में 250 सालों के इतिहास में पहली बार आबादी में गिरावट आने वाली है। ऐसा इसलिए क्योंकि प्रवासियों के आने में कमी आई है। यही नहीं देश में प्रवासियों की संख्या 5,25,000 कम होनी है। एक तरफ यह गिरावट आएगी तो वहीं अमेरिका में जन्म लेने वाले बच्चों का आंकड़ा 5 लाख 19 हजार रहने का अनुमान है। इस तरह अमेरिका की आबादी में कुल 6000 लोगों की कमी इस साल दर्ज की जाएगी। अमेरिकन इंटरप्राइजेज इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में सिविल वॉर के दौरान 7 लाख लोग मारे गए थे। तब भी आबादी में गिरावट नहीं आई

थी। कोरोना काल में भी अमेरिका की आबादी निगेटिव में नहीं गई थी। इसलिए यह ऐतिहासिक होगा कि अमेरिका की आबादी में इस साल गिरावट दर्ज होगी। आबादी में इस कमी की वजह अमेरिका की घटती जन्मदर भी है। बीते करीब 30 सालों से अमेरिका की औसत जन्मदर 1.6 ही बनी हुई है, जबकि रिप्लेसमेंट लेवल के लिए भी 2.1 जरूरी मानी गई है। इस तरह अमेरिका में परिवार लगातार छोटे हो रहे हैं और बच्चे पैदा करने में लोगों की रुचि कम हो रही है। इंस्टीट्यूट फॉर फैमिली स्टडीज के अनुसार अमेरिका में हर सप्ताह सेक्स करने वाले महिला और पुरुषों की संख्या 37 फीसदी ही है, जबकि 1990 में यह औसत 55 पर्सेंट था।

मोदी को गाली पर एनडीए का बिहार बंद

सड़क पर उतरे बीजेपी और सहयोगी पार्टियों के कार्यकर्ता

12 जिलों में हाईवे जाम, भागलपुर और जहानाबाद में बवाल

पटना (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मां की गाली देने के मामले में एनडीए ने गुरुवार को बिहार बंद किया। सुबह 7 बजे से दोपहर 12 बजे तक एनडीए के कार्यकर्ता सड़क पर उतरे और दुकानें बंद कराई। चौक-चौराहों को जाम किया। इस दौरान समस्तीपुर, बेगूसराय, छपरा, हाजीपुर, दरभंगा में समेत 12 जिलों में 2 से 3 घंटे नेशनल हाईवे जाम किया गया। गाड़ियों की लंबी लाइन लग गई। बंद को लेकर कांग्रेस और राजद ऑफिस की सुरक्षा बढ़ाई गई थी। साथ ही पटना में 2 हजार से ज्यादा पुलिस जवान तैनात किए गए। 27 अगस्त को दरभंगा में वोटर अधिकार यात्रा के दौरान राहुल-तेजस्वी के मंच से पीएम नरेंद्र मोदी को मां की गाली दी गई थी। इसके बाद से ही बीजेपी लगातार प्रदर्शन कर रही है। पटना के सगुना मोड़ पर आगजनी की गई। जज और शिक्षा विभाग के संयुक्त सचिव की गाड़ियों को रोका गया। बिहटा में बीजेपी नेताओं ने सड़क जाम किया। डाकबंगला चौराहे को कार्यकर्ताओं ने करीब 2 घंटे ब्लॉक कर दिया। जहानाबाद में बंद को सफल बनाने के लिए कार्यकर्ता रोड रोलर लेकर पहुंच गए थे।

अमेरिका का वेनेजुएला की नाव पर हमला, 11 की मौत

● विदेश मंत्री बोले-ड्रग्स की तस्करी हो रही थी, ट्रम्प ने उड़ाने का आदेश दिया

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी सेना ने मंगलवार को वेनेजुएला की एक नाव पर हमला किया जिसमें 11 लोगों की मौत हो गई। अब अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने खुलासा किया है कि खुद ट्रम्प ने नाव पर हमला करने का आदेश दिया था। यह हमला मंगलवार को कैरिबियन सागर में हुआ था। रुबियो ने कहा कि वे चाहते तो उस नाव को सीज कर सकते थे, लेकिन ट्रम्प ने इसके बजाय उसे उड़ाने का आदेश दिया। रुबियो ने कहा कि सिर्फ ड्रग्स की खेप जब्त करने से कार्टेल पर असर नहीं पड़ने वाला है। उन्हें खत्म करना है तो उन्हें उड़ाना ही होगा। रुबियो ने यह भी कहा कि नाव पर मौजूद लोगों को कोई चेतावनी नहीं दी गई क्योंकि वह 'कोकीन या फेंटेनाइल' ड्रग से भरी हुई थी। यह अमेरिका के लिए सीधा खतरा थी। इससे पहले राष्ट्रपति ट्रम्प ने दावा किया कि जहाज पर 'ट्रेन डे अरागुआ गिरोह' के सदस्य थे। अमेरिका इसे आतंकवादी संगठन घोषित कर चुका है। ट्रम्प ने दावा किया कि नाव पर भारी मात्रा में ड्रग्स था।

तेजी से पिघल रही हैं हिमालय की 400 ग्लेशियर झीलें

● भारत में खतरा, आ सकती है प्रलय, रिपोर्ट में चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। जलवायु परिवर्तन से होने वाले प्रभावों से भारत भी अछूता नहीं है। इस बीच हाल ही में सामने आई एक रिपोर्ट में इसके खतरों को लेकर आगाह किया गया है। केंद्रीय जल आयोग ने अपनी नई मॉनिटरिंग रिपोर्ट में बताया है कि भारत में 400 से अधिक ग्लेशियर झीलों का तेजी से विस्तार हो रहा है जो भारत के लिए चिंताजनक स्थिति है। रिपोर्ट में बताया गया है कि आने वाले दिनों में किसी भी प्रलय से बचने के लिए इनकी गहन निगरानी की आवश्यकता है। हाल ही में सार्वजनिक की गई ग्लेशियल लेक्स एंड वॉटर बॉडीज फॉर जून 2025 नाम की एक रिपोर्ट के मुताबिक जल आयोग ने कहा है कि लद्दाख, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश में फैली 432 ग्लेशियल झीलें अचानक विनाशकारी बाढ़ ला सकती हैं। इसलिए इनकी गहन निगरानी की जरूरत है। रिपोर्ट में कहा गया है, ''ग्लेशियल लेक एटलस-2023 के मुताबिक भारत में स्थित 681 में से) 432 झीलों का विस्तार हो रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अरुणाचल प्रदेश में इन झीलों की सबसे ज्यादा (197) संख्या हैं। वहीं लद्दाख (120), जम्मू और कश्मीर (57), सिक्किम (47), हिमाचल प्रदेश (6) और उत्तराखंड (5) की भी झीलें इस सूची का हिस्सा हैं। यह खुलासा भी

हुआ है कि भारत में ग्लेशिया झीलों का कुल क्षेत्रफल भी बीते दशक में तेजी से बढ़ा है। जानकारी के मुताबिक 2011 में इनका क्षेत्रफल 1,917 हेक्टेयर था जो 2025 में बढ़कर 2,508 हेक्टेयर हो गया है। जल्द से जल्द सचेत होने की जरूरत पर जोर देते हुए सीडब्ल्यूसी ने निचले इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए रियल टाइम मॉनिटरिंग सिस्टम, सैटेलाइट बेस्ड अलर्ट और वार्निंग सिस्टम स्थापित करने की सिफारिश की है। रिपोर्ट में कहा गया है, ''हिमालयी क्षेत्र जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से निपटने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर रहा है।

बिजली कंपनी और निगम की टीमों ने अनंत चतुर्दशी की तैयारियां तेज की

● झांकी मार्ग पर दोनों टीमों में विशेष कार्य शुरू किए गए

इंदौर। अनंत चतुर्दशी पर होने वाले श्री गणेश विसर्जन चल समारोह को देखते हुए नगर निगम और बिजली कंपनी की टीमों ने तैयारी तेज कर दी है। नगर निगम जहां सड़कों के गड्ढे भरने और मार्ग दुरुस्त करने में जुटा है, वहीं बिजली कंपनी पुराने तार और ट्रांसफार्मर बदलकर बिजली व्यवस्था को सुदृढ़ कर रही है। झांकी मार्ग पर विशेष इंजीनियरों की टीम लगातार निगरानी कर रही है। बिजली विभाग ने झांकी मार्ग पर पुराने ट्रांसफार्मरों को बदलने, लाइनों की ऊंचाई बढ़ाने और ढीले केबलों को व्यवस्थित करने जैसे कार्य किए हैं। अधिकारियों के अनुसार पूरे मार्ग पर एक सप्ताह का विशेष कार्यक्रम चलाकर कार्य किया जा रहा है। इसमें उत्तर, मध्य, पश्चिम और पूर्व संभाग की टीमें मिलकर मालवा मिल से बजाज खाना, राजमोहल्ला, जवाहर मार्ग और एमजी रोड तक सक्रिय रहेंगी। विशेष पावर सप्लाई की व्यवस्था भी दक्षिण क्षेत्र से की जाएगी ताकि झांकी के दौरान बिजली कटौती न हो। लगभग 55 स्थानों पर वितरण ट्रांसफार्मरों का रखरखाव और सुरक्षा कवरिंग का काम पूरा किया जा रहा है। बजाज खाना क्षेत्र में बिजली कंपनी अस्थाई कंट्रोल रूम स्थापित करेगी, जो अनंत चतुर्दशी की शाम से लेकर झांकी पूर्ण होने तक सक्रिय रहेगा। निगम और बिजली विभाग की संयुक्त तैयारी से उम्मीद है कि श्रद्धालु बिना किसी असुविधा के भव्य चल समारोह का आनंद ले सकेंगे।

पौने 3 लाख फीस लेने वाली नकली वकील पकड़ाई

इंदौर। पुलिस ने एक महिला पर धोखाधड़ी का केस दर्ज किया है। महिला ने खुद को वकील बताया और तलाक का केस लड़ने के लिए 2.75 लाख रुपए लिए। हीरानगर टीआई पीएल शर्मा के मुताबिक कर्मचारी कॉलोनी तिलक नगर देवास निवासी शैलेंद्र चौहान ने आशी शर्मा निवासी कबीटखेड़ी के खिलाफ रिपोर्ट लिखवाई है। धर्मेंद्र के मुताबिक उसके साले रोहित का पत्नी रागिनी से विवाद चल रहा था। रागिनी ने ललितपुर (उप्र) की कोर्ट में तलाक का केस लगा रखा है। धर्मेंद्र ने आशी को केस में पक्ष रखने का जिम्मा सौंपा था। आशी ने वकालत नामा पर साइन करवाए और 2 लाख 75 हजार रुपये फीस ले ली। धर्मेंद्र के अनुसार वह केस में पैरवी करने और केस ख़त्म करवाने का आश्वासन देती रही। कुछ समय बाद पता चला आशी एक बार भी कोर्ट नहीं गई। फोन बंद मिलने पर धर्मेंद्र ने बार एसोसिएशन के अध्यक्ष को घटना बताई तो पता चला आशी शर्मा फर्जी वकील है। मंगलवार को पुलिस ने आशी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया।

मामा-भांजे की जोड़ी ड्रग बेचते पकड़ाई

इंदौर। इंदौर की खजराना पुलिस ने एक मामा-भांजे की जोड़ी को गिरफ्तार किया है। दोनों शहर में एमडी ड्रग बेचते थे। वह राजस्थान के रास्ते डील कर नशे की खेप लेकर इंदौर आते थे। यहां स्टूडेंट को इसे सप्लाई करते थे। दोनों आरोपियों से 110 ग्राम एमडी ड्रग मिली है। टीआई मनोज सेंधव की टीम को जानकारी मिली थी कि शाहनवाज पुत्र जमशेद अहमद खान जो कि पूर्व में उज्जैन के बेगमबाग में रहता था। अभी खजराना के अहमद नगर में आकर अपने भांजे शाहरुख पुत्र असगर के साथ एमडी बेच रहा है। वह चलते फिरते टोकन बनाकर स्टूडेंट और अन्य लड़कों को देते हैं। टीआई ने एक टीम बनाकर उनकी रेकी करवाई और आरोपियों को दबोच लिया।

प्रेमिका की हत्या कर भागा इंदौर में पकड़ाया

इंदौर। क्राइम ब्रांच ने मुंबई ठाणे के शांतिनगर में प्रेमिका की हत्या के मामले में एक साल से फरार चल रहे आरोपी प्रेमी को पकड़ा। इस संबंध में इंदौर क्राइम ब्रांच ने ठाणे पुलिस को सूचना दी है। आरोपी यूपी से एक ट्रक में बैठकर इंदौर की तरफ आ रहा था। उसे मंगलवार रात देवास नाके से पकड़ा गया। क्राइम ब्रांच के एडीशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया ने बताया कि ठाणे के शांति नगर इलाके में 24 अक्टूबर 2024 को नीतू सिंह की उसके प्रेमी राजीव सिंह ने चाकू मारकर हत्या कर दी थी। इस मामले में मुंबई पुलिस लगातार आरोपी की तलाश कर रही थी। वह करीब एक साल से पुलिस को चकमा दे रहा था। महाराष्ट्र के कई जिलों में उसके फोटो वायरल किए गए थे। वहीं, उस पर हजारों रुपए का इनाम भी घोषित किया गया था। उसे हिरासत में लेकर पूछताछ की गई तो उसने हत्या की बात कबूल की। इसके बाद ठाणे पुलिस को सूचना दी गई। महाराष्ट्र पुलिस आरोपी को लेने के लिए इंदौर आ रही है।

किसानों को सीधी राहत, सरकार पर बोझ भी आधा होगा

● शासन से भावांतर भुगतान योजना लागू करने की सोपा ने मांग की

इंदौर। सोयाबीन प्रोसेसर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सोपा) ने केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से वर्तमान मूल्य समर्थन योजना (पीएसएस) की जगह भावांतर भुगतान योजना लागू करने की मांग की है। संगठन का कहना है कि इससे न केवल किसानों को सीधी और त्वरित राहत मिलेगी बल्कि सरकार पर पड़ने वाला वित्तीय बोझ भी आधा हो जाएगा। सोपा के चेयरमैन डॉ डेविश जैन ने अपने पत्र में बताया कि विपणन वर्ष 2024-25 (अक्टूबर 2024-सितंबर 2025) के दौरान सोयाबीन की मंडी कीमतें लगातार न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 4,892 प्रति क्विंटल से नीचे रहीं। इसका मुख्य कारण आयात शुल्क में कटौती और डिस्टिलर्स ड्रायड ग्रेन्स विद सॉल्यूबल्स (डीडीजीएस) की प्रतिस्पर्धा के चलते सोयाबीन तेल और खल की कीमतों में आई गिरावट है। सरकार ने किसानों की मदद के लिए एनएएफईडी और एनसीसीएफ के माध्यम से 20 लाख टन सोयाबीन की खरीद की, लेकिन प्रशासनिक खर्च, भंडारण, बर्बादी और कमीशन सहित भारी लागत उठानी पड़ी। बाद में इस स्टॉक की नीलामी 10,000 प्रति टन की छूट पर की गई, जिससे सरकार को लगभग 2 हजार करोड़ का नुकसान हुआ। अब जबकि 2025-26 के लिए एमएसपी बढ़कर 5,328 प्रति क्विंटल हो गया है, लेकिन बाजार की स्थितियां जस की तस बनी हुई हैं। सोपा ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यदि मौजूदा हालात जारी रहे तो सरकार को पिछले साल से दोगुना सोयाबीन खरीदना पड़ सकता है, जिससे नुकसान 5 हजार करोड़ से अधिक पहुंच सकता है। इस परिप्रेक्ष्य में सोपा ने सुझाव दिया है कि भावांतर भुगतान योजना के तहत किसानों को बाजार भाव और एमएसपी के बीच का अंतर सीधे उनके बैंक खातों में दिया जाए। इससे किसानों को तुरंत राहत मिलेगी, सरकारी खर्च आधा हो जाएगा और अनावश्यक लॉजिस्टिक व भंडारण लागत से भी बचा जा सकेगा। डॉ जैन ने यह भी जोर दिया कि योजना को इस प्रकार डिजाइन किया जाए कि लाभ केवल वास्तविक किसानों तक पहुंचे और किसी प्रकार की गड़बड़ी या दुरुपयोग की गुंजाइश न रहे।

इंदौर में रातभर बारिश, 24 घंटे में 5 इंच पानी गिरा, यशवंत सागर के 4 गेट खोले

● 12 घंटे में 3.67 इंच दर्ज, निचले इलाक़ों में पानी भरा, सड़कें लबालब

इंदौर। बुधवार शाम से शुरू हुई बारिश रातभर से जारी रही। रात 12 बजे बाद कई हिस्सों में बारिश तेजी से शुरू हुई। सुबह 8 बजे तक करीब 5 इंच बारिश रिकॉर्ड की गई। बारिश के देखते हुए कई स्कूलों ने बच्चों की छुट्टी कर दी। इस सीजन में शहर में औसतन 25 इंच से ज्यादा बारिश हो चुकी है। यशवंत सागर तालाब का अभी तक एक गेट खुला था, रात की बारिश के बाद 3 गेट खोलना पड़े। मौसम वैज्ञानिकों ने अगले दो-तीन दिन तेज बारिश के आसार जताए हैं। मौसम विभाग के अनुसार एक नया सिस्टम एक्टिवेट हुआ, जिससे 15 दिन अच्छी बारिश के आसार है। बंगाल की खाड़ी में एक सिस्टम बन रहा है, जो आगे चलकर इंदौर में भी बारिश करेगा। 4 सितंबर से यह सिस्टम असर दिखाएगा। सितंबर के शुरुआती 15 दिन पानीदार रहने वाले हैं। अब तक इस मानसून सीजन में 24.5 इंच बारिश हुई। अभी भी औसत 38 इंच बारिश के आंकड़े को छूने के लिए 12.5 इंच पानी की और जरूरत है। पिछला सितंबर सूखा रहा था। महज 6 इंच ही बारिश हुई, लेकिन इस बार भी तीन-चार सिस्टम बन गए तो पिछले दो-तीन माह के सूखे दिनों की भरपाई हो जाएगी। मानसून सीजन में इस बार जून से लेकर अगस्त तक केवल तीन बार पूरे शहर में एक जैसी बारिश हुई। इस दौरान 2.7, 2.5 और 3.2 इंच पानी एक साथ पूरे शहर में बरसा। बाकी समय मौसम विभाग के जारी अलर्ट के अनुसार अलग-अलग क्षेत्रों में बारिश हुई।

शहर में बारिश का ट्रेंड बदला- शहर में इस साल बारिश का ट्रेंड बदल गया। कृषि कॉलेज स्थित वेधशाला ने पूर्वी क्षेत्र में अब तक 29 इंच बारिश दर्ज की, तो रीगल तिराहा पर प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के यंत्र ने मध्य क्षेत्र में 27.8 इंच बारिश बताई गई हैं। वहीं, एयरपोर्ट स्थित मौसम विभाग के बारिश मापने वाले यंत्र ने पश्चिम क्षेत्र में 24.7 इंच बारिश रिकॉर्ड की है। इंदौर में कृषि कॉलेज तक तेज पानी बरसेगा तो ठीक उसी समय राजवाड़ा क्षेत्र में रिमझिम या फिर बारिश नहीं होगी।

पूर्वी क्षेत्र में कई बार तेज बारिश- पूर्वी रिंग रोड, बंगाली चौराहा, मूसाखेड़ी, निपानिया तरफ सीजन में 5-7 बार ऐसा हुआ है, जब 1-2 घंटे तक मूसलाधार बारिश हुई। सड़कों पर लबालब पानी भर गया। इस वजह से यहां अब तक 29 इंच पानी गिर चुका है। इस क्षेत्र में सक्रिय हुए बादलों का असर रिंग रोड से आगे चलकर रीगल, मिल क्षेत्र, पलासिया, गीता भवन, शिवाजी वाटिका, रेसीडेंसी क्षेत्र तक भी हुआ है। रीगल व मध्य क्षेत्र में इस कारण 27.8 इंच बारिश दर्ज हुई है। वहीं, पिछले 10-12 सालों से पश्चिमी इंदौर में पूर्व के मुकाबले कम ही पानी गिर रहा है।

यशवंत सागर भरा, बिलावली खाली- 7 अगस्त तक की स्थिति में यशवंत सागर में 15 फीट ही पानी जमा था। महू, पीथमपुर क्षेत्र में तेज बारिश होने से यह 19 फीट भरा गया है। ओवरफ्लो होने पर सायफन खोलने पड़े थे। अच्छी बात यह है कि सितंबर में बारिश होती रहेगी, जिससे इसका वाटर लेवल बना रहेगा। वहीं, बड़ा बिलावली व छोटा बिलावली अब भी खाली हैं। उम्मीद है कि ये जल्द भर जाएंगे

बारिश का कोटा 38 इंच का- इस बार अच्छी बारिश अगस्त के आखिरी हफ्ते में हुई थी। जबकि, सितम्बर की शुरुआत भी अच्छी रही। इंदौर में सीजन की बारिश का औसत कोटा 38 इंच का है। इस लिहाज से कोटा पूरा करने के लिए अभी 13 इंच बारिश की और जरूरत है, जबकि माह के 25 दिन बाकी हैं। अभी जिस प्रकार से सिस्टम बना हुआ है, उम्मीद है कि सितंबर माह भी इंदौर को काफी तर करेगा। यशवंत सागर सहित अन्य तालाबों का जलस्तर काफी अच्छा हो गया।

डोल ग्यारस पर खाचरोद में झांकियां निकली

खाचरौद। यहाँ परंपरानुसार फूल डोल की आकर्षक एवं नयनाभिराम झांकियां नगर के प्रमुख मार्गों से निकली। स्थानीय एवं दूरदराज के हजारों दर्शकों ने पूरी रात झांकियों को निहारा और अखाड़ों के करतबों का आनंद लिया। फूल डोल का जुलूस नगर के प्रमुख मार्गों से निकला जिनको निहारने के लिए श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित थे। यहां के अलग-अलग मोहल्लों में स्थित मंदिरों के व्यवस्थापकों द्वारा झाँकिया निकाली जाती है। निकाली गई झांकियों ने दर्शकों को बड़ी देर तक बांधे रखा। इन झाँकियों के साथ निकले अखाड़ों के करतबों ने पूरे रास्तों को जाम कर दिया। अखाड़ों में किशोर अवस्था के बच्चों ने विस्मयकारी करतबों को दिखाकर मन मोह लिया। नगर सुरक्षा समिति पुलिस एवं प्रशासन ने व्यवस्था को बनाए रखा।

नगर निगम आज विशिष्ट कार्य करने वाले 200 शिक्षकों का सम्मान करेगा

● शिक्षक दिवस पर रवींद्र नाट्य गृह में सम्मान का आयोजन होगा

इंदौर। शिक्षक दिवस पर नगर निगम द्वारा कल 5 सितंबर को उल्लेखनीय कार्य करने वाले शिक्षकों का सम्मान किया जाएगा। रवींद्र नाट्य गृह में होने वाले कार्यक्रम के लिए लगभग तैयारी हो चुकी हैं। शिक्षा विभाग और प्रशासन द्वारा सम्मानित होने वाले शिक्षकों की सूची आज नगर निगम को सौंपी गई। बताया जा रहा है कि इस वर्ष करीब 200 शिक्षकों का सम्मान किया जाना है।

जानकारी अनुसार नगर निगम द्वारा आमंत्रित होने वाले शिक्षक वे होंगे, जिनकी पढ़ाई की गुणवत्ता बेहतर होगी और पढ़ाई में बच्चे अच्छे प्रतिशत से पास हुए होंगे। सामाजिक न्याय विभाग के प्रभारी नंदकिशोर पहाड़िया ने बताया कि हर बार नगर निगम शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन करता है।इस बार 200 के लगभग शिक्षकों को सम्मानित करने का लक्ष्य रखा गया है। जिन शिक्षकों का सम्मान किया जाएगा, उनकी सूची स्कूल प्रशासन से मांगी गई है।

सूची मिलते ही चयनित शिक्षकों को सुबह 11 बजे रवीन्द्र नाट्यगृह में सम्मानित होने बुलाया जाएगा। सम्मान स्वरूप उन्हें मोमेंटो और प्रमाण पत्र दिया जाएगा। इसके साथ ही शिक्षकों को भोज भी कराएंगे। सम्मान के पीछे मूल उद्देश्य शिक्षकों को अपने कार्य के प्रति गंभीर होना रखा गया है। जो शिक्षक इस बार सम्मान से वंचित रह जाएंगे, उन्हें भी इस सम्मान से बेहतर कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

शिकायतों के चलते निगम आयुक्त ने पुरानी टेंडर प्रक्रिया रद्द की

रीजनल पार्क की टेंडर प्रक्रिया नए सिरे से किए जाने की तैयारी, पुरानी रद्द हुई

इंदौर। नगर निगम के लिए सफेद हाथी बन चुके रीजनल पार्क को किराए पर देने के टेंडर फिर से जारी किए जाने की तैयारी है। बताया जाता है कि शिकायतों के चलते और जमीन के जादूगरों के टेंडर प्रक्रिया में शामिल हो जाने के चलते पुरानी प्रक्रिया को रद्द कर दिया गया है।

बताया जा रहा है कि रीजनल पार्क को किराए पर देने के लिए अब नई डीपीआर बनाकर फिर से टेंडर प्रक्रिया शुरू की जाएगी। यह भी बताया जा रहा है कि निगम द्वारा जारी पुरानी टेंडर प्रक्रिया में कम किराए पर रीजनल पार्क को कांटेक्ट पर देने की तैयारी की गई। जानकारी अनुसार पश्चिम क्षेत्र का सबसे बड़ा रीजनल पार्क करीब 55 करोड़ रुपए खर्च कर आईडीए ने तैयार किया। पूर्ण रूप से साज-सज्जा के बाद आईडीए अधिकारियों ने इसे नगर निगम इंदौर के हवाले कर दिया।

कुछ समय तक हालत ठीक रहे लेकिन नगर निगम के लिए बाद में यह रीजनल पार्क सफेद हाथी बनता गया। वर्तमान में कुछ वर्षों से तो यह निगम के लिए बहुत ही खर्चीला साबित हो रहा है। कुछ समय पूर्व से किराए पर देने के लिए टेंडर प्रक्रिया की गई। यह प्रक्रिया लगभग पूर्ण हो चुकी थी तभी सामने आया कि इसे किराए पर लेने में दो भू-माफिया अर्थात जमीन के जादूगरों ने विशेष रुचि दिखाई है। सूत्र बताते हैं कि निचले दर्जे के निगम कर्मचारियों से सेटिंग कर उन्होंने टेंडर प्रक्रिया को अपने पक्ष में करने की पूरी तैयारी कर ली थी। तभी मामले की शिकायत निगम कमिश्नर को मिली और उन्होंने इस टेंडर प्रक्रिया को रद्द कर दिया है।

वाटर एक्टिविटी का उल्लेख होगा- रीजनल पार्क की खासियत यह है कि इसमें एक बड़ा तालाब भी स्थित है। इसलिए यहां पानी से संबंधित खेल कराए जा सकते हैं। सूत्र बताते हैं की पुरानी टेंडर प्रक्रिया में वाटर एक्टिविटी संबंधित कोई उल्लेख नहीं था, इसलिए भी टेंडर प्रक्रिया विवादों में रही। अब बताया जा रहा है कि नई टेंडर प्रक्रिया और डीपीआर में वाटर एक्टिविटी को विशेष रूप से स्थान दिया जाएगा।

यह भी सामने आया है कि नगर निगम ने पिछले दिनों यह टेंडर जारी किए थे और इसे कम दर 2 करोड़ 26 लाख रुपए सालाना पर देने की तैयारी थी। जिसको लेकर कई जनप्रतिनिधियों ने भी मामला उठाया था और जिस कंपनी को नगर निगम रीजनल पार्क मेंटेनेंस का ठेका देने जा रहा था। वह कंपनी राजेश मेहता और गुरजीत सिंह छाबड़ा (पिंटू छाबड़ा) की है। कई लोगों ने टेंडर प्रक्रिया को लेकर सवाल उठाए थे कि जिस कंपनी ने सबसे ज्यादा रेट रीजनल पार्क लेने के लिए भरे हैं उसने टेंडर में 8 बार संशोधन किए हैं।

एमआईसी को भी आपत्ति- महापौर परिषद के कई सदस्य पार्षद और भाजपा के कई नेताओं ने इस ठेके को लेकर सवाल उठाए थे। वहीं दूसरी ओर डीपीआर बनाने में भी गड़बड़ी हुई जिसके चलते जमीन के सौदागर इसमें सक्रिय हो गए और उन्होंने रिजनल पार्क का ठेका लेने की हर संभव कोशिश की, लेकिन निगम कमिश्नर शिवम वर्मा ने शिकायतें के चलते पुरानी डीपीआर और टेंडर निरस्त कर दिए और नए सिरे से डीपीआर बनाने के साथ साथ टेंडर जारी करने को कहा है।

पहले चरण में 8 लाख छात्रों का डाटा ऑनलाइन करने की तैयारी

● डीएवीवी छात्रों का रिकॉर्ड डिजिटल कर रही, 50 साल का रिकॉर्ड होगा

इंदौर। देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी अब अपने काम को डिजिटलाइज्ड करने की तैयारी कर रही है। यूनिवर्सिटी अब अपने छात्रों के सभी दस्तावेजों को डिजिटलाइज्ड करने की तैयारी में है। हालांकि, पूरा रिकॉर्ड डिजिटलाइज्ड होने में वर्षों का समय लगेगा। लेकिन, इसके बाद छात्रों को अपना रिकॉर्ड देखने में बहुत सुविधा होगी। ऑनलाइन और डिजिटलाइज्ड करने की प्रक्रिया कई चरणों में पूर्ण होगी। यूनिवर्सिटी के अधिकारियों के अनुसार रिकॉर्ड डिजिटलाइज्ड करने के लिए कई चरण में प्रक्रिया होगी। पहले चरण में करीब 8 लाख उन छात्रों का डाटा ऑनलाइन किया जाने की तैयारी है, जिन्होंने हाल ही में पास आउट किया है। इसके लिए आइटी कंपनी को काम सौंपा है। खास बात यह है कि संवेदनशील और गोपनीय रिकॉर्ड को बाहर न भेजकर कंपनी ने यूनिवर्सिटी के नालंदा परिसर में ही अस्थायी ऑफिस बना लिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद उच्च शिक्षा विभाग ने सभी यूनिवर्सिटी को रिकॉर्ड डिजिटल करने के निर्देश दिए थे। डीएवीवी ने पिछले साल यूजी अंतिम वर्ष के करीब 80 हजार छात्रों का डाटा ऑनलाइन किया। डिजिटलीकरण पूरा होने के बाद छात्रों को उनकी डिग्री और मार्कशीट डिजिलॉकर से तत्काल उपलब्ध होगी। काम के लिए आईटी कंपनी को दो साल का समय दिया है।

50 साल का डाटा बैंक होगा- इसका बड़ा लाभ सरकारी नौकरी की चाह रखने वालों को होगा। उन्हें अधिक सुविधा मिलेगी। उनकी अंकसूचियां और डिग्रियां डिजीलॉकर से लिंक होंगी। इसका फायदा होगा कि किसी भी सरकारी नौकरी, उच्च शिक्षा संस्थान या विदेश में एडमिशन के लिए छात्रों को तुरंत प्रमाणपत्र मिल सकेगा। बीए, बीकॉम, बीएससी, एमए, एमकॉम, एमएससी सहित सभी प्रमुख कोर्स का डाटा इसमें शामिल होगा।

बेटी के जरिए भी अनवर ने लव जिहाद के लिए फंडिंग करवाई

● नेपाल में भी नेटवर्क खड़ा किया, पूछताछ में कई राज खुले

इंदौर। गिरफ्तार कांग्रेस पार्षद अनवर कादरी उर्फ डकैत से पुलिस लव जिहाद के चर्चित मामले में पूछताछ कर रही है। पूछताछ के दौरान कई अहम राज खुल रहे। कादरी पुलिस रिमांड पर है और उससे रोज पूछताछ की जा रही है। जांच एजेंसियों ने उसकी बेटी आयशा से भी जेल में पूछताछ की तैयारी शुरू कर दी है। पुलिस की जांच में सामने आया कि कादरी फरारी के दौरान लगातार अपनी बेटी के जरिए फंडिंग करवाता रहा। फरारी के दौरान बेटी ने किया पेमेंट नेपाल भागने के बाद वहां होटल और अन्य खर्चों का भुगतान भी आयशा के अकाउंट और ई-वॉलेट से किया गया था। यही वजह है कि अदालत से अनुमति लेकर आयशा से जेल में पूछताछ का निर्णय लिया गया है। आयशा पहले से ही अपने पिता की मदद करने के आरोप में जेल में बंद है।

नेपाल में भी नेटवर्क- एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया ने बताया कि अनवर कादरी ने फरारी से पहले ही इंदौर में अपना पुराना मोबाइल छोड़ दिया था और नया फोन खरीदा था। उसने मीनाजुद्दीन नामक शख्स के जरिए नया सिम कार्ड लिया और फिर नेपाल भाग गया। नेपाल पहुंचकर उसने वही सिम तोड़ दी और अपने नाम से नया सिम कार्ड लेकर नेटवर्क तैयार कर लिया। अब पुलिस मीनाजुद्दीन की भूमिका की जांच कर रही है, क्योंकि माना जा रहा है कि इस पूरे मामले में उसकी अहम भूमिका है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, आने वाले दिनों में मीनाजुद्दीन से भी पूछताछ की जाएगी। पुलिस को शक है कि पूछताछ में और भी नाम उजागर हो सकते हैं। ऐसे में संभावना है कि अदालत से उसकी रिमांड अवधि और बढ़ाने की मांग की जाए।

8 सितंबर तक रिमांड बढ़ा - अनवर कादरी के कोर्ट में सरेंडर करने बाद कोर्ट ने 3 सितंबर तक का पुलिस रिमांड दिया था। बुधवार को पुलिस सुबह ही कादरी को कोर्ट लेकर पहुंची। बताया जा रहा है कि दस मिनट में वहां से साइन कराकर वापस भी ले गई। कोर्ट ने अनवर कादरी का 8 सितंबर तक का पुलिस रिमांड दिया है। पुलिस अनवर से पूछताछ करेगी, जिसके बाद उसे फिर से कोर्ट में पेश किया जाएगा। एसीपी रुबीना मिजवानी ने बताया कि अनवर से पूछताछ में ये बात पता चली है कि उसने एक मोबाइल तोड़कर नागपुर में फेंक दिया था। अब उस मोबाइल की तलाश में पुलिस की एक टीम जाएगी और मोबाइल तलाश करेगी।

अनवर पर 20 केस दर्ज - गौरतलब है कि अनवर कादरी पर इंदौर के अलग-अलग थानों जैसे आजाद नगर, संयोगितागंज, सदर बाजार और सराफा थाने में करीब 20 आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं। इससे पहले भी वह भारत विरोधी नारे लगाने के आरोप में गिरफ्तार हो चुका है। इंदौर कलेक्टर आशीष सिंह ने उस पर रासुका भी लगाई थी। बाद में कोर्ट ने उसे भगोड़ा घोषित कर दिया था। पुलिस उसकी संपत्तियों को कुर्क करने की तैयारी में भी जुटी हुई थी।

संपादकीय

जीएसटी में राहत पर आर्थिक खाई कायम

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इस बार 15 अगस्त को लाल किले से की गई घोषणा के अनुरूप जीएसटी परिषद ने देश में जीएसटी स्लैब घटाकर दो करने तथा जीवनावश्यक बहुत सारी वस्तुओं पर जीएसटी (गुड्स एंड सर्विस टैक्स) घटाने का ऐलान कर जनता को बड़ी राहत दी है। यह राहत खासकर समाज के उस मध्यम वर्ग को है, जो भाजपा का कोर वोटर भी है। इस लिहाज से मोदी सरकार ने अपने वोट बैंक को साधने का आर्थिक के साथ-साथ राजनीतिक उपक्रम भी किया है। जीएसटी परिषद की बैठक के बाद पत्रकारों से बात करते हुए केन्द्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन ने कहा कि देश में जीएसटी संरचना में सुधार का यह दूसरा चरण है। इससे जीएसटी के बोझ से जनता को काफी हद तक राहत मिलेगा। नई दरें 22 सितंबर यानी दिवाली से पहले लागू हो जाएंगी। जीएसटी परिषद की 56वीं बैठक में मंजूर नई दरों के तहत अब 12 फ़ीसदी और 28 फ़ीसदी के स्लैब को खत्म कर 5 फ़ीसदी और 18 फ़ीसदी कर दिया गया है। इसके अलावा 40 फीसदी का अलग विशेष स्लैब होगा, जो लग्जरी आयटम और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वस्तुओं जैसे शराब, गुटका, तम्बाकू आदि पर लगेगा। नई व्यवस्था के तहत अधिकांश वस्तुएं सस्ती होंगी। कुछ दवाओं को भी जीएसटी मुक्त किया गया है। साथ ही सीजीएसटी अधिनियम 2017 के तहत जीएसटी के पंजीकरण की सीमा में कोई बदलाव नहीं किया गया है। अधिकतर वस्तुओं पर जीएसटी के अलावा कंपनसेशन सेस भी लगाया जाता था। अब कंपनसेशन सेस को जीएसटी में मिला दिया गया है, जिससे अधिकांश वस्तुओं पर टैक्स का बोझ समान बना रहे। जानकारों के अनुसार सरकार ने सेस को समाप्त करने का काम जीएसटी के पूरे ढांचे को तार्किक बनाने के लिए किया है। नई दरों से जो राजस्व में 48 हज़ार करोड़ के नुकसान का अनुमान लगाया गया है, उसकी भरपाई करने की भी कोशिश की गई है विशेष दरें लागू करके। हालांकि जीएसटी घटने का एक परिणाम यह भी होगा कि सरकार का राजस्व घटेगा। कितना घटेगा, यह अंदाजा लगाना अभी मुश्किल है। लेकिन अर्थशास्त्रियों का मानना है कि जीएसटी घटने से देश में 2 लाख करोड़ रु. की खपत बढ़ेगी। यानी करों में राहत से लोगों की जेब में जो पैसा बचेगा, वह भी अंत में मार्केट में ही आएगा। बढ़ी हुई खपत काफी हद तक सरकार के राजस्व की कमी को पूरा करेगी। जीएसटी दरें कम करने से जहां राज्य सरकारों को इन कर में अपनी हिस्सेदारी घटने का डर रहा है, वहीं सभी राजनीतिक दलों में इस कर राहत का श्रेय लेने की होड़ भी शुरू हो गई है। गौरतलब है कि जीएसटी में यह राहत सभी राज्यों के वित्तमंत्रियों की सहमति से मिली है। प्रधानमंत्री ने 20 दिन पहले ही इस सुधार की पूर्व सूचना देकर लीड ले ली थी। अब विपक्षी कांग्रेस का भी कहना है कि वह तो 2017 से ही जीएसटी में सुधार की मांग कर रहे है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि कांग्रेस लंबे समय से जीएसटी 2.0 की वकालत करती रही है। ध्यान रहे कि जीएसटी के मूल प्रस्ताव में देश भर में करों के दो स्लैब रखने का विचार था, लेकिन बाद में मोदी सरकार ने इसे बढ़ाकर फोर स्लैब कर दिया। इस सुधार के बारे में सत्तापक्ष का कहना है कि मोदी सरकार ने सभी राज्यों का भरोसा जीतकर जीएसटी लागू किया है। बेशक, मोदी सरकार ने जीएसटी कम कर जनता को राहत दी है, लेकिन यह सवाल अभी भी अनुत्तरित है कि इससे देश में अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई कैसे कम होगी। इस खाई को पाटना सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती है।

नजरिया

चित्रा माली
सहायक प्रोफेसर, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता)

शिक्षा व्यवस्था पर सार्थक विमर्श की गुंजाइश

संयुक्त राष्ट्र संघ ने इसी बैठक की स्मृति में 5 अक्टूबर को 'विश्व शिक्षक दिवस' के रूप में मनाए जाने का निर्णय लिया। 1994 के बाद से प्रत्येक वर्ष 5 अक्टूबर को 'विश्व शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन कार्यरत शिक्षकों और सेवानिवृत्त शिक्षकों को उनके विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया जाता है। 1931 में चीन में शिक्षक दिवस की शुरूआत की गई थी और बाद में 1939 में कन्फ्यूशियस के जन्मदिन को शिक्षक दिवस घोषित किया गया था। लेकिन 1951 में इसे रद्द कर दिया गया था। चीन ने 1985 में 10 सितंबर को शिक्षक दिवस के तौर पर मनाया जाना घोषित किया लेकिन अधिकतर चीनी नागरिक चाहते थे कि कन्फ्यूशियस के जन्मदिन को ही शिक्षक दिवस के रूप में आयोजित किया जाए।

विश्व के 100 से अधिक देशों में शिक्षकों के सम्मान के लिए शिक्षक दिवस का आयोजन अलग-अलग तारीखों पर किया जाता है। कुछ देशों में इस दिन अवकाश रहता है वहीं कुछ देशों में अन्य दिवस की भांति कार्य कर इस दिवस को मनाया जाता है और कुछ देशों में शिक्षकों के सम्मान में कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। 1966 में यूनेस्को और अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के संयुक्त तत्वावधान में शिक्षकों की स्थिति जानने के लिए एक बैठक का आयोजन किया गया था जिसमें शिक्षकों की स्थिति में सुधार के लिए कई सुझाव भी आए थे। संयुक्त राष्ट्र संघ ने इसी बैठक की स्मृति में 5 अक्टूबर को 'विश्व शिक्षक दिवस' के रूप में मनाए जाने का निर्णय लिया। 1994 के बाद से प्रत्येक वर्ष 5 अक्टूबर को 'विश्व शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन कार्यरत शिक्षकों और सेवानिवृत्त शिक्षकों को उनके विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया जाता है। 1931 में चीन में शिक्षक दिवस की शुरूआत की गई थी और बाद में 1939 में कन्फ्यूशियस के जन्मदिन को शिक्षक दिवस घोषित किया गया था। लेकिन 1951 में इसे रद्द कर दिया गया था। चीन ने 1985 में 10 सितंबर को शिक्षक दिवस के तौर पर मनाया जाना घोषित किया लेकिन अधिकतर चीनी नागरिक चाहते थे कि कन्फ्यूशियस के जन्मदिन को ही शिक्षक दिवस के रूप में आयोजित किया जाए। इसी तरह रूस में 1965 से 1994 तक अक्टूबर महीने के पहले रविवार के दिन शिक्षक दिवस मनाया जाता था। संयुक्त राष्ट्र संघ ने जब साल 1994 से 'विश्व शिक्षक दिवस' 5 अक्टूबर को मनाना शुरू किया तब इसके साथ समन्वय स्थापित करने के लिए रूस में भी 5 अक्टूबर को ही शिक्षक दिवस मनाया जाने लगा। अर्जेंटीना में डोमिंगो फास्टिनो सार्मिएन्टो की मृत्यु के दिन 11 सितंबर को शिक्षक दिवस के तौर पर मनाया जाता है। हांग कॉन्ग में 12 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता था लेकिन हांग कांग का चीन में विलय होने के पश्चात 1997 से शिक्षक दिवस 10 सितंबर को मनाया जाने लगा। हंगरी में शिक्षक दिवस जून के पहले शनिवार को आयोजित किया जाता है। सिंगापुर में 1 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है और इस दिन स्कूल में अवकाश रहता है। शिक्षक दिवस समारोह एक दिन पूर्व आयोजित किया जाता है। ताइवान में शिक्षक दिवस 27 सितंबर को स्कूलों में मनाया जाता है और 28 सितंबर को अवकाश दिया जाता है।

फ़िलीपीन्स में शिक्षक दिवस आधिकारिक तौर पर 5 अक्टूबर को मनाया जाता है और इसके अतिरिक्त सितंबर व अक्टूबर के मध्य भी मनाया जाता है। कुछ कैथलिक स्कूलों में शिक्षक दिवस जनवरी 26 को भी मनाया जाता है। ओमान, सीरिया, मिश्र, लीबिया, कतर, बहरीन, संयुक्त अरब अमीरात,यमन, ट्यूनीशिया, जार्डन, सउदी अरब, अल्जीरिया, मोरक्को और अन्य इस्लामी देशों में 28 फरवरी को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत में शिक्षक दिवस 5 सितंबर को भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन के अवसर पर मनाया जाता है। शिक्षकों के आदर और सम्मान की परंपरा विश्व

के हर देश में देखी जा सकती है। मनुष्य की दो विशेषताएं उन्हें अन्य प्राणियों से अलग करती हैं। पहली विशेषता यह है कि मनुष्य अन्य मनुष्यों के साथ एक साझा जीवन,एक साझी संस्कृति में जीता है। सामान्य शब्दों में कहे तो मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वर्सली के अनुसार 'मनुष्य इसलिए मनुष्य है कि वह न सिर्फ जीवित लोगों बल्कि पिछली पीढ़ियों के लोगों और अजन्मे बच्चों (लोगों) की साझी संस्कृति का हिस्सा होता है'। मनुष्य की दूसरी विशेषता यह है कि मनुष्य का अधिकांश व्यवहार अधिगमित या सीखा हुआ होता है, न कि स्वाभाविक। मनुष्य समाजीकरण की प्रक्रिया के जरिए सामाजिक समूहों में जीना,उनके उत्पादक क्रियाकलापों और सांस्कृतिक जीवन में भाग लेना सीखता है। समाजीकरण की इस प्रक्रिया के जरिए संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संचार होता है इसमें शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समाजीकरण की प्रक्रिया के तीन मुख्य तत्व है। 1. समाजीकरण करने वाले 2. समाजीकरण पाने वाले (शिक्षा पाने वाले) 3. शिक्षा का संदेश या उसकी सामग्री। इनके अतिरिक्त दो और तत्वों को भी शामिल किया जाना चाहिए। इनमें से एक सामान्य सामाजिक संदर्भ है जिसमें यह प्रक्रिया हो रही है और दूसरा समाज में (सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक) शक्ति का वितरण है। ये सभी तत्व एक दूसरे के साथ अन्योन्य क्रिया करते हैं। सामाजिक संदर्भ और समाज में शक्ति का वितरण में इन दोनों तत्वों का उल्लेख विशेष रूप से किया गया है क्योंकि शिक्षा की सामग्री और उसके फलस्वरूप होने वाले संभावित सामाजिक परिवर्तन के निर्धारण में इनका अत्यंत महत्व है। शिक्षा का लक्ष्य चाहे वे अंतर्निहित हों या सार्वजनिक रूप से घोषित,उत्पादन प्रक्रिया और सामाजिक ढांचे की व्यावहारिक आवश्यता ये सभी शिक्षा की विषय वस्तु को निर्धारित करते हैं। शिक्षा की विषय वस्तु में औपचारिक पाठ्यक्रम के साथ 'छिपा' (हिडन) पाठ्यक्रम भी होता है। यह समाज में शक्ति के वितरण और उस सामाजिक संदर्भ पर निर्भर करता है जिसमें शिक्षा प्रणाली काम कर रही है। ये पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त किए जाने वाले शब्दों और इस विषय वस्तु को प्रबंध करने वाले शिक्षकों की मनोवृत्तियों और उनके मूल्यों को प्रभावित करते हैं। साथ ही उन तरीकों को भी प्रभावित करते हैं जिनसे शिक्षा की विषय वस्तु को उसे ग्रहण करने वाले (छात्रों) तक पहुंचाया जाता है। शिक्षा की समाजीकरण की प्रक्रिया का यह परिणाम है कि इसी प्रक्रिया से शिक्षक और छात्र दोनों ही निकलते हैं और उन्हीं सामाजिक संदर्भों को ग्रहण किए होते हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया के साथ साथ यदि शिक्षा का समाज और सामाजिक परिवर्तन में क्या संबंध है इसका विश्लेषण किया जाए तो दो मूल निष्कर्ष निकल कर आते हैं। पहला शिक्षा समाजीकरण के एजेंटों के सामूहिक व्यवहार से ऊपर नहीं उठ सकती है या कहें कि शिक्षा मौजूदा सामाजिक हितों से ऊपर नहीं उठ सकती। दूसरा समाज में शिक्षा के जरिए वांछित सामाजिक बदलाव वास्तविकता में उसी हद तक संभव है, जहां तक समाजीकरण के वाहक,शिक्षा समाजीकरण करने वाले उदात्त आशाओं और उपदेशों को छोड़ कर इस तरह का सामाजिक बदलाव लाने की स्वाभाविक इच्छा रखते हैं। इसलिए यह इस पर निर्भर करेगा कि यह उनके वास्तविक हितों के अनुरूप है या नहीं। साथ ही इसे छात्रों और उन तबकों के हितों और प्रेरणाओं के अनुरूप भी काम करना होता है, जिन तबकों से वे आते हैं। इन दोनों में जितनी अधिक अनुरूपता होगी,परिवर्तन की गति भी उतनी ही तेज होगी। प्राचीनकाल में शिक्षा कुछ ही वर्गों के लिए सीमित थी लेकिन आधुनिक युग में सभी वर्गों के लोगों के लिए शिक्षा तक पहुंच आसान हो गई हैं। इसी के फलस्वरूप अब मध्य और निम्न जातियों के लोग भी शिक्षण संस्थानों में शिक्षणकार्य और शिक्षा ग्रहण करने लगे हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में हुए शिक्षा के प्रसार का मतलब सिर्फ यही नहीं था कि इसके फलस्वरूप मध्य और निम्न सामाजिक स्तर के लोग शिक्षित मध्यम वर्ग, अर्थव्यवस्था और विशेषकर नौकरशाही में प्रवेश करने लगे। बल्कि इसका मतलब उनमें राजनीतिक चेतना और सामाजिक जागृति भी लाना था। शिक्षा का लक्ष्य अभी भी दूर है लेकिन कुछ हद तक इसे प्राप्त भी किया जा सका है। अकादमिक जगत के बौद्धिकों को यह स्वतंत्रता दी जाती रही है कि वे अपना पक्ष बिना किसी भय और पक्षपात के रखें जो एक बेहतर समाज के विकास और उत्थान के लिए आवश्यक है लेकिन आलोचना और असहमतियों का जो स्पेस पूर्व में था उसका लगातार ह्रास हो रहा है या कहें कि उसे लगातार खत्म किया जा रहा है। शिक्षा और शिक्षकों की सार्थकता ऐसे छात्रों के निर्माण करने में है जो तथ्यों को बिना जाने बिना समझे स्वीकार न करें और प्रश्न करें। प्रश्नों के माध्यम से ही सत्य के नजदीक पहुंचा जा सकता है इसलिए प्रश्न पूछने की संस्कृति को शिक्षकों द्वारा विकसित किया जाना चाहिए। समाज,शिक्षा व्यवस्था, शिक्षक और छात्र एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुए हैं। इस शिक्षक दिवस पर शिक्षण संस्थाओं, शिक्षकों की समस्याओं और शिक्षा व्यवस्था पर सार्थक विमर्श किया जाए। इस दिन की बहुत शुभकामनाएं और बधाई क्योंकि प्रत्येक क्षण हम किसी न किसी से कुछ न कुछ सीख रहे होते हैं।

शिक्षक दिवस विशेष

प्रमोद दीक्षित मलय
लेखक शैक्षिक संवाद मंच उ.प्र. के संस्थापक हैं।

रचनात्मकता को नवल आयाम देते नवाचारी शिक्षक

समाज जीवन में आजीविका के विविध साधन क्षेत्र दिखाई देते हैं। लेकिन इनमें से बहुत थोड़े से ही क्षेत्र हैं जहां कार्यरत व्यक्ति अपनी रचनात्मकता एवं नवाचार से कार्य को आकर्षक, सुगम सम्प्रेषणीय, सहज ग्राह्य एवं सौंदर्यपरक बना देते हैं; जहां नित नये निर्माण के अवसर होते हैं, जिनसे समाज जीवन को गति मिलती है। शिक्षण एक ऐसा ही क्षेत्र है जहां काम करते हुए व्यक्ति अपनी कल्पना, सोच-विचार और नवाचारी जीवन दृष्टि से रचनात्मकता को नवल आयाम देते हैं। शिक्षा ही वह क्षेत्र है जहां शिक्षक बंधी-बंधाई नीरस कार्य प्रणाली से बिलकुल अलग प्रकार की एक सरस, प्रेरक एवं आनंदमय कार्यपद्धति और व्यवस्था का हिस्सा बनते हैं, जहां अभिव्यक्ति एवं नवल सर्जना के लिए सहज अवसर सर्वदा उपलब्ध होते हैं। विद्यालय में शिक्षक व्यक्ति का निर्माण करते हैं, ऐसे व्यक्ति का निर्माण जिनका हृदय संवेदना, सहकार, सहानुभूति, न्याय, विश्वास, करुणा, प्रेम, अहिंसा और बंधु-भगिनी भाव से ओतप्रोत हो, जो क्षेत्र, पंथ, मजहब, भाषा, लिंग, वेश, रंग, नस्ल से परे परस्पर मानवीय सम्बंधों की आत्मीयता और मधुरता की ऊष्मा को अनुभव करते हुए तदनुरूप व्यवहार करते हैं। शिक्षण का क्षेत्र ही ऐसा एकमात्र क्षेत्र है जहां बच्चों के मन-मस्तिष्क के साथ हृदय और हाथ के समन्वयन के लिए कार्य किया जाता है। सहृदय व्यक्ति ही दुनिया को सुंदर और रहने लायक जगह बनाये रख सकते हैं। कह सकते हैं, शिक्षा विश्व को संवेदना, सौंदर्यबोध, सहकारिता, सहानुभूति एवं सामूहिकता के साथ जीने का पथ प्रदर्शित करती है। शिक्षा ही मनुष्य में मनुष्यता का भावारोपण कर देवत्व की ओर अग्रसर करती है। इसलिए शिक्षा क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति को साधारण नहीं समझा जा सकता क्योंकि वह समाज और देश-दुनिया का भविष्य गढ़ता-रचता है। वह बच्चों की आंखों में सुंदर सुरभित सुनहरे भविष्य के स्वप्नों के बीज बोता है। शिक्षक साधारण दिखता हुआ भी अपनी साधना, संघर्ष, सत्कर्म एवं सात्विकता से असाधारण कार्य सिद्ध कर लोक जीवन में समादृत होता है।

शिक्षक के कार्यक्षेत्र की चुनौतियां बिल्कुल

अलग प्रकार की होती हैं। वह निर्जीव मशीनों के साथ काम नहीं कर रहा होता बल्कि भावप्रवण संवेदनशील कोमलमना बच्चों के साथ हर पल जीता है, जो समाज की धरोहर हैं। बच्चों का कलरव विद्यालय प्रांगण में खुशियों की वर्षा करता है। परिवार, समाज एवं ग्राम का भविष्य कैसा होगा, यह शिक्षक की कक्षा और उसका व्यवहार देखकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। शिक्षक केवल पुस्तकें ही नहीं पढ़ते-पढ़ाते, बल्कि बच्चों के मन को भी पढ़ते हैं। वे बच्चों के हाथों में केवल लेखनी नहीं सौंपते अपितु एक लेखनी की सकारात्मक शक्ति एवं अपरिमित ऊर्जा से भी परिचय कराते हैं। शिक्षक के लिए विद्यालय एक कार्यालय भर नहीं होता बल्कि वे उसे बच्चों के ज्ञान निर्माण की सहज जगह बनाते हैं, जहां बच्चे निर्भय होकर अपने सपनों की फसल उगाना सीखते हैं। शिक्षक न केवल बच्चों के साथ बल्कि अभिभावकों और समुदाय के साथ भी एकात्मकता और परस्पर पूरकता का सेतु निर्मित करते हैं। समुदाय के लिए विद्यालय को शैक्षिक संसाधन के साथ ही एक साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में भी विकसित करते हैं जहां समुदाय अपनी भूमिका निर्वहन हेतु आवश्यक ऊर्जा और मार्गदर्शन प्राप्त करता है। शिक्षक बच्चों के माध्यम से लोक में रचे-बसे कला-कौशल, संस्कृति, साहित्य, इतिहास एवं परम्परागत ज्ञान-सम्पदा के संरक्षण का भी कार्य करता है। शिक्षक प्रतिदिन अनेकानेक चुनौतियों, बाधाओं और अवरोधों से जूझते हुए अपने नवाचार से कल्पना एवं रचनात्मकता को अभिव्यक्त करता है। शिक्षक दिवस के अवसर पर देश के लाखों शिक्षकों को नमन करते हुए कुछ नवाचारी प्रयासों को साझा करता हूं जो बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को गति देते हुए सहज बनाते हैं, जो समुदाय को प्रकृति के साथ जीने की राह दिखाते हैं। ये शिक्षा सारथी शिक्षक विद्यालय को बच्चों के लिए एक आनंदमय जगह बनाते हैं जहां बच्चे खुशी-खुशी सीखते हुए हर दिन कुछ नया रचते-बुनते हैं।

पिथौरागढ़, उत्तराखंड के शिक्षक एवं शैक्षिक दखल पत्रिका के सम्पादक महेशचंद्र पुनेठा 'दीवार पत्रिका' के माध्यम से विद्यार्थियों में लेखन कौशल के विकास हेतु एक अभियान के रूप में कार्य कर रहे हैं। 'दीवार पत्रिका अभियान' से देश के सैकड़ों शिक्षक जुड़कर अपने विद्यालयों में नियमित पाक्षिक एवं मासिक पत्रिकाएं बच्चों से बनवाकर प्रकाशित कर रहे हैं। महेशचंद्र पुनेठा झोला पुस्तकालय के अभिनव प्रयोग से पढ़ने-लिखने की संस्कृति विकसित कर रहे हैं। बांसवाड़ा, राजस्थान के शिक्षक विजयप्रकाश जैन सामुदायिक पुस्तकालय 'सोपड़ा नू घेर' के माध्यम से वनवासी बच्चों एवं समुदाय को स्वाध्याय से जोड़कर उनकी भाषा-बोली के संरक्षण पर काम कर रहे हैं। फतेहपुर, उत्तर प्रदेश की शिक्षिका आसिया फारूकी खंडहर और कूड़ा का डंपिंग प्लेस बन गये विद्यालय को आदर्श विद्यालय में परवर्तित कर राष्टपति पुरस्कार प्राप्त करती हैं। छत्तीसगढ़ में अबूझमाड़ के घने जंगल में वनवासी समुदाय को शिक्षा के महत्व से परिचित कराने हेतु देवेंद्र देवांगन द्वार-द्वार दस्तक देते हैं। पौढ़ी गढ़वाल, उत्तराखंड की इंदु पंवार बच्चों के बीच डायरी लेखन पर काम कर अभिव्यक्ति के अवसर बना रही हैं। तो उत्तर प्रदेश से ज्योति जैन (आगरा) गांव को प्लास्टिक मुक्त बनाने के अपने प्रयास के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ से सम्मानित हैं। बांदा के रामकिशोर पांडेय बाल संसद और मीना मंच के माध्यम से बच्चों में लोकतांत्रिकता एवं सामूहिकता का भाव भर रहे हैं। आभा त्रिपाठी (मऊ) बाडी शेमिंग मुद्दे पर जागरूकता का प्रसार कर रही है और हिना नाज (जालौन) कक्षा की दीवारों पर दर्जन भर एक्टिविटी ब्लैक बोर्ड बनाकर बच्चों को मन की बात लिखने का मंच उपलब्ध करा रही हैं। शाहजहांपुर के शिक्षक प्रदीप राजपूत बच्चों में वैज्ञानिक चेतना के विकास के लिए काम करते हुए कबाड़ और परिवेशीय वस्तुओं से विज्ञान के प्रयोग हेतु संसाधन जुटा लेते हैं। नवाचारी प्रेरक शिक्षकों के इस माणिक्य माल में असंख्य जगमगाते मोती आभा बिखेर रहे हैं। समुदाय शिक्षा के प्रति समर्पित शिक्षकों की पहचान कर न केवल सम्मानित करें, बल्कि साथ मिलकर विद्यालय को आनंदघर बनायें, शिक्षक दिवस का यही उद्देश्य है।

दृष्टिकोण

कल्पना मनोरमा
सेवानिवृत्त अध्यापिका, लेखिका

शिक्षक की बदलती भूमिका

शिक्षक दिवस हमें हर वर्ष इस बात की याद दिलाता है कि शिक्षा केवल पुस्तकों और परीक्षाओं तक सीमित नहीं है। समय बदलता है तो शिक्षा की ज़रूरतें भी बदलती हैं, और उसके साथ शिक्षक की भूमिका भी बदल जाती है। आज हम ऐसे दौर में खड़े हैं जहाँ सूचना, तकनीक और सामाजिक परिवर्तन की गति ने पारंपरिक गुरु-शिष्य जैसे पवित्र रिश्ते की परिभाषा ही बदल डाली है।

पुराने समय में शिक्षक को 'गुरु' कहा जाता था, जिसका अर्थ होता था, अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला वह व्यक्ति जो त्याग और तपस्या करते हुए जाग चुका है। गुरुकुल टूटे तो विद्यालय दीवारों में सिमट गईं। अब विद्या के आलय की दीवारें तोड़ी जा रही हैं। वह दिन कितना भयावह होगा, जब एक रोबोट क्लास अटेंड करता हुआ, आदमजात को पढ़ाएगा।

संवेदनाएं और मानवीय वृत्तियों के साथ जीता जागता हुआ व्यक्ति जो शिक्षण कर सकता है, क्या मशीनें संवेदनाओं का शिशु हृदय में प्रत्यारोपण कर सकेंगी?

इस तकनीकी सदी सबसे बड़ा औगुण, ये करुणा को सोखती जा रही है। मानवीय मंशाओं का ह्रास होता जा रहा है। जिस दौर में शिक्षक ही ज्ञानार्जन के प्रमुख स्रोत होते थे। विद्यार्थी को किताबें, तर्क, दर्शन और अनुभव कक्षाओं में ही ज्ञात हो जाता था। गुरु के मार्गदर्शन से न केवल भौतिक शिक्षा मिलती थी बल्कि संवेदनात्मक यथार्थ के बारे में विद्यार्थी ज्ञान अर्जित कर लेते थे। लेकिन आज इंटरनेट, गूगल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की दुनिया में लगातार छात्रों को धकेला जा रहा है। अच्छी बुरी सब जानकारी बच्चे बच्चे की हथेली पर है। अब बचपन में बूढ़ों तक का ज्ञान पाना कठिन नहीं है, बल्कि कठिनाई यह है कि कौन-सी जानकारी सही है, कौन-सी अधूरी और कौन-सी भ्रामक है? इसका ज्ञान बिल्कुल नहीं।

यही वह खतरनाक मोड़ है जहाँ से शिक्षक की भूमिका बदल जाती है। आधुनिक समय में शिक्षक को केवल जानकारी देने वाला ही नहीं, बल्कि मानवीय जीवंत विवेक और दिशा देने वाला मार्गदर्शक बनना पड़ेगा। मशीनों के बीच रहकर मानवता पढ़ानी होगी। विद्यार्थी को प्रश्न करना सिखाना होगा। इस भागते समय में धैर्य सिखाना होगा। तर्क विकसित करना और सत्य की पहचान करने वाली शिक्षा देनी होगी। यदि पहले शिक्षक ज्ञान का 'स्रोत' थे, तो अब उन्हें सागर बनना होगा।

माना कि आज विद्यार्थी का ध्यान नर्सरी से ज़्यादातर इस बात पर केंद्रित हो जाता है कि उसे कौन-सी डिग्री और कौन-सा पेशा हासिल करना है। शिक्षक यहां भी बड़ा मन और सतर्क दिमाग रखते हुए केवल करियर-गाइड न बनकर उन्हें जीवन-गाइड बनना होगा। बच्चे को यह सिखाना होगा कि सफलता केवल पेशे से नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व से भी आती है। और मानवीय मूल्यों को हासिल करते हुए भौतिक शिक्षा ग्रहण करना ही फलदायी होगा।

सच कहें तो शिक्षक के पाँव तले की ज़मीन हिल चुकी है। आज के शिक्षक तकनीक और मानवीयता के बीच संतुलन बनाए में असमर्थ होता जा रहा है। एक ओर आधुनिक सुविधाओं से लैस निजी विद्यालय हैं, तो दूसरी ओर साधनहीन सरकारी स्कूल। ऐसे में शिक्षक को न केवल पढ़ाने वाले की भूमिका निभानी है, बल्कि समाज में समान अवसर और न्याय की चेतना भी जगानी है। वह अपने विद्यार्थियों को यह समझा सकता है कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और परिवर्तन का औजार भी है। शिक्षक की बदलती भूमिका का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है, भावनात्मक मार्गदर्शन। आधुनिक जीवन की दौड़ में बच्चे और युवा मानसिक दबावों से गुजर रहे हैं। प्रतिस्पर्धा, अकेलापन, पारिवारिक टूटन और आभासी दुनिया ने उनकी संवेदनाओं को झकझोर दिया है। ऐसे में शिक्षक को केवल अकादमिक मार्गदर्शक नहीं, बल्कि एक संवेदनशील श्रोता और मित्र भी बनना होगा।

अंततः कहा जा सकता है कि शिक्षक की भूमिका समय के साथ बहुआयामी होती गई है। अब वह केवल कक्षा में खड़े होकर पाठ पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं रहा। शिक्षक समाज का निर्माता, विचारों का मंथनकर्ता और जीवन का सहयात्री होता है। गुरु ही सुख और दुख, तकनीक और मानवीय ढंग में क्रियान्वयन का सही उपयोग सिखाता है, संवेदनाओं को जगाता है और जीवन के मूल्य स्थापित करता है।

शिक्षक दिवस पर हमें यही समझना होगा कि शिक्षक की यह बदलती भूमिका केवल एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि पूरे समाज का सामूहिक संकल्प है। जब हम अपने शिक्षकों को सम्मान देते हैं तो हमें यह भी संकल्प लेना चाहिए कि शिक्षा को केवल साधन नहीं, जीवन की दिशा बनाने में महती योगदान है। शिक्षक ये सब समझते हुए बच्चों को व्यक्तिगत शिक्षा से, किताबों से और रिश्तों से जोड़ने का कार्य करना होगा। शिक्षण आम नौकरियों की तरह धन उगाही का साधन नहीं, अब शिक्षक को दीपक में पड़ी बाती की तरह जलना होता है। उजाला तभी द्विगुणित हो सकेगा।

आज के चकाचौंध भरे उजास में से शिक्षक को उन अंधेरों की तलाश करनी पड़ेगी जो व्यक्ति की रक्षा करते हैं, जो पालक की भूमिका निभाते हैं। तब कहीं डॉ. राधाकृष्णन के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे। हमारे समय की सबसे बड़ी आवश्यकता संवेदना और करुणा का संरक्षण करना है। अपने अतीत की मानवीय प्रविधियों पर विचार करना।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शिक्षक दिवस

रंगनाथ द्विवेदी
लेखक व्यंग्यकार हैं।

गुरु और शिष्य की परंपरा की शिक्षा

हमने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव के प्राथमिक विद्यालय से पूरी की है। उस समय जब हम अपने गांव के प्राथमिक विद्यालय में पढ़ा करते थे तब हमारे गांव के आस-पास दूर-दूर तक कही किसी भी कांवेंट स्कूल का कोई भी नामो निशान तक नही था।आज तो हालत यह है कि प्रतिवर्ष कान्वेंट स्कूल ऐसे खुल रहें है जैसे की इस तरह के स्कूल खोलने की कोई बहुत बड़ी प्रतिस्पर्धा चल रही हो।

कांवेंट की शिक्षा पद्धति ने हमारे देश के शिक्षक छात्र के मधुर और वात्सल्यपूर्ण संबंधों की एक पूरी समृद्ध परंपरा और उसकी संस्कृति का क्षरण किया है। हमारे समय में शिक्षक को भगवान से भी ऊंचा दर्जा हासिल था। लोग कबीर के इस दोहे से अपनी भावी पीढ़ी को शिक्षक के प्रति सम्मान करने के लिए प्रेरित करते थे कि 'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागे पाय,बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।' लेकिन आज की व्यापारिक शिक्षा इस आचरण के बिल्कुल विपरित है।

उस समय एक शिक्षक अपने छात्र को अपने से भी ज्यादा श्रेष्ठ बनाने के लिए अपना दिन रात एक कर देते थे तब अंतराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी तो सिखाई और पढ़ाई जाती थी लेकिन उस भाषा में 'गुड मॉर्निंग और गुड इवनिंग' जैसी अनिवार्यता नही थी। हम सभी अपने शिक्षक का सम्मानपूर्वक चरण स्पर्श करते थे। शिक्षक के उस वात्सल्य को आज की ये शिक्षा छू भी नही पा रही अब तो बस कांवेंट स्कूल के नाम पे हमारे छोटे-छोटे बच्चो की मासूम कंधो और उनकी पीठ पर भारी-भरकम बोझ सा लाद दिया जा रहा है और उस बोझ तले दबा बचपन अपनी मूल बाल्यावस्था की अंतस चेतना और उल्लास को पूरी तरह से जी नही पा रहा।

जबकि उन दिनों हमारी पीठ और हथेली हफ्ते में कम से कम एक दिन अवश्य अपने पीटे जाने की गवाही दिया करते थे। हफ्ते का वे दिन जब नजदीक आता तो उस दिन कोई ना कोई बहाना अपनी समस्त बुद्धि झोक कर अगर विद्यालय ना जाने का हम बना भी ले ते थे, तो उसकी भरपाई हमे दूसरे दिन करनी पड़ती थी। इतना ही नही हफ्ते के उस दिन जो भी छात्र शिक्षक के द्वारा पुछे गए सारे प्रश्नों का उत्तर ठीक-ठीक दे लेता था तो उस पूरे हफ्ते वह छात्र गांव के उन सभी पढ़ने वाले छात्रों के सामने से ऐसे चलता था कि मानो 'उसने कोई बहुत बड़ा तीर मार लिया हो।'

उस समय शिक्षकों के अपने कुछ प्रिय शब्द हुआ करते थे जिसका प्रयोग वे तब गाहे-बगाहे किया करते थे। जब वे किसी पाठ विशेष को पढ़ाते-पढ़ाते और समझाते-समझाते ऊब जाते और छात्र उनके पढ़ाए या समझाए को ना समझ पा रहा हो तब वे बहुत ही प्यार से एक-एक को अपने पास बुलाकर हमारे समय के सबसे चर्चित एंटीना अर्थात हमारी कान को थोड़ा सा उमेठते और कहते तुम एकदम से 'बेवकूफ उल्लू और गधे हो' इतनी बार समझाने पर भी तुम्हें हमारी बात समझ में नही आ रही ।

लेकिन शिक्षक के उस ऐंठे हुए कान ने जब आगे चलकर उनकी उस दी हुई शिक्षा का अनुश्रवण करना शुरु किया तो तब लगा कि अगर आज के समय में किसी कांवेंट स्कूल के टीचर ने इस तरह से अपने छात्र के कान को उमेठा होता तो आज की आधुनिक शिक्षा की तकनीकी के तहत हमारे वे सारे शिक्षक अपराधी कहे जाते क्योंकि आज की शिक्षा 'अंतराष्ट्रीय मनोविज्ञान की शिक्षा है जबकि हमारे समय की शिक्षा गुरु और शिष्य के परंपरा की शिक्षा थी।' मैं इस दुनिया की भीड़ में खुद को आदमी बनाए रख सका तो अपने गांव के उन्ही शिक्षको की बदौलत।

महात्मा गांधी : एक महान शिक्षक एवं शिक्षाविद्

मोहनदास जब मात्र 13 वर्ष के थे तभी उनका विवाह कस्तूर कपाड़िया से हुआ। विवाह के प्रारंभिक 6 वर्षों में वे मात्र 3 वर्ष तक ही एक दूसरे के साथ रहे। कस्तूर गांधी पढ़ी लिखी नहीं थी। मोहन दास पत्नी को शिक्षा देना चाहते थे मगर उन्हें इसके लिए कम ही अवसर मिले। युवावस्था में विषय इच्छा भी इसमें बाधक रही और उन्होंने इसकी स्वीकारोक्ति भी की। हाँ ! कस्तूर गांधी के लिए वे समय-समय पर प्रयास करते रहे। यह प्रयास न केवल भारत में अपितु अफ्रीका में भी जारी रहे। वे मुश्किल से साक्षर हो पायी थी। औपचारिक शिक्षा में चाहे सफलता नगण्य ही मिली मगर व्यवहारिक धरातल पर गांधीजी आजीवन कस्तूर बा के गुरु बने रहे।

शिक्षक दिवस विशेष

यशवंत चौहान

लेखक साहित्यकार हैं।

एक आदर्श एवं सम्पूर्ण व्यक्तित्व कैसा होना चाहिये? जब भी यह प्रश्न मन में आता है तो मानस पटल पर एक ही छबि उभरकर आती है वो है राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की। मानव जीवन की जितनी भी डायमेंशन हो सकती है वे सभी गांधीजी के जीवन दर्शन में अंतर्निहित है। आजादी का अनुगामी गांधी, बैरिस्टर गांधी, समाज सेवक गांधी, समाज सुधारक गांधी, स्वदेशी का पुरोधा गांधी, चरखे का प्रणेता गांधी, पत्रकार गांधी, लेखक गांधी, अनुवादक गांधी, चिकित्सक गांधी, संगीतज्ञ गांधी, दलित उद्धारक गांधी, उपवासक गांधी, पंचमहाव्रत के अनुपालक गांधी, गौ भक्त गांधी अगणित कार्यक्षेत्र थे इस युगदृष्टा के और अनंत उपमाएं हो सकती है इस महात्मा के लिए। एक शिक्षक एवं शिक्षाविद के रूप में भी गांधीजी ने न केवल भारत को अपितु सम्पूर्ण विश्व को नयी दृष्टि दी है।

मोहनदास जब मात्र 13 वर्ष के थे तभी उनका विवाह कस्तूर कपाड़िया से हुआ। विवाह के प्रारंभिक 6 वर्षों में वे मात्र 3 वर्ष तक ही एक दूसरे के साथ रहे। कस्तूर गांधी पढ़ी लिखी नहीं थी। मोहन दास पत्नी को शिक्षा देना चाहते थे मगर उन्हें इसके लिए कम ही अवसर मिले। युवावस्था में विषय इच्छा भी इसमें बाधक रही और उन्होंने इसकी स्वीकारोक्ति भी की। हाँ ! कस्तूर गांधी के लिए वे समय-समय पर प्रयास करते रहे। यह प्रयास न केवल भारत में अपितु अफ्रीका में भी जारी रहे। वे मुश्किल से साक्षर हो पायी थी। औपचारिक शिक्षा में चाहे सफलता नगण्य ही मिली मगर व्यवहारिक धरातल पर गांधीजी आजीवन कस्तूर बा के गुरु बने रहे।

जब वे ब्रिटेन में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे तब नारायण हेमचंद्र इंग्लैंड प्रवास पर थे। एक लेखक के रूप में गांधीजी उनसे परिचित थे। जल्दी ही वे एक दूसरे के संपर्क में आये और घनिष्ठ मित्र बन गये। उन्होंने गांधीजी से प्रश्न किया कि क्या तुम मुझे अंग्रेजी सिखाओगे। उन्होंने एक कुशल शिक्षक की भांति नारायण हेमचंद्र को अंग्रेजी सिखलाई।

सन् 1891 में गांधीजी ब्रिटेन से बैरिस्टर की डिग्री लेकर भारत आये तो उन्हें वकालात में आशातीत सफलता प्राप्त नहीं हुई। पुत्र हरिलाल को जो लगभग 4 वर्ष का था एवं भाई लक्ष्मीदास के बच्चों को घर पर ही पढ़ाना प्रारंभ किया। इस प्रयोजन में गांधीजी सफल भी रहे और उन्हें यह आभास हो गया कि वे अच्छे शिक्षक बन सकते हैं।

उधर वकालात में आशानुरूप सफलता नहीं मिली थी। मुश्किल से मणिबाई का केस मिला था मगर उस केस में एक बैरिस्टर के रूप में वे असफल ही रहे। इस असफलता के बाद उन्होंने शिक्षक बनने के बारे में ही सोचा था। अखबार में एक प्रतिष्ठित स्कूल में अंग्रेजी के शिक्षक पद हेतु विज्ञापन देखकर उन्होंने आवेदन किया। तनख्वाह 75 रुपये थी। गांधीजी ने आवेदन किया उन्हें साक्षात्कार के लिये भी बुलाया गया मगर बी.ए. न होने के कारण यह नौकरी उन्हें नहीं मिल पायी।

सच पूछा जाए तो सन् 1893 में ओबेदुल्ला एन्ड कंपनी के लिए अफ्रीका में केस लड़ने के प्रस्ताव ने गांधीजी की दशा और दिशा दोनों ही तय कर दी थी। प्रस्थान के समय गांधीजी का द्वितीय पुत्र मणिलाल शैशवावस्था में था। उन्होंने लगातार 21 वर्षों तक अफ्रीका की सेवा की। इस दौरान वे अल्प अवधि के लिए 2 बार भारत आये। वे गये तो वहाँ एक वर्ष के लिए ही थे मगर दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की दशा सुधारने एवं गिरमिट प्रथा बंद करवाने के लिए अनवरत संघर्ष करते रहे।

गांधीजी 1896 में अपना परिवार लेने के लिए भारत आये। जब 1897 में वे परिवार सहित डरबन पहुंचे तब उन्हें अपने दोनों पुत्रों हरिलाल और मणिलाल जो क्रमशः 9 व 5 वर्ष के तथा बहन का लड़का जो 10 वर्ष का था की शिक्षा की चिंता थी। उन्होंने दोनों को ही घर पर ही पढ़ाना उचित समझा। उन्होंने उस समय तीनों बच्चों को मातृभाषा गुजराती में शिक्षा दी। सदैव ही उनकी मान्यता रही कि बच्चों का बचपन माँ-बाप के साये में ही होना चाहिए। समुचित समय नहीं होने पर भी उन्होंने बच्चों के लिए शिक्षक की भूमिका भी निभायी। बच्चों को नियमित स्कूली शिक्षा एक कामचलाऊ स्कूल में ही मिल पायी जिसे गांधीजी ने स्वयं सत्याग्रही अभिभावकों के बच्चों के लिये खोला था।

1901 में वे भारत आये मगर पुनः 1902 में वे अफ्रीका लौट गये। यह दक्षिण अफ्रीका की अंतिम यात्रा थी। इस बार वे मगनलाल गांधी एवं अन्य युवकों के साथ रवाना हुए। लगभग एक वर्ष पश्चात परिवार को भी पुनः अफ्रीका बुला लिया। जान रस्किन की कृति 'अनटू दिस लास्ट' का गांधीजी पर गहरा असर रहा और उन्होंन फीनिक्स आश्रम की स्थापना की। फीनिक्स में आत्मनिर्भरता का वातावरण बना एवं उच्च नैतिकता का स्वर्णिम अध्याय प्रारम्भ हुआ। यकीनन गांधीजी के द्वारा प्राचीन भारतीय आश्रम व्यवस्था को चरितार्थ करने का यह प्रथम प्रयोग था जो अंतिम निवास (सेवाग्राम, वर्धा) तक जारी रहा। गांधीजी के दो बच्चों रामदास व देवदास का जन्म अफ्रीका में ही हुआ। चारों बच्चे यहीं पले बढ़े। उन्हें गांधीजी प्रतिदिन 1 घंटा साहित्यिक शिक्षा देते थे।

किसान कैलनबैक हरमन ने टाल्सटाय आश्रम हेतु गांधीजी को अपना फार्म दान कर दिया और उन्होंने इस आश्रम के लिए ही अपना सम्पूर्ण जीवन भी न्यौछावर कर दिया। सच पूछा जाए तो टॉलस्टॉय आश्रम शिक्षा का एक आदर्श केंद्र था जहाँ समग्र शिक्षा के दर्शन थे। साहित्यिक प्रशिक्षण, वृक्ष लगाना, बागवानी करना, खाना बनाना, साफ-सफाई करना यह सभी कुछ सभी आश्रमवासियों को करना होता था चाहे वह बच्चे हो, युवा हो अथवा बुजुर्ग। आश्रम में व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता था यहाँ बढ़ईगिरी, जूते बनाना आदि सभी कुछ सिखाया जाता था।

टॉलस्टॉय आश्रम में स्थापित विद्यालय में हिन्दी, तमिल, गुजराती, उर्दू सहित संस्कृत का भी प्राथमिक ज्ञान दिया जाता था। इसके अतिरिक्त इतिहास, भूगोल व गणित का भी ज्ञान दिया जाता था। गांधीजी स्वयं बच्चों को तमिल व अंग्रेजी पढ़ाते थे।

आश्रम का एक अनूठा प्रसंग यहां प्रासंगिक होगा। आश्रम में एक उद्दंड, झूठा और लड़ाकू छात्र भी था। एक समय पर वह बहुत हिंसक हो गया। गांधीजी ने अनेक बार उसे समझाने की कोशिश की मगर असफलता ही हाथ लगी। गांधीजी अपने छात्रों को कभी सजा नहीं देते मगर उसकी उद्दंडता पर पास रखे रूलर से उसको हाथ पर मारा। उसे मारते हुए गांधीजी के हाथ कांप रहे थे। उसने देखा कि हिंसक सजा देते वक्त गांधीजी स्वयं कितने पीड़ित थे। छात्र में परिवर्तन आया व उसके पश्चात उसने गांधीजी की कभी भी अवज्ञा नहीं की मगर गांधीजी जी शारीरिक दंड के सदैव विरोधी थे अतः सदैव ही उनके मन में इस घटना की ग्लानि रही।

21 वर्षों तक अफ्रीका की सेवा के बाद जब गांधीजी भारत आये तो उन्होंने आश्रम के प्रयोगों एवं अनुभवों को यहां भी अपनाया और सफलता प्राप्त की। सच पूछा जाए तो वे समग्र जीवन मे शिक्षक की भूमिका में रहे। फिनिक्स दल को पहले गुरुकुल कांगड़ी में स्वामी श्रद्धानंद का सान्निध्य प्राप्त हुआ और फिर शांतिनिकेतन में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का सान्निध्य मिला।

सन् 1915 में गांधीजी ने अहमदाबाद के बैरिस्टर रहे जीवनलाल देसाई की मदद से कोचरब में आश्रम की स्थापना की जिसका नाम सत्याग्रह आश्रम रखा गया। सन 1917 में प्लैग के कारण यह आश्रम कोचरब से अहमदाबाद में साबरमती के तट स्थापित किया गया जो साबरमती आश्रम के नाम से जाना जाता है। उच्च आदर्श जीवन के केंद्र रहे इस आश्रम में अनेक रचनात्मक कार्यों के साथ ही हरिजनोद्धार के लिए गांधीजी ने अनवरत प्रयास किये। करघा एवं चरखा न केवल स्वावलंबन के प्रतीक बने अपितु भारतीय स्वाभिमान के पर्याय भी बने।

जब वे चंपारण में नील विद्रोह का तानाबाना बुन रहे थे तभी उन्हें यह भी महसूस हुआ कि बिहार में उचित शिक्षा का प्रबंध आवश्यक है। उन्होंने सहयोगियों के साथ सलाह करने के बाद छह गांवों में प्राथमिक शाला खोलने का निर्णय लिया। श्रीमती अवंतिका बाई, आनंदी बाई, दुर्गा देसाई, मणिबेन पारिख एवं कस्तूर बाई ने इन विद्यालयों को आदर्श विद्यालय बनाने के लिए अथक प्रयास किया। उन्होंने इन विद्यालयों के लिये अनुदान भी जुटाया और समुदाय से सहयोग भी प्राप्त किया।

गांधीजी 1936 से जीवन के लगभग अंतिम दिनों तक सेवाग्राम आश्रम में रहे। जमनालाल बजाज ने इस आश्रम में अपनी भूमि दान की। वास्तव में इस आश्रम को लघुभारत कहा जा सकता है। शिक्षा, चिकित्सा, आध्यात्म, प्रार्थना, राष्ट्रीय आंदोलनों का केन्द्र, गौशाला, ग्रामोद्योग क्या कुछ नहीं था इस आश्रम में। 1933 में साबरमती आश्रम बंद होने के बाद लक्ष्मीबाई खरे वहाँ की लड़कियों को लेकर वर्धा आयी और विनोबाजी के मार्गदर्शन में एक कन्या आश्रम की स्थापना हुई। 22 ऑक्टोबर 1937 को एक बड़ी शिक्षा परिषद हुई जिसमे देश के स्वतंत्र विचारक एवं शिक्षा विशेषज्ञ भी शामिल हुए। काका कालेलकर एवं आचार्य कृपलानी का अहिंसा से साक्षात्कार इसी आश्रम में हुआ। गांधीजी ने इन्हें राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार का कार्य सौंपा।

गांधीजी ने 4 जनवरी 1948 को पुनः अपनी अभिलाषा को कुछ इस तरह व्यक्त किया - 'मेरी चले और कोई मुझे नौकरी पर रखे तो मैं शिक्षक होना ही पसंद करूँगा'। गांधीजी की शिक्षक की नौकरी करने की अभिलाषा अपूर्ण अवश्य रही मगर वे आजीवन शिक्षक बनकर रहे। सच पूछा जाए तो गांधीजी एक महान शिक्षक व शिक्षाविद थे जिन्होंने शिक्षा के हर पक्ष को चरितार्थ करके दिखलाया।

शिक्षक : ज्ञान, संस्कार और भविष्य का शिल्पकार

शिक्षक दिवस पर विशेष

ममता कुशवाहा

लेखक शिक्षक हैं।

भारत में शिक्षक दिवस हर वर्ष 5 सितंबर को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यह दिन केवल एक औपचारिक उत्सव नहीं, बल्कि ज्ञान और संस्कार के दाता, मानवता के सच्चे पथप्रदर्शक शिक्षकों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का प्रतीक है। इस दिन का चयन भारत के दूसरे राष्ट्रपति, महान दार्शनिक और अद्वितीय शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती के अवसर पर किया गया। उन्होंने अपने जीवन में शिक्षा को केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि सेवा का सर्वोच्च माध्यम माना। उनकी सोच थी कि यदि शिक्षक को सम्मान मिलेगा, तो शिक्षा का स्तर ऊँचा होगा और समाज में नैतिक मूल्यों की नींव मजबूत होगी। यही कारण है कि इस दिन देशभर में विद्यार्थी अपने शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं और गुरु-शिष्य संबंध की पवित्रता को पुनः स्थापित करते हैं। शिक्षक दिवस हमें यह याद दिलाता है कि एक शिक्षक केवल किताबों का ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि जीवन का सच्चा मार्गदर्शक होता है, जो हमें अच्छे-बुरे में अंतर करना सिखाता है।

आदर्श शिक्षक कैसा हो?- आदर्श शिक्षक वह है, जो केवल पाठ्यक्रम की सीमाओं में बंधा न हो, बल्कि जीवन के हर पहलू को समझाने का प्रयास करे। ऐसा शिक्षक अपने विद्यार्थियों को केवल रोजगार योग्य बनाने तक सीमित न रहे, बल्कि उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा भी दे। आदर्श शिक्षक में धैर्य, संवेदनशीलता और सच्चाई का भाव होना आवश्यक है। वह स्वयं अपने आचरण से विद्यार्थियों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करता है, क्योंकि शब्दों से अधिक असर कर्म का होता है। जिस शिक्षक के विचारों में उदारता हो, जो प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता को पहचानकर उसे प्रोत्साहित करे, वही आदर्श कहलाता है। वह केवल ज्ञान का प्रसार करने वाला नहीं होता, बल्कि विचारों की स्वतंत्रता का संवाहक भी होता है।

एक अच्छे शिक्षक के गुण केवल पढ़ाने तक सीमित नहीं होते, बल्कि उसके व्यक्तित्व की संपूर्णता में प्रकट होते हैं। सबसे पहला गुण है- सहानुभूति। वह प्रत्येक विद्यार्थी की भावनाओं को समझता है और उनकी समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनता है। दूसरा महत्वपूर्ण गुण है- स्पष्टता। शिक्षक को विषय की गहन समझ होनी चाहिए और उसे सरलतम रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता होनी चाहिए। तीसरा गुण है- निरंतर सीखने की प्रवृत्ति। समय बदलता है, तकनीक बदलती है, ज्ञान का दायरा बढ़ता है; ऐसे में एक अच्छा शिक्षक वही है, जो स्वयं भी सीखने को तत्पर रहे। इसके अतिरिक्त, एक शिक्षक का वाणी में मधुरता, आचरण में विनम्रता और दृष्टिकोण में सकारात्मकता होना भी अनिवार्य है। एक अच्छा शिक्षक केवल यह नहीं सिखाता कि जीवन में सफल कैसे हों, बल्कि यह भी सिखाता है कि असफलता को गरिमा के साथ कैसे स्वीकार किया जाए।

शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं है, यह जीवन जीने की कला है। और इस कला का सबसे बड़ा शिल्पकार शिक्षक ही होता है। शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि संस्कार भी देता है। वह विद्यार्थियों को यह सिखाता है कि सफलता का सही अर्थ क्या है, कैसे मेहनत करनी है, और किस प्रकार दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना है। यदि शिक्षक केवल अंक प्राप्ति को ही शिक्षा का लक्ष्य बना दे, तो समाज में केवल डिग्रीधारी लोग तो होंगे, लेकिन संवेदनशील इंसान नहीं। इसलिए शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके विद्यार्थी के हृदय में करुणा, दया और मानवीय मूल्यों की जड़ें गहरी हों। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में शिक्षा को गुरुकुल प्रणाली से जोड़ा गया, जहाँ गुरु अपने शिष्य को केवल विद्या ही नहीं, बल्कि जीवन के सभी आयाम सिखाता था।

भविष्य की पीढ़ी का स्वरूप आज के शिक्षक की सोच और प्रयास पर निर्भर करता है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों को केवल अंकों की दौड़ में धकेल देगा, तो आने वाला समाज प्रतिस्पर्धा में उलझा हुआ और तनावग्रस्त होगा। लेकिन यदि शिक्षक उन्हें मूल्यों, सहयोग और रचनात्मकता का महत्व समझाएगा, तो आने वाला समाज प्रगतिशील, संवेदनशील और नवाचारी होगा। शिक्षक बच्चों में जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति और साहस को जगाते हैं, जिससे वे नई खोजें करते हैं और मानवता को आगे बढ़ाते हैं। यही कारण है कि कहा जाता है- 'शिक्षक एक दीपक है, जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है।'

शिक्षक केवल एक पेशा नहीं, बल्कि एक पुनीत दायित्व है। यह वह शक्ति है, जो आने वाले कल की नींव तैयार करती है। शिक्षक दिवस मनाने का उद्देश्य केवल औपचारिकता निभाना नहीं है, बल्कि यह स्वीकार करना है कि शिक्षक समाज के निर्माण में सबसे बड़ी भूमिका निभाते हैं। एक अच्छा शिक्षक केवल ज्ञान का प्रसार नहीं करता, बल्कि जीवन का सही अर्थ सिखाता है। वह विद्यार्थियों में केवल विद्वता नहीं, बल्कि विवेक भी भरता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक अपने इस दायित्व को समझें और समाज उन्हें वह सम्मान दे, जिसके वे सच्चे हकदार हैं। जब शिक्षक आदर्श होंगे, तभी विद्यार्थी संस्कारी होंगे और जब विद्यार्थी संस्कारी होंगे, तभी समाज में वास्तविक विकास संभव होगा।

अपने दीपक स्वयं बनो की प्रेरणा है 'शिक्षक'

पूरी शिक्षा नीति को देखने पर ध्यान आता है कि उसके क्रियान्वयन व सफ़ल तरीके से उसे मूर्त रुप देने का अगर सीधा-सीधा किसी का नैतिक दायित्व बनता है तो वह शिक्षकों का ही है। वर्तमान के आधार को मजबूत करते हुए, भविष्य के आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को चरितार्थ करने व भारत को आगे बढ़ाने के सपनों को अपनी आँखों में भर कर निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा व भाव जागरण का आधार भी शिक्षक है। जिंदगी में उत्साह व भारत के प्रति उत्तरदायित्व से भरी हुई पीढ़ियों का निरंतर निर्माण करते रहना, यही शिक्षकत्व की पहचान है और यही शिक्षक दिवस की सार्थकता भी।

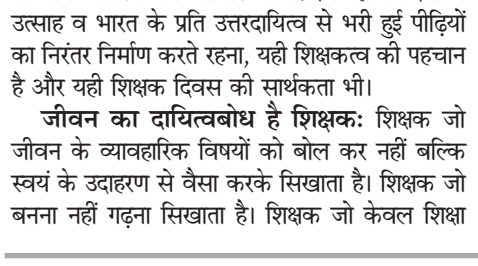

शिक्षक दिवस विशेष

डॉ. पवन सिंह

लेखक जेसी बोस विश्वविद्यालय फरीदाबाद में प्रोफेसर एवं मीडिया विभाग के अध्यक्ष हैं।

'दुनिया सुनना नहीं, देखना पसंद करती है कि आप क्या कर सकते हैं' और अपने अंदर छिपी इसी असीम शक्ति की पहचान करवाना, मैं कौन हूँ ओर क्या कुछ कर सकता हूँ इस भाव को परिणाम में बदलने के लिए प्रेरित करने की प्रेरणा है शिक्षक। आज शिक्षक दिवस है और हममें से कोई भी ऐसा नहीं, जिसके जीवन में इस शब्द का महत्व न हो। हम आज जो कुछ भी है या हमने जो कुछ भी सिखा या जाना है उसके पीछे किसी न किसी का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग व उसे सिखाने की भूमिका रही है। इसलिए आज का दिन प्रत्येक उस व्यक्तित्व के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का व उन सीखे हुए मूल्यों के आधार पर खुशहाल समाज निर्माण में अपनी भूमिका तय करने का दिन भी है। शिक्षक यानि गुरु शब्द का तो अर्थ ही अंधकार (अज्ञान) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले जाने वाला है। भारत में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का श्री गणेश भी हो चुका है। पूरी शिक्षा नीति को देखने पर ध्यान आता है कि उसके क्रियान्वयन व सफ़ल तरीके से उसे मूर्त रुप देने का अगर सीधा-सीधा किसी का नैतिक दायित्व बनता है तो वह शिक्षकों का ही है। वर्तमान के आधार को मजबूत करते हुए, भविष्य के आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को चरितार्थ करने व भारत को आगे बढ़ाने के सपनों को अपनी आँखों में भर कर निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा व भाव जागरण का आधार भी शिक्षक है। जिंदगी में उत्साह व भारत के प्रति उत्तरदायित्व से भरी हुई पीढ़ियों का निरंतर निर्माण करते रहना, यही शिक्षकत्व की पहचान है और यही शिक्षक दिवस की सार्थकता भी।

जीवन का दायित्वबोध है शिक्षक: शिक्षक जो जीवन के व्यावहारिक विषयों को बोल कर नहीं बल्कि स्वयं के उदाहरण से वैसा करके सिखाता है। शिक्षक जो बनना नहीं गढ़ना सिखाता है। शिक्षक जो केवल शिक्षा नहीं बल्कि विद्या सिखाता है। शिक्षक केवल सफ़ल होना नहीं, असफ़लता से भी रास्ता निकाल लेना सिखाता है। शिक्षक जो तर्क व कुतर्क के अंतर को समझाता है। शिक्षक जो केवल चलना नहीं, गिरकर उठना भी सिखाता है। शिक्षक जो भविष्य की चुनौतीयों के लिए तैयार होना सिखाता है। शिक्षक जिसे समाज संस्कार, नम्रता, सहानुभूति व समानुभूति की चलती फिरती पाठशाला मानता है। कहा जाता है कि एक शिक्षक का दिमाग देश में सबसे बेहतर होता हैज्एक बार सर्वपल्ली राधाकृष्णन के कुछ छात्रों और दोस्तों ने उनका जन्मदिवस मनाने की इच्छा ज़ाहिर कि इसके जवाब में डॉक्टर राधाकृष्णन ने कहा कि मेरा जन्मदिन अलग से मनाने की बजाय इसे शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए तो मुझे बहुत गर्व होगा। इसके बाद से ही पूरे भारत में 5 सितंबर का दिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी कारण इस दिन इस महान शिक्षाविद को हम सब याद भी करते हैं।

एक नज़र डॉ. राधाकृष्णन सर्वपल्ली: डॉ. राधाकृष्णन ने 12 साल की उम्र में ही बाइबिल और स्वामी विवेकानंद के दर्शन का अध्ययन कर लिया था। उन्होंने दर्शन शास्त्र से एम.ए. किया और 1916 में मद्रास रेजीडेंसी कॉलेज में सहायक अध्यापक के तौर पर उनकी नियुक्ति हुई। उन्होंने 40 वर्षों तक शिक्षक के रूप में काम किया। वह 1931 से 1936 तक आंध्र विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। इसके बाद 1936 से 1952 तक ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर रहे और 1939 से 1948 तक वह काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर आसीन रहे। उन्होंने भारतीय संस्कृति का गहन अध्ययन किया। साल 1952 में उन्हें भारत का प्रथम उपराष्ट्रपति बनाया गया और भारत के द्वितीय राष्ट्रपति

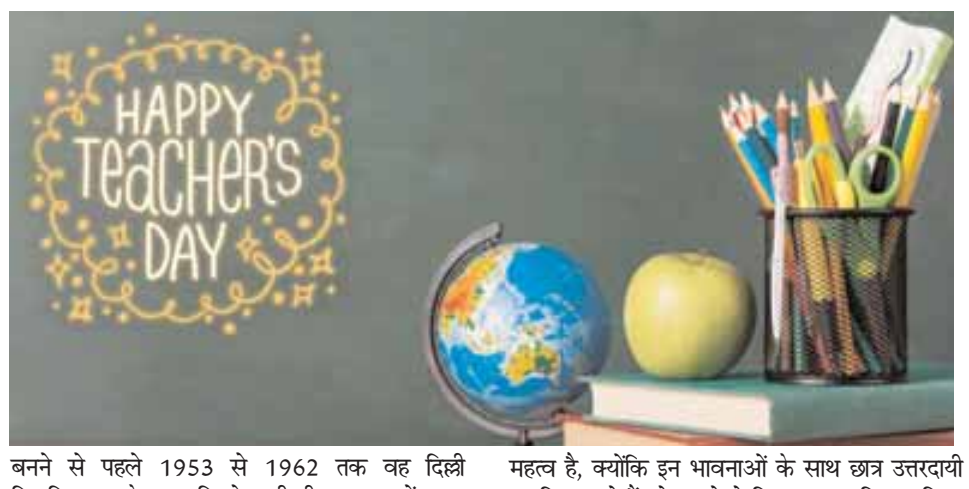

बनने से पहले 1953 से 1962 तक वह दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। इसी बीच 1954 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने उन्हें 'भारत रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया। डॉ. राधाकृष्णन को ब्रिटिश शासनकाल में 'सर' की उपाधि भी दी गई थी। इसके अलावा 1961 में इन्हें जर्मनी के पुस्तक प्रकाशन द्वारा 'विश्व शांति पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया था। अतः हम कह सकते है कि वे जीवनभर अपने आप को शिक्षक मानते रहे और उन्होंने अपना जन्मदिवस भी इसी परिपाटी का पालन करने वाले शिक्षकों के लिए समर्पित कर दिया।

शिक्षा को मिशन का रूप देना होगा: डॉ. राधाकृष्णन अक्सर कहा करते थे, शिक्षा का मतलब सिर्फ जानकारी देना ही नहीं है। जानकारी का अपना महत्व है लेकिन बौद्धिक झुकाव और लोकतांत्रिक भावना का भी महत्व है, क्योंकि इन भावनाओं के साथ छात्र उत्तरदायी नागरिक बनते हैं। वे मानते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होगा, तब तक शिक्षा को मिशन का रूप नहीं मिल पाएगा। आज शिक्षा को मिशन बनाना होगा। शिक्षा की पहुँच इस देश के अंतिम घर के अंतिम व्यक्ति तक होनी चाहिए। इसके लिए केवल शिक्षकों को ही नहीं समाज को भी अपनी भूमिका निभानी होगी। प्रत्येक वो व्यक्ति जो अपने आपको शिक्षा देने में सक्षम समझता है उसे आगे आना होगा। अपने यहाँ अधिक से अधिक मोहल्ले एवं ग्रामीण शिक्षा केंद्र संचालित करने की चुनौती को उसे स्वीकार करना होगा। ताकि समाज का कोई भी वर्ग या स्थान शिक्षा से वंचित न रहे। उसे प्रतिदिन या सप्ताह में कुछ समय शिक्षा जैसे पुनीत कार्य के लिए लगाना होगा। इस कार्य के लिए उसे अपने जैसे बहुत से लोगों को खड़ा करना होगा व इस अभियान में सहयोगी बनने के लिए उनका भाव जागृत करना होगा।

शिक्षा स्व-रोज़गार के लिए: शिक्षक के नाते अब हमें शिक्षा को क्लास रूम से बाहर ले जाने की पहल करनी होगी यानि उसकी व्यावहारिकता पर ज्यादा ध्यान देना होगा। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को अपनी प्राथमिकता में लाना होगा। ताकि विद्यार्थी का कौशल उसके जीवन का हिस्सा बन सके और आगे उसे रोज़गार से जोड़ा जा सके। शिक्षा को फ़ॉर्मल एजुकेशन के साथ-साथ अनौपचारिक यानी इन-फ़ॉर्मल एजुकेशन बनाने की ओर भी अब हमें अपने प्रयासों को अधिक गति से बढ़ाने की आवश्यकता है। कोविड ने हमें आज इस विषय की ओर देखने की दृष्टि भी दी है ताकि भविष्य में किसी विकट परिस्थिति व आर्थिक संकट के समय स्व-रोज़गार के आधार पर हम आत्मनिर्भरता की भावना के साथ उस परिस्थिति का सामना कर सके।

सच्ची अभिव्यक्ति व प्रेरक शक्ति का दिन: तो आईये, आज शिक्षक दिवस के दिन इन सभी बातों का पुनः स्मरण कर, अपने हौंसलों की उड़ान को ओर बढ़ाते है। शिक्षक के दायित्वबोध को और अधिक संकल्प के साथ निभाते है। डॉ. राधाकृष्णन सर्वपल्ली के जीवन के विभिन्न प्रेरक पहलूओं से सीख ले,प्रत्येक व्यक्ति तक शिक्षा को ले जाने के अपने प्रयास को गति देते है। मैं से प्रारंभ कर इस शिक्षा रुपी अलख को लाखों-लाखों का सपना बनाते हैं। वास्तव में शिक्षक होने के नाते आज शिक्षक दिवस के दिन डॉ. राधाकृष्णन सर्वपल्ली के प्रति व अपने आदर्श प्रेरणादायी शिक्षकों के प्रति यही हमारी सच्ची अभिव्यक्ति व प्रेरक शक्ति होगी। यही सामूहिक संकल्पित शक्ति ही हमें 2047 के विकसित भारत की ओर अग्रसर भी करेगी तथा हमारा मार्ग प्रशस्त भी करेगी।

प्रदेश सरकार स्वास्थ्य सेवाओं और चिकित्सा शिक्षा के सशक्तीकरण के लिए निरंतर उठा रही है ठोस एवं परिणाममूलक कदम : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

मेडिकल कॉलेज छिंदवाड़ा और सागर में वर्तमान शैक्षणिक सत्र के लिए 75 नई एमबीबीएस सीट की एनएमसी ने दी स्वीकृति

भोपाल । उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार स्वास्थ्य सेवाओं और चिकित्सा शिक्षा के सशक्तीकरण के लिए निरंतर ठोस एवं परिणाममूलक कदम उठा रही है। प्रदेशवासियों को बेहतर और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराने के साथ ही युवाओं को चिकित्सक बनने के अधिक अवसर प्रदान करना सरकार की प्राथमिकताओं में सम्मिलित है। इसी दिशा में निरंतर प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि वर्तमान शैक्षणिक सत्र में श्योपुर एवं सिंगरौली मेडिकल कॉलेज को 100-100 नई एमबीबीएस सीटें प्राप्त हुई हैं। इसके साथ ही एनएमसी से छिंदवाड़ा मेडिकल कॉलेज में 100 से बढ़कर 150 सीटें और बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज, सागर की क्षमता को 125 से बढ़ाकर 150 सीटें करने की अनुमति मिल गई है। इस प्रकार प्रदेश में वर्तमान सत्र में कुल 275 मेडिकल सीटों की वृद्धि हुई है। इस वृद्धि से न केवल प्रदेश में अधिक संख्या में योग्य चिकित्सक तैयार होंगे बल्कि ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता भी सुदृढ़ होगी।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मेडिकल कॉलेजों के शिक्षण स्टाफ से अपेक्षा व्यक्त की कि वे पूर्ण निष्ठा और समर्पण भाव से विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करें, ताकि प्रदेश में तैयार होने वाले भावी चिकित्सक समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन उत्कृष्ट रूप से कर सकें। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए प्रशासनिक तंत्र एवं समस्त सहयोगी संस्थाओं को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं और चिकित्सा शिक्षा के विकास की दिशा में सशक्त कदम है।

बैंक ऑफ बड़ौदा रिटायर्ड ऑफिसर्स एसो. का अभिनंदन समारोह संपन्न

भोपाल। बैंक ऑफ़ बड़ौदा रिटायर्ड ऑफिसर्स एसोसिएशन भोपाल अंचल की साधारण सभा एवं अभिनंदन समारोह का आयोजन बैंक के पूर्व महाप्रबंधक तथा एसोसिएशन के राष्ट्रीय सहायक महासचिव डॉक्टर जवाहर कर्णावट की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। समारोह के

मुख्य अतिथि रायपुर अंचल के महाप्रबंधक दिवाकर सिंह रहे। प्रारंभ में संगठन के अध्यक्ष गिरीश आचार्य ने अतिथियों का स्वागत किया। महासचिव श्री सत्यनारायण पालीवाल ने मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ प्रदेश की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर 75 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले तीन वरिष्ठ सदस्य एच. एस. कानेटकर, वीरेंद्र कुमार सिंह तथा जी. नरैया का अभिनंदन किया गया ।समारोह को पदाधिकारी आर.के. मंडल, ए. पी. सिंह तथा के. सी.माहेश्वरी ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन एस. एंटोनी सामी ने किया।

मलयाली समाज कल ओणम मनाएगा

भोपाल। यूनाइटेड मलयाली एसोसिएशन (यूएमए)ओणम 2025, जो मलयाली समुदाय का सबसे प्रतिष्ठित पर्व है, का भव्य उत्सव आयोजित करेगा। यह आयोजन 6 सितंबर 2025 को शाम 6:30 बजे से भोपाल के प्रतिष्ठित कैम्पियन स्कूल सभागार में होगा। यह कार्यक्रम एक शानदार संध्या का वादा करता है, जिसमें सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, पारंपरिक अनुष्ठान और एकता, समृद्धि एवं उत्सव की भावना परिलक्षित होगी, जो ओणम का असली स्वरूप है।

ओणम, केरल का वार्षिक फसल उत्सव, अत्यंत उल्लास के साथ राजा महाबली की स्मृति में मनाया जाता है, जिनका शासनकाल समृद्धि, समानता और सौहार्द्र का स्वर्ण युग माना जाता है। पौराणिक महत्व से परे, ओणम वसंत ऋतु और भरपूर फसल के आगमन का प्रतीक भी है, जब परिवार और समुदाय हर्षोल्लास के साथ एकत्र होकर जश्न मनाते हैं।

यूनाइटेड मलयाली एसोसिएशन के अध्यक्ष ओ. डी. जोसेफ ने अपने संदेश में कहा कि,ओणम केवल एक त्योहार नहीं है; यह हमारी साझा विरासत, मूल्यों और एकजुटता की भावना का उत्सव है।

इस अवसर पर पल्लुरुथी, जो मलयालम फिल्म उद्योग के लोकप्रिय सितारे हैं। उनका विशेष प्रदर्शन सभी आयु वर्ग के दर्शकों को आनंदित करेगा।

ऑरो मंदिर में गीता वार्ता माला रविवार को

भोपाल। श्री अरविन्द सोसायटी भोपाल मासिक गीता वार्ता-माला का शुभारम्भ कर रही है। गीता वार्ता माला का पहला सत्र 7 सितंबर रविवार को शाम 5.30 बजे ऑरो मंदिर, तुलसी नगर में आयोजित किया गया है। इस सत्र में गीता मर्मज्ञ सेवानिवृत्त आईएएस ओमप्रकाश श्रीवास्तव भगवद्गीता के दार्शनिक एवं व्यावहारिक आयामों पर व्याख्यान देंगे। इस वार्ता-माला के प्रथम सत्र में वे 'योगः कर्मसु कौशलम्' शीर्षक के अंतर्गत गीता के द्वितीय अध्याय पर अपनी गहन विवेचना प्रस्तुत करेंगे। गीता मर्मज्ञ ओपी श्रीवास्तव ने बीते चार दशकों से भगवद्गीता के अध्ययन, अध्यापन तथा प्रचार-प्रसार में अपना जीवन समर्पित किया है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने एम्स भोपाल की व्यवस्थाओं का किया अवलोकन

प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने विभिन्न विषयों पर की चर्चा

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने एम्स भोपाल का दौरा कर वहाँ की चिकित्सा व्यवस्थाओं एवं अधोसंरचना का अवलोकन किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने एम्स भोपाल द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सहज एवं सुलभ बनाने के लिए किए जा रहे विभिन्न नवाचारों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए एम्स जैसे अग्रणी संस्थानों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) माधवानंद ने एम्स की वर्तमान स्वास्थ्य सेवाओं तथा भविष्य की योजनाओं की विस्तार से जानकारी प्रदान की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विश्वास व्यक्त किया कि एम्स भोपाल के अनुभव एवं नवाचार प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक प्रभावी व गुणवत्तापूर्ण बनाने में सहायक सिद्ध होंगे। इस दौरान प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को नई तकनीक एवं आधुनिक संसाधनों से सशक्त करने, अनुसंधान आधारित चिकित्सा सेवाओं को बढ़ावा देने तथा जनसामान्य को उच्च स्तरीय स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने संबंधी विभिन्न आयामों पर वृहद चर्चा हुई। इस दौरान उप संचालक प्रशासन श्री संदेश जैन सहित एम्स के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

नगरपालिका ने विजर्सन घाटों पर शुरू की साफ-सफाई, पॉइंट पर तैनात रहेगा बल

बैतूल में तीन स्थानों पर होगा गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन

बैतूल। जिले में गणेश प्रतिमा विसर्जन 6 सितंबर से शुरू होगा, 7 सितंबर की शाम तक चलेगा। जिसके लिए नगरपालिका ने तैयारियां शुरू कर दी है। इस बार शहर में केवल तीन स्थानों पर ही गणेश प्रतिमा का विसर्जन किया जाएगा। माचना नदी स्थित दामा दैयत घाट, करबला घाट और माचना एनीकट पर ही प्रतिमाओं के विसर्जन का स्थान निश्चित किया गया है। वहीं हमलापुर की माचना नदी पर गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन पर प्रतिबंध लगा दिया है। यहां पर नपा द्वारा विसर्जन के लिए कोई व्यवस्था नहीं की जाएगी। दरअसल विगत दिनों हुई शांति समिति की बैठक में तीन स्थानों का चयन किया है। यहां पर विसर्जन के लिए नपा द्वारा साफ-सफाई की व्यवस्था की जा रही है। इसके अलावा प्रकाश व्यवस्था सहित प्रतिमाओं के विसर्जन के लिए कुंड बने है। जहां श्रद्धालु गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन कर सकेगे। नपा सीएमओ सतीश मटसेनिया ने बताया कि विसर्जन स्थलों पर नपा द्वारा व्यवस्था की जा रही है। यहां पर साफ-सफाई शुरू कर दी है, जो विसर्जन के एक दिन पहले तक की जाएगी। बड़ी प्रतिमाओं के लिए क्रेन भी रखी जा सकती है। माचना नदी के करबला घाट और दामा दैयत घाट पर नपा ने छोटी प्रतिमाओं के विसर्जन के लिए अस्थायी कुंड बनाए है। यहां पर विसर्जन के लिए सफाई कर दी है। इन कुंडों में पानी भरकर छोटी प्रतिमाओं को विसर्जित किया जाएगा।

शहर में विराजमान 300 से अधिक प्रतिमाए- शहर में जगह-जगह गणेश प्रतिमाएं स्थापित की गई है। एक अनुमान के मुताबिक 300 से अधिक स्थानों और घरों में गणेश प्रतिमाएं विराजमान है। जिसका विसर्जन 6 एवं 7 सितंबर को किया जायेगा। विसर्जन का सिलसिला 6 सिंतबर से शुरू होगा। जिसके लिए नगरपालिका, यातायात और पुलिस ने तैयारियां शुरू कर दी है। नपा ने जहां विसर्जन स्थलों पर व्यवस्थाएं बनाने का कार्य शुरू कर दिया है, वहीं यातायात पुलिस भी प्रतिवर्षानुसार पाइंट लगायेगी। साथ ही सुरक्षा व्यवस्था की तैयारी की जा रही है। सभी घाटों पर पार्किंग और आने-जाने के लिए रास्ते रखे जाने का प्रयास किया जा रहा है। वहीं इस बार हमलापुर माचना नदी पर प्रतिमाओं के विसर्जन को प्रतिबंधित किया है।

पाइंटों पर तैनात रहेगा बल- गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन के दौरान शहर में कई बड़े चल समारोह निकलते है। जिसके लिए पुलिस ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये है। हालांकि चल समारोह का रूट अभी तय नहीं हुआ है। लेकिन पिछले वर्षों की तरह प्रतिमाओं के विसर्जन स्थल जाने वाले मार्गो पर सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस बल तैनात रहेगा। इसके अलावा यातायात बाधित न हो, इसका भी पूरा प्लान यातायात विभाग ने तैयार कर रहा है। बताया जा रहा है कि गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन के लिए गणेश मंडलों के साथ-साथ प्रशासन की भी तैयारी चल रही है। जरूरत पडने पर प्रतिमा स्थल जाने वाले रास्तों पर यातायात को डायवर्ट किया जाएगा। नदियों पर विसर्जन की व्यवस्था के साथ सुरक्षा के लिए तैराक और होमगार्ड की टीम भी तैनात रहेगी। इसके लिए पुलिस-प्रशासन के अफसर निरीक्षण कर चुके हैं।

आज अधिकांश जगहों पर होगा हवन-पूजन और भंडारा

शहर में आज अधिकांश जगहों पर गणेश पंडालों में हवन-पूजन और भंडारे का आयोजन किया गया। इसके अलावा घरों में भी हवन-पूजन होगे। बता दे कि 27 अगस्त से शुरू हुए गणेशोत्सव का समापन 6 सितंबर को अनंत चतुर्थी पर होगा। उससे पहले सार्वजनिक गणेश पंडालों में हवन-पूजन और भंडारे का आयोजन होता है। जिसके लिए गणेश पंडालों के सदस्यों ने तैयारी शुरू कर दी है। गणेश पंडाल के सदस्य मुकेश, नंदकिशोर, संतोष, अनिल ने बताया कि आज शुक्रवार को पंडाल में हवन-पूजन के पश्चात भंडारा प्रसादी का वितरण किया जायेगा। इसके बाद 6 सितंबर को गणेश प्रतिमा का विसर्जन किया जायेगा। समिति ने इसके लिए तैयारी शुरू कर दी है।

इनका कहना है -

गणेश प्रतिमाओं के विजर्सन के लिए माचना नदी स्थित दामा दैयत घाट, करबला घाट और माचना एनीकट पर व्यवस्था की गई है। इस बार हमलापुर माचना नदी पर प्रतिमा विसर्जन नहीं किया जा सकेगा। प्रतिमाओं के विसर्जन को लेकर साफ-सफाई, प्रकाश, कुंड सहित अन्य व्यवस्थाएं की जा रही है।

- सतीश मटसेनिया, सीएमओ, नगरपालिका बैतूल

प्रतिमाओं के विसर्जन स्थल जाने वाले मार्गो पर फिक्स पाइंट बनाये गये है, जहां कर्मचारियों को तैनात किया जायेगा। इसके अलावा पेट्रोलिंग मोबाइल भी रहेगा। दिन और रात दोनों समय बल तैनात रहेगा।

- गजेन्द्र केन, यातायात प्रभारी, बैतूल

एनीमिया मुक्त भारत तथा राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम के अंतर्गत कन्वर्जेंस बैठक का आयोजन

बैतूल। एनीमिया मुक्त भारत तथा राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम के अंतर्गत एएनएम प्रशिक्षण केन्द्र टिकारी बैतूल में शुक्रवार को स्वास्थ्य विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग एवं शिक्षा विभाग की कन्वर्जेंस बैठक का आयोजन किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि को राज्य के चिन्हित 51 जिले जिसमें बैतूल भी शामिल है के सभी स्कूलों एवं आंगनवाड़ी केन्द्रों में 23 सितम्बर को राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस अभियान आयोजित होगा। इस दौरान छूटे हुए बच्चों के लिए मॉप-अप दिवस 26 सितम्बर शुक्रवार को कृमिनाशक किया जाएगा। अभियान के

अंतर्गत शासकीय, निजी, केन्द्र शासित, आदिवासी आश्रम शालाओं, स्नातक महाविद्यालयों, तकनीकी शिक्षा केन्द्रों, मदरसों, आंगनबाड़ी केन्द्रों तथा किशोर न्याय अधिनियम 2015 अंतर्गत संचालक चाइल्ड केयर इंस्टीट्यूट में 1 से 19 वर्षीय समस्त बच्चों एवं आंगनवाड़ी केन्द्रों में 20 से 49 वर्ष की प्रजनन आयु वर्ग की महिलाएं जो कि गर्भवती, धात्री नहीं हैं कृमिनाशक किया जाएगा। डॉ हुरमाड़े ने बताया कि कृमि संक्रमण से बच्चों का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास बाधित होता है एवं कृमि संक्रमित हितग्राही के पोषण एवं अवशोषण स्तर पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस के क्रियान्वयन के लिए स्वास्थ्य विभाग नोडल विभाग है, जिसके द्वारा स्कूल शिक्षा विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, आदिम जाति कल्याण विभाग, पंचायती राज, ग्रामीण विकास विभाग आदि के समन्वयन से कार्यक्रम का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाना है।

डॉ हुरमाड़े ने कहा कि कृमिनाशक दवाई देने के पूर्व सावधानी बरती जाए, दवा की एक्सपायरी, दवाई में फंगस, नमी तो नहीं है, जांच करें एवं निर्धारित आयु अनुसार ही हितग्राही को कृमिनाशक की दवा खिलाई जाए। राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस की जानकारी देते हुए बताया कि 1 से 2 वर्ष के बच्चों को एल्बेंडाजोल 400 मि.ग्रा. की आधी गोली चूरा करके, 2 से 3 वर्ष के बच्चे को एल्बेंडाजोल 400 मि.ग्रा. की पूरी गोली चूरा करके, 3 से 19 वर्ष के बच्चे को एल्बेंडाजोल की पूरी गोली चबाकर एवं 20 से 49 वर्ष की महिलाऐं को एल्बेंडाजोल 400 मि.ग्रा. की पूरी गोली चबाकर पीने के साफ पानी के साथ खिलाई जाये। साथ ही उन्होंने राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस में उपयोग किये जाने वाले रिपोर्टिंग प्रपत्रों की विस्तृत जानकारी दी। बैठक में क्षेत्रीय समन्वयक डॉ दिनेश पांडे, जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश परिहार, जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ विनोद शाक्य, सभी बीएमओ, महिला बाल विकास शहरी परियोजना प्रतिनिधि योगेश धोटे, उप जिला मीडिया अधिकारी महेशराम गुबरेले, एमएण्डईओ मनोज चढ़ोकार, बीपीएम, बीईई, बीसीएम, शिक्षा विभाग प्रतिनिधि बाबू साहू एवं निजी स्कूल के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

श्री विनायकम् स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मनाया शिक्षक दिवस

बैतूल। विगत 23 वर्षों से संचालित जिले के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान श्री विनायकम् स्कूल में शिक्षक दिवस बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अपने सभी शिक्षकों को सम्मानित करते हुए अभिनंदन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती पूजन के साथ हुआ। इसी के साथ विद्यार्थियों द्वारा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के छायाचित्र पर पूजन कर दीप प्रज्ज्वलित किया गया। ग्रेड 12 के विद्यार्थियों ने शिक्षकों का अभिनंदन कर

गुरुजनों के प्रति अपने सम्मान की भावना प्रकट की। ग्रेड नर्सरी से ग्रेड 12 के समस्त शिक्षक शिक्षिकाओं के साथ साथ सीसीए एवं ऑफिशियल स्टाफ को तिलक लगाकर पुष्पगुच्छ के साथ एक उपहार भेंट किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के डायरेक्टर संजय राठौर ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन और शिक्षण के आदर्शों पर प्रकाश डालते हुए शिक्षकों को विद्यार्थियों का मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत बताया। अपने प्रभावी उद्बोधन में उन्होंने सभी विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य के प्रति जागृत रहने के लिए प्रेरित किया। ग्रेड 12 के विद्यार्थियों ने शिक्षकों को स्मृति चिन्ह और शुभकामनाएं भेंट कर सम्मानित किया। शिक्षक दिवस का यह आयोजन विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक और शिक्षकों के लिए अविस्मरणीय बन गया।

एसबीआईटीएम के 4 विद्यार्थियों को देश की नामी कंपनी ने दिया सुनहरा अवसर, मिला 6 लाख का पैकेज

इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक डिपार्टमेंट के छात्रों का हिंदुस्तान ईवी नोएडा में हुआ चयन

बैतूल। श्री बालाजी इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट (एसबीआईटीएम) बैतूल ने एक बार फिर जिले का गौरव बढ़ाया है। संस्थान के इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग विभाग के विद्यार्थियों ने अपने दमखम से नई ऊंचाइयों को छुआ है। यहां के चार विद्यार्थियों का चयन देश की प्रतिष्ठित कंपनी हिंदुस्तान ईवी, नोएडा में हुआ है। कंपनी ने इन विद्यार्थियों को 6 लाख रुपये प्रतिवर्ष (एलपीए) का आकर्षक पैकेज ऑफर किया है। चयनित विद्यार्थियों में बी.टेक इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग से मनीष यादव एवं खुशबू बोबड़े का नाम शामिल है। वहीं बी टेक मैकेनिकल से अंकिता दवंडे और पॉली मैकेनिकल से संस्कार साहू को भी कंपनी ने अपने साथ जोड़ा है। इन विद्यार्थियों की इस उपलब्धि से संस्थान में खुशी की लहर दौड़ गई है और इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग विभाग गर्व से सराबोर हो उठा है।

इस सफलता पर संस्थान के प्राचार्य डॉ. पी.जे. शाह, ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट ऑफिसर प्रो. भावेश खासदेव, इंडस्ट्री इंस्टीट्यूट इंटरेक्शन सेल (आईआईआईसी) के कोऑर्डिनेटर प्रो. निलेश

मिश्रा एवं प्रो. सतीश चढ़ोकार, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभागाध्यक्ष प्रो. कपिल पडलक तथा पॉलिटेक्निक विभागाध्यक्ष प्रो. नितेश बर्डे ने चयनित विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई दी। साथ ही उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए कहा कि यह एसबीआईटीएम की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विद्यार्थियों की मेहनत का प्रतिफल है। संस्थान प्रशासन ने स्पष्ट कहा कि विद्यार्थियों की इस उपलब्धि से आने वाले बैच के छात्रों को भी प्रेरणा मिलेगी और यह साबित करता है कि बैतूल जैसे जिले में भी राष्ट्रीय स्तर की कंपनियों तक पहुँचने की पूरी संभावनाएं हैं। पूरे संस्थान परिवार ने इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मनीष यादव, खुशबू बोबड़े, अंकिता दवंडे और संस्कार साहू के सुनहरे भविष्य की मंगलकामनाएँ कीं।

आदि कर्मयोगी अभियान के अंतर्गत 101 ग्रामों के प्रतिभागियों को किया प्रशिक्षित

बैतूल। जनजातीय कार्य विभाग के सहायक आयुक्त ने बताया कि आदि कर्मयोगी अभियान के अन्तर्गत बैतूल जिले में जनपद स्तरीय ब्लाक प्रोसेस लैब का आयोजन 1 सितंबर से 16 सितंबर तक सभी 10 जनपद पंचायतों के चयनित 554 ग्रामों में प्रारम्भ है। इसमें ब्लाक स्तरीय मास्टर टेनर्स द्वारा चयनित प्रत्येक गांव से ग्राम केडर के प्रतिभागियों को 2 दिवसीय प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया जाएगा। अभियान के अंतर्गत 3 और 4 सितंबर को दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित कर जिले के चयनित 554 ग्रामों में से 101 ग्राम के प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया है, जो

चयनित ग्रामों में जाकर अभियान के संबंध में ग्राम वासियों को जानकारी प्रदान करेगे तथा 04 बैठकों के माध्यम से सामुदायिक भागीदारी द्वारा गांव का सामाजिक एवं संसाधन मानचित्रण, ट्रांजेक्ट वॉक, गांव का विजन प्लान का निर्माण कर ग्राम सभा में अनुमोदन करवाएगे। इसके बाद चयनित प्रत्येक गांव में सेवा केन्द्र की स्थापना की जाएगी। यह प्रशिक्षण ब्लाक स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स की 44 टीमों द्वारा 16 सितंबर तक अलग-अलग ग्रामों के केडर को प्रदान किया जाएगा। कलेक्टर द्वारा सभी जनपद पंचायत स्तर पर स्वयं उपस्थित होकर आदि कर्मयोगी अभियान की समीक्षा की जाएगी।

चिचोली में जिला स्तरीय रोजगार मेला 12 सितंबर को

बैतूल। जिला रोजगार कार्यालय, आईटीआई, जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र बैतूल के संयुक्त तत्वावधान में युवा संगम के तहत जिला स्तरीय रोजगार, स्वरोजगार एवं अप्रेन्टिसशिप मेला 12 सितम्बर को प्रातः 11 से 4 बजे तक शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था चिचोली के समीप नगर पालिका ऑडिटोरियम में आयोजित किया जाएगा। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि रोजगार मेले में 12 प्रतिष्ठित कंपनियों द्वारा विभिन्न पदों पर अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा। उन्होंने सभी युवाओं से रोजगार मेले का लाभ लेने की अपील की है। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि नगर पालिका चिचोली के ऑडिटोरियम में आयोजित रोजगार मेले में वर्धमान फैब्रिक्स प्राइवेट लिमिटेड बुदनी में मशीन ऑपरेटर के 150 पदों के लिए, कुलोदय टेक्नोपैक प्राइवेट लिमिटेड दमन गुजरात में 100 पदों तथा यशस्वी ग्रुप भोपाल में अप्रेंटिस के 50 पदों के लिए योग्यता 8वीं, 10वीं, 12वीं, आईटीआई उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। जेके बायो एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड भोपाल में सेल्स एग्जीक्यूटिव के 20 पद, पुखराज हेल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड भोपाल में मैनेजर के 100 पदों तथा अकाजा फैशन हब बैतूल में सेल्स एग्जीक्यूटिव के 20 पदों के लिए योग्यता 10वीं, 12वीं, स्नातक उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। इसी प्रकार सीआईआई कौशल प्रशिक्षण केंद्र छिंदवाड़ा में मोटर मैकेनिकल के 25 पद तथा डीएंडके करियर सेंटर छिंदवाड़ा में मशीन ऑपरेटर के 50 पदों के लिए योग्यता 10वीं, 12वीं, आईटीआई होना आवश्यक है। शक्ति मोटर्स मूलतापी प्राइवेट लिमिटेड मुलताई में सेल्स एग्जीक्यूटिव, सेल्स मैनेजर, मैकेनिक हेल्पर के 25 पदों के लिए योग्यता 8वीं से स्नातकोत्तर, आईटीआई डिप्लोमा होना अनिवार्य है। मेधावी एस्पायर प्राइवेट लिमिटेड पुणे में उत्पादन एवं गुणवत्ता के 100 पदों के लिए योग्यता 10वीं, 12वीं, स्नातक आईटीआई होना जरूरी है।

शिक्षक दिवस विशेष

प्रतिस्पर्धाओं के बीच डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक संदेश अनुकरणीय

डॉ. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

5 सितंबर, शिक्षक दिवस है। यह डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्मोत्सव पर पूरे देश में मनाया जाता है। यह दिवस भारत के शिक्षकों के लिए, शिक्षाजगत से जुड़े लोगों के लिए और शिक्षार्थियों के लिए बहुत अहम् होता है। भारत सरकार नई महत्वाकांक्षाओं के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति लायी है और वह यह चाहती है कि अब भारत में शिक्षा व्यवस्था का भारतीयकरण किया जाए और भारतीय शास्त्रों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए। संकल्प बहुत अच्छे हैं। इरादे बहुत नेक हैं। भारत में 64 कलाओं पर कभी बात नहीं होती थी। इस नई एजुकेशन पॉलिसी से निःसंदेह शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी व अकादमिक जगत से जुड़े लोग ऐसी ज्ञानमालाओं को समझ सकेंगे। बल्कि यह कहना उचित होगा कि हर भारतीय को उसे भारतीय होने के नाते जानना ही चाहिए। सरकार की सोच का अभिनंदन। शिक्षा के भारतीय परिप्रेक्ष्य को नेपथ्य में रखकर हम जो शिक्षा व्यवस्था भारत में चला रहे थे वह निश्चय ही कुछ मामले में वरेण्य नहीं थी। कुछ मामले में इसलिए उसे वरेण्य माना जा सकता है क्योंकि भारत की निवर्तमान शिक्षा व्यवस्था को अपनाया ही इसलिए गया जिससे भारत विश्व में कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ सके।

भारत की शिक्षा व्यवस्था में सबसे बुरी तरह से किसी चीज की आलोचना होती है तो वह है अंग्रेजी। भाषा को लेकर की जाने वाली आलोचना भारतीय लोग करते रहे हैं किन्तु एक सवाल यह है कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन यदि अंग्रेजी नहीं जानते तो क्या वह यूनेस्को में स्वयं को स्थापित कर पाते? यद्यपि यह भी सच है कि हमारे देश के प्रथम उप राष्ट्रपति व राजेन्द्र बाबू के बाद राष्ट्रपति की जिम्मेवारी सम्हालने वाले डॉ। राधाकृष्णन संस्कृत व अन्य भारतीय भाषाओं के भी पंडित थे। आज भी भारत के विश्वविद्यालय अंग्रेजी में ही अपना ज्ञान पकाते हैं और खाते हैं। विश्वविद्यालयों में भारतीय परिप्रेक्ष्य क्यों अपना असर नहीं दिखा सके, यह समझ नहीं आता। भारत की शिक्षा व्यवस्था में अभी हाल ही में मनुस्मृति को कोर्स का हिस्सा कुछ विश्वविद्यालय बनाए लेकिन उन्हें मनुस्मृति को कोर्स से हटाना पड़ा। विश्वविद्यालय अंग्रेजी में ही कोई साक्षात्कार आयोजित करते हैं। साक्षात्कार में आए विशेषज्ञ भी अंग्रेजी में सवाल करते हैं और अंग्रेजी में ही उत्तर सुनाने के आदी हैं। हिंदी को हेय दृष्टि से देखने वाले विश्वविद्यालय हैं, विश्वविद्यालय में कार्यरत लोग हैं तो अंग्रेजी का प्रभुत्व कोई शिक्षा नीति नहीं समाप्त कर सकती, यह एक बड़ी सचाई है।

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था शिक्षक वो नहीं, जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन डाले, बल्कि वास्तविक शिक्षक वो है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे। भारत में अंग्रेजी की दीवानगी यही बताती है की एलीट होने की पहली शर्त, महसूस करने की पहली शर्त और भविष्य रचने की भी पहली शर्त अंग्रेजी मानी गयी। यह जबरन अंग्रेजी थोपने की कोशिश जो शिक्षा व्यवस्था व शिक्षक करते रहे वह सही था या गलत इसका उत्तर हम खुद खोजें और सही और गलत को समझें तो ठीक है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने एक और महत्वपूर्ण बात कही थी कि हर्ष और आनंद से परिपूर्ण जीवन केवल ज्ञान और विज्ञान के आधार पर संभव है। इसी की खोज करना आज ज़रूरी है। यह तभी संभव है जब हम विश्व के सभी और से आने वाली ज्ञान की बयार के लिए खिड़कियाँ खोलकर रखें। विश्व में शिक्षा व ज्ञान के लिए भी दरवाजे बंद करने की प्रथा रही है। अमेरिका ने भारतीय विद्यार्थियों के लिए क्या प्रतिबंध आजकल लगाने लगा यह तो पूरे विश्व को पता है और मीडिया में बहुत कुछ छपा है। साम्राज्यशाली देश शिक्षा के लिए भी अपने दरवाज़े बंद करते हैं। कुंठित व संकीर्णतावादी लोग किसी और वजह से ज्ञान विनिमय में संकोच करते हैं, ऐसे में नुकसान एक पीढ़ी का होता है। यदि इसकी निरंतरता रही तो यह नुकसान पीढ़ी दर पीढ़ी होता है।

डॉ. राधाकृष्णन ने रवीन्द्रनाथ टैगोर को स्मरण करते हुए एक बार कहा था कि विश्व के महान पुरुष संसार के दुःखों के प्रति संवेदनशील रहते हुए इस संसार में कार्य करते हैं। जब बुद्ध मैत्री का प्रचार करते हैं और गीता सबके प्रति स्नेह का उपदेश देती है, तो उसका अर्थ यही है कि हम दूसरे लोगों को केवल प्रेम के द्वारा समझ सकते हैं। भारत में मैत्री की गुंजाइश नई शिक्षा नीति में कितना बनेगी यह तो समय तय करेगा। प्रज्ञा, शील और मैत्री पूर्ण शिक्षा व्यवस्था भारत की होनी चाहिए। ईश्वर करें राष्ट्रीय शिक्षा नीति का सामर्थ्य बढ़े और वह सबकुछ कर सके। लेकिन डॉ। राधाकृष्णन ने एक बात और कही थी कि अच्छा टीचर वो है, जो ताउम्र सीखता रहता है और अपने छात्रों से सीखने में भी कोई परहेज नहीं दिखाता। यह तासीर अब भारतीय शिक्षकों में घटती जा रही है। भारतीय विश्वविद्यालयों के शिक्षक लाइब्रेरी में नहीं पाए जाते। वे अपना समय एक-दूसरे की आलोचना करने में बिता देते हैं। भारत में लंबे समय तक हमारे शास्त्रों को जगह बनाने में संघर्ष करना पड़ा है। भारतीय भाषाओं को अपना स्थान पाने में समय लगा है। 64 कलाओं पर अध्ययन व सम्मान पाने में समय लगा है तो उसके पीछे हमारी खुद की कमियां हैं। एक शिक्षक अपनी आलोचना सुनने का आदी नहीं है। वह अपने विद्यार्थियों से सीखने की इच्छा कहाँ से रखेगा। डॉ। राधाकृष्णन ने इन्हीं भेद को मिटाकर शिक्षा की सुचिता व आत्मसात करने पर बल दिया है। यदि शिक्षक पढ़ें। शिक्षक सीखें और अपने जीवन में उच्च नैतिक मानदंडों पर जिएं तो भारत को चिंता करने की आवश्यकता नहीं होगी लेकिन हो उसका उल्टा रहा है। शिक्षक अपने क्लास को अपने शोधार्थियों को दे देता है। उसे पढ़ाने के लिए बोल देता है। शिक्षक ठेकेदारी करने और नई डील समझने में लग गया है। मर्यादाओं का यह क्षय निश्चय ही शिक्षा व्यवस्था को मिटटी में मिला दिया। हमारे देश की यूनिवर्सिटीज को विश्व में जब रैंकिंग होती है तो कोई स्थान नहीं मिलता, उसकी वजह यही है कि शिक्षक अपने उत्तरदायित्वों से बहुत दूर जा चुका है।

अब तो विश्व में शिक्षा की प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। एआई और नई सूचना तकनीकी ने शिक्षा-जगत को खूब प्रभावित किया है। इसलिए भारत के शिक्षकों व सभी स्टेकहोल्डर्स को यह समझने की आवश्यकता है कि हमारे शिक्षा के मानक क्या बनाये जाएँ और हम विश्व प्रतिस्पर्धा में कैसे भारत को सम्मिलित करें। डॉ. राधाकृष्णन ने जिन मूल्यों को स्थापित करने की कोशिश की अपने जीवन में उनसे सीखने की भी ज़रूरत है। केवल शिक्षक दिवस हमारे लिए आयोजन या मनोरंजन का विषय नहीं होना चाहिए। यह वास्तव में संकल्प का समय है कि हम शिक्षा क्षेत्र आमूलचूल बदलाव करें। भारत सरकार भी शिक्षा के लिए बजट में अतिरिक्त धनराशि जोड़े क्योंकि समस्त विकास का मार्ग शिक्षा से खुलता है। इसके साथ की गयी कंजूसी देश के विकास में बाधा है। शिक्षक दिवस आत्मावलोकन व आत्मालोचन का अवसर होता है। देश के सभी प्रबुद्ध वर्ग का यह दायित्व है कि वह अपने कमियों को ढूंढे और आत्मप्रकाशित होकर भारत के हित में बात करे। जो अभी भी हों शिक्षा से वंचित वहां शिक्षा के दीप जलाए।

संक्षिप्त समाचार

स्कूली वाहनों का औचक निरीक्षण

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता द्वारा दिए गए निर्देशानुसार स्कूली वाहनों के विरुद्ध चलाए जा रहे चेकिंग अभियान के तहत आज जिला परिवहन अधिकारी द्वारा त्योंदा एवं कस्बा बागरोद स्थित विद्यालयों के वाहनों का निरीक्षण किया गया। कार्यवाही के दौरान ज्ञानदीप कॉन्वेंट स्कूल, घटेरा की दो बसें तथा गुरुकुल फाउंडेशन स्कूल, कस्बा बागरोद की दो बसें बिना आवश्यक वैध प्रपत्रों के पाई गईं। संबंधित बसों पर चालानी कार्यवाही की गई एवं प्रकरण निराकरण की प्रत्याशा में वाहनों को जब्त कर विद्यालय परिसर में सुरक्षा की दृष्टि से रखा गया।

हरदा जिला एथलेटिक संघ के धावकों ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में जीते पदक

हरदा (निप्र)। जबलपुर में आयोजित 61 वीं मध्य प्रदेश राज्य स्तरीय जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में हरदा के धावकों ने शानदार प्रदर्शन किया और हरदा का नाम रोशन किया। रोशन करने वाले धावकों में हिमांशु शर्मा ने 100-200 मीटर में स्वर्ण पदक, आदर्श मोरिया ने 800 मी में गोल्ड मेडल, मंगल यादव ने 800 मीटर में ब्रास मेडल, मोहित यादव ने 1500 मी में गोल्ड मेडल, कृष्णा मिलन सिंह ने 1500 मीटर में सिल्वर मेडल, शांति बाई ने 1 किलोमीटर में गोल्ड मेडल, आरती तोमर ने 1 किलोमीटर में ब्रास मेडल तथा ऋषि मावा ने 400 मीटर दौड़ में रजत पदक जीता। इस अवसर पर हरदा जिला एथलेटिक संघ के अध्यक्ष श्री नितेश बादर, सचिव श्री आनंद तिवारी, श्री उत्तम तेंगुरिया, श्री रामनिवास जाट, श्री राजेश बिलिया, सुश्री सलमा खान ने बधाई दी।

धरती आबा केम्पो का आयोजन जारी

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के द्वारा दिए गए निर्देशो के अनुपालन में धरती आबा अभियान के तहत चिन्हित 86 ग्रामो में विशेष शिविरो का पुनः आयोजन किया जा रहा है ताकि किन्ही कारणो से शत प्रतिशत हितलाभ से वंचित हितग्राहियों को योजनाओं के तहत हितलाभ मुहैया कराया जा सके। कलेक्टर श्री गुप्ता ने ग्रामवार चिन्हित हितग्राहियों में से शेष बचे हितग्राहियों को जिन विभागो की योजनाओं से लाभांवित किया जाना है उन विभागो के जिलाधिकारियों को विशेष तौर पर निर्देशित किया गया है कि ग्राम स्तरीय शिविरो में स्वंय व अधीनस्थो की उपस्थिति सुनिश्चित करें ओर विभागीय योजनाओं के हितलाभ से कोई वंचित ना रहें कि सफल कार्यवाही संपादित करें। आदिम जाति कल्याण विभाग के जिला संयोजक ने बताया कि आज मंगलवार को बासौदा विकासखण्ड के ग्राम कोहना में धरती आबा अभियान के तहत विशेष शिविर का आयोजन किया गया था जिसमें वित्तीय साक्षरता की भी जानकारी सांझा की गई है इस दौरान कृषि विभाग के उप संचालक श्री केएस खपडिया, उद्यानिकी विभाग के सहायक संचालक श्री सोलंकी समेत अन्य विभागो के अधिकारियों के द्वारा विभागीय योजनाओं की जानकारी दी गई और हितग्राहियों को लाभांवित किया गया है।

सांसद, विधायक एवं डीएमएफ निधि के निर्माण कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराएं

सितंबर माह के अंत में पुनः होगी समीक्षा

बैतूल (निप्र)। सांसद निधि, विधायक निधि, डीएमएफ और मुख्यमंत्री ग्राम सड़क अवसंरचना विशेष निधि के प्रस्तावित विकास कार्यों की मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित बैठक में केंद्रीय मंत्री जनजातीय कार्य श्री दुर्गादास उईके, विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल, विधायक श्री महेंद्र सिंह चौहान, विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे, विधायक श्री चंद्रशेखर देशमुख, विधायक श्रीमती गंगाबाई उईके ने विस्तार से समीक्षा की। बैठक में जनप्रतिनिधि ने अपने क्षेत्र में इन निधियों के प्रस्तावित कार्यों में प्रगतिरत और अप्रारंभ कार्यों की जानकारी ली। विधायक श्री खंडेलवाल ने प्रमुख रूप से महिला एवं बाल विकास, शिक्षा , लोक निर्माण विभाग, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, एमपीईबी और स्वास्थ विभाग से जानकारी ली कि डीएमएफ निधि से ऐसे कार्य जिनमें विभाग से एनओसी प्राप्त नहीं हुई हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे सभी कार्यों में पत्राचार कर एनओसी भी प्राप्त की जाएं। विधायक श्री खंडेलवाल ने शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव से भी एनओसी नहीं मिलने के सम्बन्ध में दूरभाष पर चर्चा की। उन्होंने बैठक में सभी प्रगतिरत कार्यों में डेडलाइन तय कर शीघ्र पूर्ण कराने की बात कहीं। विधायक श्री खंडेलवाल ने कहा कि सांसद, विधायक, डीएमएफ और विशेष निधि

के कार्यों की प्रगति की सितंबर माह के अंत में पुनः समीक्षा बैठक का आयोजन किया जाएं। जिसमें सभी विभाग, जनपद सीईओ , सीएमओ इन कार्यों की पीपीटी में फोटोग्राफ्स भी रखें, ताकि कार्यों की स्थिति और गुणवत्ता का अच्छे से समीक्षा हो पाए। बैठक में कलेक्टर बैतूल श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अक्षत जैन, सहित सभी जनपद सीईओ, सीएमओ तथा सभी विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित रहें।

राज्यपाल और मुख्यमंत्री श्रेष्ठ कार्य करने वाले शिक्षकों को करेंगे सम्मानित

प्रशासन अकादमी के स्वर्ण जयंती सभागार में होगा गरिमापूर्ण आयोजन

भोपाल(नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 5 सितम्बर शिक्षक दिवस पर भोपाल में होने वाले राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में श्रेष्ठ कार्य करने वाले शिक्षकों को सम्मानित करेंगे। साथ ही कक्षा एक से कक्षा 8 तक के 55 लाख विद्यार्थियों के बैंक खातों में शाला गणवेश की 330 करोड़ रूपये की राशि का अंतरण सिंगल क्लिक के माध्यम से किया जायेगा।

समारोह शुक्रवार को प्रातः 10:30 बजे भोपाल के स्वर्ण जयंती सभागार, आरसीव्हीपी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी में आयोजित होगा। कार्यक्रम में स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, जनजातीय कार्य, लोक परिसंपत्ति प्रबंधन मंत्री श्री कुवर विजय शाह, खेल एवं युवा कल्याण सहकारिता मंत्री श्री विश्वास सारंग और राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण श्रीमती कृष्णा गौर भी उपस्थित रहेंगी।

स्कूल शिक्षा मंत्री ने दी बधाई- स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार के लिये चयनित शिक्षकों को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा है कि जिन शिक्षकों का उनके श्रेष्ठ कार्यों की वजह से सम्मान हो रहा है, उनसे प्रदेश के अन्य शिक्षकों को भी प्रेरणा मिलेगी।

सम्मानित होने वाले शिक्षक- शिक्षक दिवस पर सम्मानित शिक्षकों में प्राथमिक, माध्यमिक श्रेणी के 8 और उच्चतर माध्यमिक श्रेणी के 6 शिक्षक शामिल हैं। गत वर्ष 2024 में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त शिक्षकों को भी सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कृत शिक्षकों को 25 हजार रुपये की सम्मान निधि, शॉल-श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया जायेगा। जिन प्राथमिक शिक्षकों को सम्मानित किया जायेगा, उनमें शासकीय प्राथमिक शाला बिसोनिया, गुना के श्री जितेन्द्र शर्मा, शासकीय उ.मा.वि. क्रमांक-2, शाजापुर के श्री दिलीप जायसवाल, ई.पी.ई.एस., भाटीवाड़ा, सिवनी के श्री दिलीप कटरे, शासकीय प्राथमिक विद्यालय, बसिया, दमोह के श्री श्रीकांत कुर्मी, शासकीय उ.मा.वि., रुस्तमपुर, खण्डवा की माध्यमिक शिक्षक श्रीमती श्रद्धा गुप्ता, शासकीय माध्यमिक विद्यालय, सतौआ, दमोह के श्री मोहन सिंह गौंड, शासकीय माध्यमिक शाला, चंदेसरा, उज्जैन के श्री अपूर्व शर्मा और शासकीय माध्यमिक शाला, उबालाद, अलीराजपुर के उच्च श्रेणी शिक्षक श्री धनराज वाणी शामिल हैं। ये चयनित शिक्षक कक्षा-1 से 8 की कक्षाओं में विद्यार्थियों को पढ़ाने का कार्य कर रहे हैं।

कक्षा-9 से 12 में चयनित शिक्षक- राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार के लिये कक्षा-9 से 12 में पढ़ाने वाले चयनित शिक्षकों में माध्यमिक शिक्षक शासकीय उत्कृष्ट उ.मा.वि., बाग, जिला धार की श्रीमती राधा शर्मा, शासकीय उ.मा.वि., मेडिकल कॉलेज, जबलपुर के डॉ. नरेन्द्र कुमार उरमलिया, शासकीय उ.मा. संभागीय ज्ञानोदय विद्यालय, तिलीवार्ड, सागर के श्री महेन्द्र कुमार लोधी, शासकीय उ.मा.वि., जावरा, रतलाम की उच्च माध्यमिक शिक्षक श्रीमती विनीता ओझा और माध्यमिक शिक्षक शासकीय हाई स्कूल, पांदा, जिला राजगढ़ डॉ. सरिता शर्मा को सम्मानित किया जायेगा।

वर्ष 2024 के राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त शिक्षक- वर्ष 2024 में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षकों को राज्य स्तरीय समारोह में शॉल-श्रीफल, स्मृति चिन्ह और 5 हजार रुपये सम्मान निधि भेंट कर सम्मानित किया जायेगा। इनमें शासकीय माध्यमिक शाला लिधौरा, ब्लॉक बटियागढ़, दमोह के श्री माधव प्रसाद पटेल और शासकीय हाई स्कूल, मंदसौर की शिक्षक श्रीमती सुनीता गोधा शामिल हैं।

जिला स्तर पर भी होगा शिक्षक सम्मान समारोह- प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों पर जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित होगा। समारोह में जिले में श्रेष्ठ कार्य करने वाले शिक्षकों का सम्मान किया जायेगा। समारोह में गणमान्य नागरिक भी मौजूद रहेंगे।

फसल क्षति का होगा व्यवस्थित सर्वे

केंद्रीय मंत्री श्री उईके और विधायक श्री खंडेलवाल ने की फसल क्षति की समीक्षा

बैतूल (निप्र)। केंद्रीय राज्यमंत्री श्री दुर्गादास उईके और बैतूल विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट में आयोजित बैठक में जिले की खरीफ फसलों की क्षति की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में विशेष रूप से सोयाबीन फसल में पीला मोजेक रोग से हुई नुकसान पर चर्चा की गई। केंद्रीय मंत्री श्री उईके और विधायक श्री खंडेलवाल ने प्रभावित किसानों की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि सोयाबीन की फसल जिले की प्रमुख आय का साधन है और पीला मोजेक जैसी बीमारी ने किसानों को आर्थिक संकट में डाल दिया है। उन्होंने कृषि विभाग के अधिकारियों से फसल की वास्तविक स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि जिन क्षेत्रों में किसानों को नुकसान हुआ है, वहां का त्वरित सर्वे कर वास्तविक स्थिति सामने लाई जाए। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि सर्वे कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही न हो और प्रभावित किसानों को शासन की योजनाओं का अधिकतम लाभ मिल सके। बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे प्रत्येक प्रभावित ग्राम में जाकर फसल क्षति का आंकलन करें और विस्तृत रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत करें। उन्होंने कहा कि किसानों को समय पर राहत उपलब्ध कराई जाएं। बैठक में विधायक आमला डॉ योगेश पंडाग्रे, विधायक मुलताई श्री चंद्रशेखर देशमुख, विधायक भैंसदेही श्री महेंद्र सिंह चौहान, विधायक घोड़ाडोंगरी श्रीमती गंगाबाई उईके तथा कलेक्टर बैतूल श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी,मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अक्षत जैन सहित कृषि विभाग, राजस्व विभाग एवं अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने औद्योगिक क्षेत्र कंजना का निरीक्षण किया

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज गंजबासोदा तहसील स्थित औद्योगिक क्षेत्र कंजना का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने मैसर्स कल्पना बारबेड वायर, मैसर्स महेश्वरी दाल मिल एवं श्रीराम सेल्स डिस्पोजल कप-प्लेट इकाई का निरीक्षण कर उद्योगपतियों से उत्पादन प्रक्रिया, कच्चा माल, विपणन एवं जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र तथा बैंक से प्राप्त वित्तीय सहायता संबंधी जानकारी ली। उद्योगपतियों द्वारा औद्योगिक क्षेत्र में आवंटित भू-खण्डों को बैंक में मॉर्टगेज कराने में आ रही समस्या से कलेक्टर को अवगत कराया गया। इस पर उन्होंने एलडीएम एवं जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र के महाप्रबंधक को शीघ्र समाधान हेतु निर्देशित किया गया है। औद्योगिक क्षेत्र में पेयजल आपूर्ति की समस्या पर कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने जल निगम व उद्योग विभाग के अधिकारियों के साथ चर्चा की और शीघ्र जल प्रदाय सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाज की प्रगति के लिए आवश्यक : डी.एस. राय

नर्मदापुरम (निप्र)। शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नर्मदापुरम में आयोजित नवाचारी क्रियाशील खगोलीय कार्यशाला के दूसरे दिन शिक्षकों को खगोल विज्ञान के सैद्धांतिक, ऐतिहासिक और व्यावहारिक पहलुओं से अवगत कराया गया। यह कार्यशाला मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, स्कूल शिक्षा विभाग तथा वी.एल.एस.एस.एस. रायसेन के संयुक्त तत्वावधान में संचालित हो रही है, जिसमें नर्मदापुरम संभाग के 50 से अधिक शिक्षक भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम में डॉ. श्रीनिवास औंधकार ने नग्न आंखों से खगोलीय पिंडों की पहचान सिखाई और चंद्रयान मॉडल बनवाए। प्रो. अनुज हुंडैत ने भारत की प्राचीन खगोलविद्या की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। श्री एस.आर. आजाद ने खगोल विज्ञान और ज्योतिष के बीच का अंतर स्पष्ट किया। वहीं, पूर्व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी डी.एस. राय ने कहा कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है।

आदि कर्मयोगी अभियान के तहत ब्लॉक स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स की प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

जनजातीय समुदाय के सर्वांगीण विकास में आदि कर्मयोगी अभियान की भूमिका महत्वपूर्ण है - कलेक्टर

कर्मयोगी अभियान का उद्देश्य जनजातीय समुदायों को सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाना है : सीईओ

सीहोर (निप्र)। जिला मुख्यालय में आदि कर्मयोगी अभियान अंतर्गत ब्लॉक स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स की तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण का उद्देश्य जनजातीय विकास और परिवर्तन के लिए व्यक्तियों एवं संस्थाओं को सशक्त बनाना है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने कहा कि

जनजातीय समुदाय के सर्वांगीण विकास में आदि कर्मयोगी अभियान की महत्वपूर्ण भूमिका है। अंतिम छोर के व्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए संबंधित विभागों एवं एनजीओ के आदि कर्मयोगियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है ताकि वे पूरी दक्षता से इस अभियान के उद्देश्यों को सार्थक करने के लिये काम कर सकें।

उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण में आदि कर्मयोगी के क्रियान्वयन की प्रत्येक चीजो को बारीकी से सीखते हुए अपने दायित्वो का ईमानदारी के साथ निर्वहन करें। उन्होंने कहा कि आदि कर्मयोगी अभियान में जिले के अधिकारी, कर्मचारी, स्वयंसेवी संस्थान के सदस्य बढ़ चढकर सहभागिता करते हुए जनजातीय समुदाय के नागरिकों को सशक्त बनाने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि जनजातीय कार्य विभाग द्वारा यह पहल ग्राम स्तर पर योजनाओं और सेवाओं की बेहतर पहुँच, जवाबदेही और नवाचार सुनिश्चित करने के लिए शुरू की गई है, शासन द्वारा जनजातियों के लिए चिन्हित सभी योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि सभी जनजातीय क्षेत्रों में कार्य के दौरान उन कारणों को समझने का प्रयास करें जो जनजातीय क्षेत्रों में विकास में बाधक बनते हैं और उन सभी कारणों को समझते हुए कार्ययोजना बनाकर कार्य करें ताकि विकास के लक्ष्यों को पाया जा सके। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला पंचायत सीईओ डॉ नेहा जैन ने कहा कि आदि कर्मयोगी अभियान का उद्देश्य जिले के जनजातीय समुदाय के लोगों को केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ देते हुए सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना है। प्रशिक्षण कार्यशाला में जनजातीय कार्य विभाग के जिला संयोजक श्री अरविंद कुशवाह, सात जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स और 25 ब्लॉक स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स उपस्थित थे।

महिला जज को 5 अरब फिरौती की धमकी

डकैत हनुमान का साथी बताकर भेजा पत्र ; आरोपी को पकड़ने रीवा पुलिस प्रयागराज रवाना

रीवा (नप्र)। रीवा जिले के त्योंथर न्यायालय में पदस्थ न्यायाधीश को धमकी भरा पत्र मिला है। पत्र में लिखा है कि जिंदा रहना है तो पैसा देना पड़ेगा, पत्र में 5 अरब की राशि मांगी गई है। फिरौती भरा पत्र त्योंथर न्यायालय के न्यायाधीश मोहिनी भदौरिया को पोस्ट ऑफिस से मिला है। धमकी वाले पत्र में आरोपी ने खुद को डकैत हनुमान का साथी बताया है। न्यायाधीश ने आज (गुरुवार) सोहागी थाने में शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने जज की शिकायत के बाद मामला दर्ज कर लिया गया है। सूत्रों के अनुसार, धमकी भरा पत्र पोस्ट के जरिए मिला है।

दो दिन पहले मिला पत्र

रीवा पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह का कहना है कि दो दिन पहले कि यह घटना है। पुलिस ने तत्काल शिकायत मिलते ही मामला दर्ज कर लिया है। जो संदेही हैं, उनकी गिरफ्तारी के लिए प्रयागराज की ओर टीम भी रवाना कर दी गई है। जल्द ही हम आरोपियों को गिरफ्तार करके पूरे घटनाक्रम का खुलासा करेंगे।

जांच में जुटी पुलिस

फिलहाल पुलिस इस मामले की हर पहलू से जांच कर रही है। पुलिस यह भी पता लगाने की कोशिश कर रही है कि कि क्या यह सच में किसी डकैत गिरोह का काम है, या फिर किसी ने शरारत या किसी व्यक्तिगत रंजिश के चलते ऐसा किया है। पुलिस पूरी सावधानी और तत्परता के साथ जांच में जुटी है। ताकि जल्द से जल्द आरोपियों को गिरफ्तार कर आगे की कार्रवाई की जा सके।

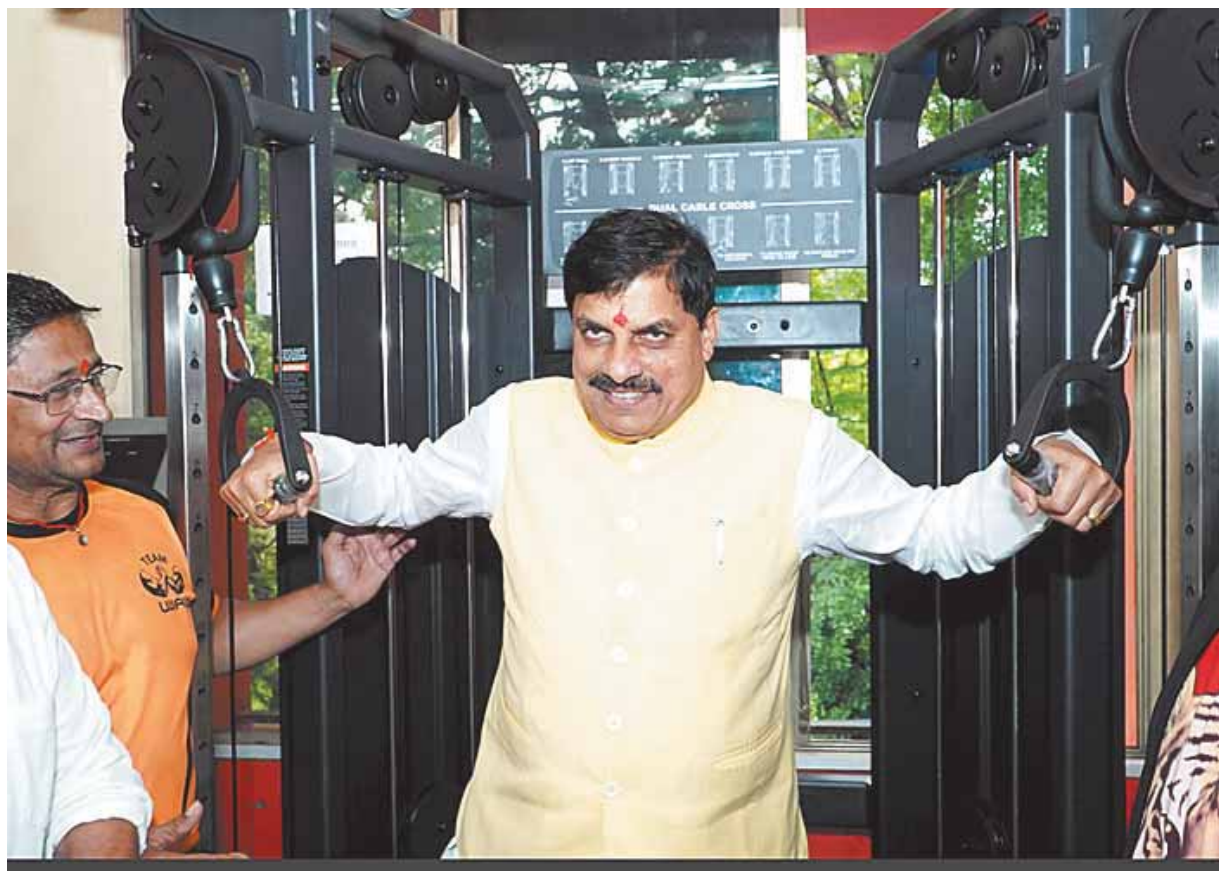

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन के तरण ताल स्थित जिम में कसरत कर स्वस्थ भारत का संदेश दिया।

दिग्विजय बोले-मोदी ने मां के देहांत पर मुंडन नहीं कराया

राजगढ़ में कहा- वे खुद गालियां देते हैं, ध्यान भटकाने गालियों पर चर्चा कर रहे

राजगढ़ (नप्र)। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने प्रधानमंत्री मोदी को लेकर कहा है कि खुद को सनातनी हिंदू कहने वाले मोदी जी ने अपनी मां के देहांत पर मुंडन तक नहीं कराया। दिग्विजय सिंह गुरुवार को राजगढ़ पहुंचे थे। जहां मीडिया से चर्चा के दौरान उन्होंने कहा-नरेंद्र मोदी जी, आपने कितनी सेवा की माता जी की? आप अपने आप को सनातनी हिंदू कहते हैं, लेकिन जब आपकी माताजी का देहांत हुआ तब आपने मुंडन भी नहीं कराया। फिर आप दूसरों को सेवा और संस्कार का पाठ कैसे पढ़ा सकते हैं?

दरअसल, दिग्विजय सिंह बिहार के दरभंगा में कांग्रेस के मंच से पीएम मोदी को गाली दिए जाने के सवाल पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा- गाली किसने दी है? क्या कांग्रेस के किसी वर्कर या नेता ने दी है? मोदी जी खुद गालियां देते हैं, सोनिया गांधी और राहुल गांधी को उन्होंने क्या-क्या नहीं कहा? दिग्विजय सिंह ने कहा कि आज देश की असली समस्या गालियां नहीं, बल्कि संविधान पर खतरा, वोट की चोरी, चुनाव आयोग का पक्षपात, महंगाई और बेरोजगारी है। अमीर और गरीब की खाई लगातार बढ़ती जा रही है, लेकिन प्रधानमंत्री लोगों का ध्यान भटकाने के लिए गालियों की चर्चा करते हैं। राजगढ़ में आयोजित सर्वोदय शिविर में दिग्विजय सिंह ने कार्यकर्ताओं से एक-एक कर मुलाकात की।

जीएसटी संशोधन को गरीबों पर बोझ बताया-जीएसटी संशोधन पर केंद्र सरकार पर हमला बोलते हुए दिग्विजय सिंह ने कहा कि भारत एकमात्र देश है, जहां गरीबों पर जीएसटी का बोझ डाला जा रहा है और उद्योगपतियों को राहत दी जा रही है।

2 तेंदुए जंगल से बाहर, स्कूलों की छुट्टी

नर्मदापुरम में एक ने किया मुर्गों का शिकार ; 3 बार रेस्क्यू के बाद लौट रहा दूसरा तेंदुआ

नर्मदापुरम (नप्र)। नर्मदापुरम जिले में इन दिनों तेंदुओं की दहशत है। अलग-अलग स्थानों पर 3 तेंदुए रहवासी क्षेत्र में पहुंच रहे हैं। पथरौटा स्थित पावर ग्रिड परिसर में मादा तेंदुआ और उसके शावक 8 दिनों से घूम रहे हैं। एक शावक की करंट से मौत के बाद रहवासी और स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे डर रहे हैं। स्कूल प्रबंधन ने 4 से 13 सितंबर तक छुट्टी घोषित कर दी है। ऑर्डिनेंस फैक्ट्री केंद्रीय विद्यालय कैंपस में भी एक तेंदुआ का 5 दिनों से घूम रहा है।

इसके अलावा एसटीआर का खूंखार तेंदुआ जंगल से बार-बार बाहर आकर रहवासी क्षेत्र में पहुंच उत्पात मचा रहा है। तेंदुआ तवा बफर रेंज के धांसई में 3 दिनों से घुसकर ग्रामीणों की मुर्गे-मुर्गियों को शिकार बना रहा है। ग्रामीण रात में बाहर निकलने से डर रहे हैं। तेंदुआ के मूमेंट से एसटीआर ने उसे पकड़ने के लिए फिर से बुधवार शाम को दो पिंजरे लगा दिए हैं।

ग्रामीण के चूल्हे तक पहुंच गया तेंदुआ

जानकारी के अनुसार, धांसई गांव में दिखा तेंदुआ पहले 19 जून को

सिंघानामा के पास से पकड़ा गया था। इसे चूरना के जंगल में छोड़ा गया था। इसके बाद 26 जुलाई को बासनिया गांव में यह एक ग्रामीण के घर की रसोई में जा पहुंचा था, तब भी उसे भगाकर जंगल में लौटाया गया था। करीब 15 दिन बाद यह फिर से सात गांवों हिरणचापड़ा, खखरापुरा, सहेली आदि में देखा गया, जहां यह लगातार पालतू जानवरों का शिकार कर रहा था। 23 अगस्त को इसे खखरापुरा के पास लगे पिंजरे में तीसरी बार पकड़ा गया था। इसके बाद उसे एक और घने जंगल में छोड़ा गया, लेकिन अब फिर यह बफर जोन के रहवासी इलाकों में दिखाई दे रहा है।

धांसई गांव में लगा पिंजरा, पगमार्क से पुष्टि

ग्रामीणों की शिकायत के बाद बुधवार को एसटीआर की टीम ने धांसई गांव में सर्चिंग की। इस दौरान तेंदुए के पगमार्क मिले, जिसके बाद बुधवार शाम को गांव के रास्तों पर दो पिंजरे लगाए गए हैं। एसटीआर की टीम गांव में गश्त कर रही है और ग्रामीणों को रात में अकेले बाहर न निकलने की सलाह दी जा रही है।

शावक की मौत के बाद आक्रामक है तेंदुआ

इटारसी के पथरौटा स्थित पावर ग्रिड परिसर में भी तेंदुए की हलचल से दहशत है। यहां एक मादा तेंदुआ दिखाई दी है और उसके शावक की मौत के बाद उसके आक्रामक होने की आशंका जताई जा रही है। इस खतरे को देखते हुए श्री टैगोर विद्या मंदिर स्कूल को 4 से 13 सितंबर तक बंद कर दिया गया है। स्कूल में अब ऑनलाइन कक्षाएं संचालित की जा रही हैं। प्राचार्य बीना काकड़े ने बताया कि बुधवार को शिक्षक दिवस के बाद स्कूल की छुट्टी घोषित की गई। स्कूल दो पालियों में चलता है और बड़ी संख्या में छोटे बच्चे आते हैं, जिनकी सुरक्षा को देखते हुए यह निर्णय लिया गया।

वन विभाग पर लापरवाही के आरोप लगाए

स्थानीय लोगों ने वन विभाग पर लापरवाही के आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि तेंदुए की मौजूदगी की जानकारी पहले से थी। इसके बावजूद समय पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। सूचना मिलते ही पिंजरा नहीं लगाया जा सका, जिससे ग्रामीणों और स्कूलों को खतरा बना हुआ है।नर्मदापुरम से इटारसी की दूरी महज 18 किलोमीटर है। इसके बावजूद अब तक पिंजरा नहीं पहुंचा है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि इसी लापरवाही के चलते तेंदुए के शावक की मौत हुई और अब रहवासी क्षेत्रों में बड़ा खतरा मंडरा रहा है। एसडीओ मानसिंह मरावी ने सफाई देते हुए कहा -बारिश के कारण पिंजरा लगने में देरी हुई। उन्होंने बताया कि एक पिंजरा हिरणचापड़ा में फंसा हुआ है और दूसरा नर्मदापुरम में है।

बीजेपी सांसद का पत्र-खाद की परेशानी मुझसे देखी नहीं जाती

सरकारी रिकॉर्ड में खाद की कमी नहीं, पटवारी बोले,शिवराज-मोहन आंखें खोलो

भोपाल (नप्र)। मप्र के अलग-अलग जिलों से खाद संकट को लेकर तस्वीरें सामने आ रही हैं। रीवा में खाद लेने कतार में लगे किसानों पर लाठीचार्ज के वीडियो सामने आए। सतना में मंत्री प्रतिमा बागरी को किसानों का गुस्सा देख रास्ता बदलना पड़ा। खाद संकट को लेकर सतना से बीजेपी सांसद गणेश सिंह ने एक पत्र लिखकर अपने क्षेत्र के किसानों की पीड़ा जाहिर की, तो कांग्रेस को सरकार पर हमला करने का मौका मिल गया।

इधर, मप्र के कृषि विभाग का दावा है कि प्रदेश में खाद की कमी नहीं हैं। किसानों के लिए पर्याप्त खाद उपलब्ध है और वितरण हो रहा है।

बीजेपी सांसद ने लिखा: किसानों के खाद की परेशानी मुझसे देखी नहीं जाती-सांसद गणेश सिंह ने किसानों की जरूरत की रासायनिक खाद की कमी को देखते हुए कहा है कि संबंधित जिले और प्रदेश के विभागों के अधिकारी इसे गंभीरता से लें। किसानों की लंबी लाइन देखकर मुझे बहुत कष्ट हो रहा है। खाद के वितरण में पारदर्शिता की भी कमी है। निजी क्षेत्रों में ऊंचे दामों पर किसान खाद खरीदने के लिए मजबूर हैं।

डबल लॉक में उन्हीं किसानों को खाद मिल रही है, जो सोसाइटी के सदस्य हैं। वो भी पर्याप्त नहीं है, लेकिन बड़ी संख्या में छोटे किसान जिनका जोत का रकबा कम है। वे भटक रहे हैं। किसानों को परेशानी से बचाने के लिए जिला प्रशासन को हमारा और हमारी पार्टी का पूरा सहयोग जैसा चाहें वैसा लें और व्यवस्था में तत्काल सुधार करें।

पटवारी ने शिवराज-मोहन यादव को घेरा-सतना सांसद का पत्र सोशल मीडिया पर शेयर करते हुए पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने लिखा, हम तो कहते ही थे, ये सरकार निकम्मी है। एक बीजेपी विधायक कलेक्टर की कॉलर पकड़ता है। एक भाजपा सांसद किसानों की पीढ़ा को लेकर चिट्ठी लिखता है। किसान खाद के लिए लाइन में लगते हैं। शिवराज सिंह चौहान, आंखें खोलो। डॉ. मोहन यादव, कुछ तो बोलो। यह निकम्मापन कब तक चलेगा? किसान को खाद कब मिलेगा?

सांसद ने पटवारी को दिया जवाब-जीतू पटवारी के ट्वीट पर सतना सांसद ने सोशल मीडिया पर ही जवाब देते हुए लिखा, किसानों के खाद की कमी को लेकर आ रहे फोन को देखते हुए मैंने जिला प्रशासन को खाद वितरण की व्यवस्था में सुधार लाने के लिए अपनी और पार्टी की हर तरह की मदद की पेशकश प्रेस बयान के माध्यम से की थी।

ट्रैक पर 20 घंटे पड़ा रहा शव, दर्जनों ट्रेनें गुजरीं

थाने के सीमा विवाद में लड़ती रही पुलिस- जीआरपी , दो बार सुसाइड अटैम्प्ट किया था

बीना (नप्र)। बीना में एक शख्स ने दो बार आत्महत्या का प्रयास किया। पहली बार उसे परिजन ने बचा लिया। दूसरी बार वो ट्रेन के सामने पहुंच गया, जहां उसकी मौत हो गई। उसका शव 20 घंटे तक ट्रैक पर पड़ा रहा। इस दौरान कई ट्रेनें लाश के ऊपर से गुजर गईं। पुलिस और जीआरपी को जानकारी मिल चुकी थी, लेकिन वो थाना क्षेत्र के सीमा विवाद में उलझी

रही। युवक की पहचान नई बस्ती इंदिरा गांधी वार्ड निवासी राहुल अहिरवार (28) के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया के राहुल ने बुधवार सुबह शराब के साथ एसिड पीकर सुसाइड करने का प्रयास किया। परिजन उसे अस्पताल ले गए, जहां जान बच गई। इसके बाद वह अस्पताल से निकलकर मालखेड़ी स्टेशन के पास रेलवे ट्रैक पर पहुंच गया।

20 घंटे ट्रैक पर पड़ा रहा शव-राहुल की मौत बुधवार शाम 5 बजे हुई। उसका शव गुरुवार दोपहर 1 बजे तक ट्रैक पर ही पड़ा रहा। इस दौरान दर्जनों ट्रेनें शव के ऊपर से गुजर गईं, मगर न तो जीआरपी और न ही सिटी पुलिस ने शव को उठाने की जहमत उठाई।

जीएसटी दरों में कटौती का निर्णय सभी सैक्टर के लिए गुलदस्ते के समान : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

- प्रधानमंत्री ने स्वतंत्रता दिवस पर दिए वचन को एक महीने से भी कम समय में पूरा कर दिखाया
- जीएसटी दरों में कटौती से लाभान्वित होंगे देश के 90 प्रतिशत नागरिक
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जीएसटी दरों में कटौती को बताया ऐतिहासिक निर्णय

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गुड्स एवं सर्विस टैक्स काउंसिल द्वारा जीएसटी दरों में कटौती को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने स्वागत योग्य कदम बताया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत सरकार ने जीएसटी दरों में बदलाव कर मुक्त हृदय से देश के हर वर्ग को फायदा पहुंचाया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर अपने उद्बोधन में लाल किले की प्राचीर से कहा था कि, अगले कुछ समय में प्रदेशवासियों को बहुत अच्छी सुविधाएं मिलने वाली हैं। हमने देखा कि एक महीने से भी कम समय में उन्होंने अपने इन वचनों को साकार कर दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जीएसटी के क्रांतिकारी बदलाव से देश की लगभग 90 प्रतिशत आबादी यानी 125 करोड़ से अधिक देशवासी लाभान्वित होंगे। प्रदेश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) और लघु एवं कुटीर उद्योग को भी व्यवसाय में इसका लाभ मिलेगा। प्रधानमंत्री श्री मोदी के कुशल नेतृत्व में भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना है और तेजी से तीसरे स्थान की ओर बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जीएसटी स्लैब में बदलाव के बाद गुरुवार को उज्जैन में जारी संदेश में ये विचार व्यक्त किए। उन्होंने इस ऐतिहासिक निर्णय के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी और वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण का आभार भी माना।

स्कूली बच्चों की शिक्षण सामग्री पर जीएसटी 12 प्रतिशत से शून्य करना महत्वपूर्ण- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जीएसटी काउंसिल की बैठक में जीएसटी दरों में कटौती का निर्णय देशवासियों के लिए एक प्रकार से गुलदस्ते के समान है, जिसमें सभी सैक्टर को कवर किया गया है। इंडस्ट्रीज के साथ देश के सभी वर्गों को इसका लाभ मिलेगा। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में दुनिया भर में भारत की एक अद्भुत छवि निर्मित हो रही है। वैश्विक उथल-पुथल के बीच भी सरकार ने अपने नागरिकों, उद्यमियों, गरीब एवं वंचित वर्ग का ध्यान रखा है। नागरिकों के हैल्थ इंश्योरेंस को टैक्स फ्री कर स्वास्थ्य के क्षेत्र में अतिरिक्त राहत दी गई है। जीएसटी के सभी बदलाव इसी माह नवरात्रि से अर्थात 22 सितंबर से लागू हो जाएंगे, जिसका लाभ गरीबों, मध्यवर्ग और किसानों को भी मिलेगा। आम आदमी की जरूरत की वस्तुएं जैसे- रोटी, पराठा, पनीर, छैना सस्ते होंगे। यह सामग्री बड़े पैमाने पर निर्यात भी होती है, अत- इस बदलाब से किसानों को भी लाभ होगा। स्कूली बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री नक्शे, चार्ट, ग्लोब, पेंसिल, शार्पनर, कॉपी, नोटबुक पर जीएसटी 12 प्रतिशत से शून्य करना स्कूली बच्चों और युवाओं की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है।

0.7 फीट पानी आते ही छलकेगा भोपाल का बड़ा तालाब

लेवल 1666.10 फीट पहुंचा, कोलांस 3.5 फीट ऊपर बह रही, भदभदा डैम के खुलेंगे गेट

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में पिछले 24 घंटे में 1.9 इंच बारिश हो गई। वहीं, सीहोर जिले में भी बारिश का दौर जारी रहा। इस वजह से भोपाल की लाइफ लाइन बड़ा तालाब में पानी बढ़ गया है। गुरुवार सुबह तक लेवल 1666.10 फीट पर आ गया। यानी, अब तालाब पौन फीट भी खाली नहीं है।

0.7 फीट पानी आते ही बड़ा तालाब से पानी छलक उठेगा। यदि बारिश का दौर जारी रहा तो शुक्रवार को ही भदभदा डैम के गेट खुल सकते हैं। सीहोर जिले और कैचमेंट एरिया में बारिश होने की वजह से कोलांस नदी भी साढ़े 3 फीट ऊपर से बह रही है। यह पानी सीधे बड़ा तालाब में पहुंच रहा है। इस वजह से बड़ा तालाब में पानी का लेवल बढ़ रहा है। बड़ा तालाब के साथ कोलार, केरवा और कलियासोत डैम में भी पानी की बढ़ोतरी हुई है। हालांकि, ये सभी पिछले साल जुलाई में ही भर गए थे, लेकिन इस बार अगस्त सूखा रहा। ज्यादा बारिश नहीं होने की वजह से भदभदा, केरवा, कलियासोत और कोलार डैम के

गेट नहीं खुल सके। गुरुवार सुबह कोलांस नदी साढ़े 3 फीट ऊपर बही रही थी। इससे भोपाल के बड़ा तालाब में पानी का लेवल बढ़ रहा है।

बड़ा तालाब भरने से 2 डैम के खुलते हैं गेट- कोलांस नदी जब उफान पर रहती है तो बड़ा तालाब में पानी जमा होता है। जब बड़ा तालाब पूरा भर जाता है तो भदभदा डैम के गेट खोले जाते हैं। यह पानी सीधे कलियासोत डैम में पहुंचता है। जिससे इस डैम का लेवल भी बढ़ जाता है और फिर इसके गेट भी खुल जाते हैं।

भोपाल के इन डैमों में इतना पानी-

कोलार डैम: इसका वाटर लेवल 1516.40 फीट है। अभी इसमें 1503.14 फीट पानी जमा है। इस हिसाब से यह काफी खाली है। कोलार डैम से ही भोपाल शहर के 40 प्रतिशत हिस्से में पानी की सप्लाई की जाती है। पिछली बार जुलाई में इसके गेट खोलने पड़े थे।

केरवा डैम: कुल 1673 फीट वाले केरवा डैम में अब तक करीब 1666.50 फीट पानी आ चुका है। तेज बारिश होने के बाद डैम में पानी का लेवल बढ़ जाएगा।

कलियासोत डैम: डैम का अभी वाटर लेवल लगभग 1650 फीट है। इसकी कुल जलभराव क्षमता 1659.02 फीट है। इसके चलते डैम अभी भी करीब 9 फीट खाली है। बड़ा तालाब के गेट खुलने पर कलियासोत डैम में पानी आएगा और गेट खुल जाएंगे।

3 लाख आबादी की प्यास बुझाता है बड़ा तालाब- बड़ा तालाब को शहर की लाइफ लाइन कहा जाता है। इसकी वजह यह वाटर लेवल तो बेहतर रखता ही है। साथ में बड़ी आबादी की प्यास भी बुझाता है। बड़ा तालाब से हर दिन पुराने शहर समेत बैरागढ़ (संत हिरदाराम नगर) समेत आसपास के इलाकों की 3 लाख से ज्यादा आबादी को पानी की सप्लाई की जाती है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव उज्जैन प्रेस क्लब में भगवान श्री गणेश की आरती में हुए शामिल

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव गुरूवार को उज्जैन प्रेस क्लब में भगवान श्री गणेश जी की पूजा आरती में शामिल हुए। मुख्यमंत्री का प्रेस क्लब अध्यक्ष श्री विशाल सिंह हाड़ा सहित पत्रकारों ने स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रेस क्लब के पत्रकारों से चर्चा कर उन्हें गणेश उत्सव की शुभकामनाएँ दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रेस क्लब की प्रथम मंजिल पर स्थित व्यायाम केंद्र में पहुंचकर नवीन व्यायाम की मशीनों का अवलोकन किया और कुछ देर वहाँ व्यायाम भी किया। इस अवसर पर विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, श्री संजय अग्रवाल, श्री जगदीश पांचाल आदि उपस्थित थे।